



**MATS**  
UNIVERSITY

NAAC  
GRADE **A+**  
ACCREDITED UNIVERSITY

## **MATS CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION**

**भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा**

**मास्टर ऑफ़ आर्ट्स - हिन्दी**

**प्रथम सेमेस्टर**



**SELF LEARNING MATERIAL**

---

## COURSE DEVELOPMENT EXPERT COMMITTEE

---

1. Prof. (Dr.) Reshma Ansari, HOD, School of Arts and Humanities, Hindi Department, MATS University, Raipur, Chhattisgarh.
  2. Dr. Sudhir Sharma, Subject Expert, HOD Hindi Department, Kalyan College, Bhilai, Chhattisgarh.
  3. Dr. Kamlesh Gogia, Associate Professor, School of Arts and Humanities, Hindi Department, MATS University, Raipur, Chhattisgarh.
  4. Dr. Sunita Shashikant Tiwari, Associate Professor, School of Arts and Humanities, Hindi Department, MATS University, Raipur, Chhattisgarh.
  5. Dr. Rajesh Kumar Dubey, Subject Expert, principal Shahid Rajiv Pndey Govt. College, Bhatagouan, Raipur Chhattisgarh.
- 

## COURSE COORDINATOR

---

Prof. (Dr.) Reshma Ansari, HOD, School of Arts and Humanities, Hindi Department, MATS University, Raipur, Chhattisgarh.

---

## COURSE /BLOCK PREPARATION

---

Dr. Dr. Reshma Ansari  
HOD, School of Arts and  
Humanities, Hindi  
Department, MATS  
University, Raipur,  
Chhattisgarh.

---

March, 2025

@MATS Centre for Distance and Online Education, MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur- (Chhattisgarh)

All rights reserved. No part of this work may be reproduced, transmitted or utilized or stored in any form by mimeograph or any other means without permission in writing from MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

Printed & published on behalf of MATS University, Village-Gullu, Aarang, Raipur by Mr. Meghanadhu Katabathuni, Facilities & Operations, MATS University, Raipur (C.G.)

---

Disclaimer: The publisher of this printing material is not responsible for any error or dispute from the contents of this course material, this completely depends on the AUTHOR'S MANUSCRIPT.  
Printed at: The Digital Press, Krishna Complex, Raipur-492001(Chhattisgarh)



**MAHDSC102**  
**Bhasha Vigyan aur Hindi Bhasha**

**भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा (Bhasha Vigyan aur Hindi Bhasha)**

|                 | <b>मॉड्यूल</b>                                     | <b>पेज नंबर</b> |
|-----------------|----------------------------------------------------|-----------------|
|                 | <b>मॉड्यूल -1 भाषा का परिचय</b>                    |                 |
| <b>इकाई 1.1</b> | भाषा की परिभाषा                                    | 1-11            |
| <b>इकाई 1.2</b> | भाषा के तत्व, अंग, प्रकृति और विशेषताएँ            | 12-40           |
| <b>इकाई 1.3</b> | भाषा परिवर्तन के कारण व दिशाएँ                     | 41-50           |
| <b>इकाई 1.4</b> | भाषा विज्ञान - परिभाषा एवं स्वरूप                  | 51-56           |
| <b>इकाई 1.5</b> | भाषा विज्ञान के अंग और अध्ययन पद्धतियाँ            | 57-68           |
|                 | <b>मॉड्यूल -2 रूपिम विज्ञान - शब्द का परिचय</b>    |                 |
| <b>इकाई 2.1</b> | रूपिम विज्ञान - शब्द और रूप (पद) संबंध             | 69-73           |
| <b>इकाई 2.2</b> | अर्थतत्व, रूप और संरूप                             | 74-83           |
| <b>इकाई 2.3</b> | रूपिम और स्वनिम                                    | 84-97           |
|                 | <b>मॉड्यूल -3 वाक्य विज्ञान - वाक्य का परिचय</b>   |                 |
| <b>इकाई 3.1</b> | वाक्य विज्ञान - वाक्य की परिभाषा                   | 98-109          |
| <b>इकाई 3.2</b> | वाक्य की संरचना और निकटस्थ अवयव                    | 110-122         |
| <b>इकाई 3.3</b> | वाक्य रचना में परिवर्तन                            | 123-139         |
|                 | <b>मॉड्यूल -4 अर्थ विज्ञान - शब्दार्थ का परिचय</b> |                 |
| <b>इकाई 4.1</b> | अर्थ विज्ञान - शब्दार्थ का संबंध विवेचन            | 140-152         |
| <b>इकाई 4.2</b> | अर्थ परिवर्तन                                      | 153-164         |
|                 | <b>मॉड्यूल -5 भाषा विज्ञान की प्रमुख शाखाएँ</b>    |                 |
| <b>इकाई 5.1</b> | समाज भाषा विज्ञान                                  | 165-179         |
| <b>इकाई 5.2</b> | शैली विज्ञान और कोश विज्ञान                        | 180-189-        |
| <b>इकाई 5.3</b> | संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी           | 190-195         |
| <b>इकाई 5.4</b> | नागरी लिपि का मानकीकरण                             | 196-199         |
| <b>इकाई 5.5</b> | देवनागरी लिपि की विशेषताएँ                         | 200-209         |

### **Acknowledgement**

The material (pictures and passages) we have used is purely for educational purposes. Every effort has been made to trace the copyright holders of material reproduced in this book. Should any infringement have occurred, the publishers and editors apologize and will be pleased to make the necessary corrections in future editions of thisbook.

---

## मॉड्यूल 1

### भाषा का परिचय

---

#### संरचना

- इकाई 1.1 भाषा की परिभाषा
- इकाई 1.2 भाषा के तत्व, अंग, प्रकृति और विशेषताएँ
- इकाई 1.3 भाषा परिवर्तन के कारण व दिशाएँ
- इकाई 1.4 भाषा विज्ञान - परिभाषा एवं स्वरूप
- इकाई 1.5 भाषा विज्ञान के अंग और अध्ययन पद्धतियाँ

---

#### 1.0 उद्देश्य

- छात्रों को भाषा की अवधारणा, परिभाषा और महत्व से अवगत कराना।
- भाषा के तत्व, अंग, प्रकृति और विशेषताओं की समझ विकसित करना।
- भाषा परिवर्तन के कारणों और दिशाओं का विश्लेषण करना।
- भाषा विज्ञान की परिभाषा, स्वरूप और अध्ययन क्षेत्र को समझाना।
- भाषा विज्ञान के प्रमुख अंगों और अध्ययन पद्धतियों का परिचय कराना तथा भाषा अध्ययन की वैज्ञानिक दृष्टि विकसित करना।

---

#### इकाई 1.1: भाषा की परिभाषा

---

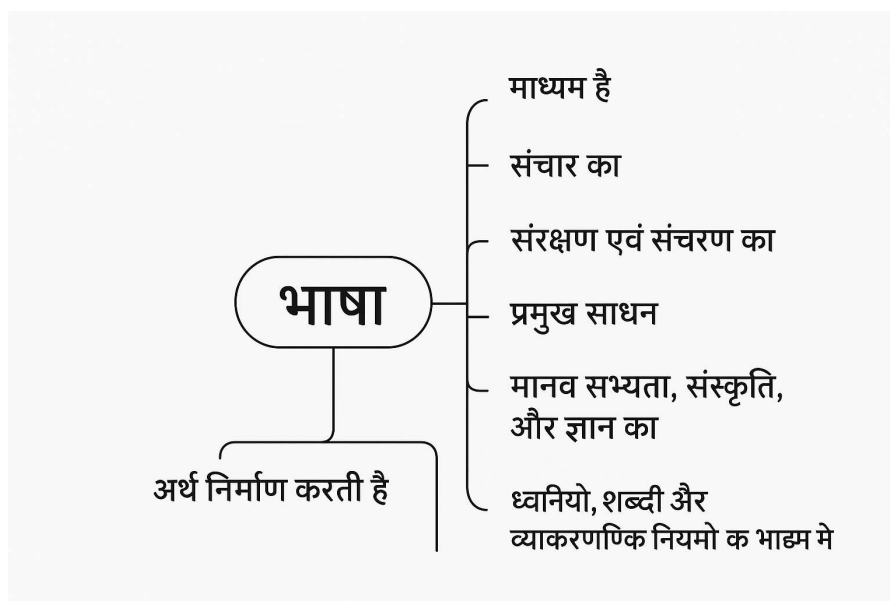
##### 1.1.1 भाषा की परिभाषा

भाषा मानव समाज की सबसे महत्वपूर्ण और जटिल विशेषता है। यह न केवल संचार का एक माध्यम है, बल्कि मानव सभ्यता, संस्कृति, और ज्ञान के संरक्षण और संचरण का प्रमुख साधन भी है। भाषा के बिना मानव समाज की कल्पना करना असंभव है क्योंकि यह हमारे विचारों, भावनाओं, और अनुभवों को व्यक्त करने का सबसे प्रभावी माध्यम है। भाषा एक ऐसी व्यवस्था है जो ध्वनियों, शब्दों, और व्याकरणिक नियमों के माध्यम से अर्थ का निर्माण करती है और समाज के सदस्यों के बीच सूचना और विचारों के आदान-प्रदान को संभव बनाती है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है बोलना या व्यक्त करना। व्यापक अर्थ में, भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन के भावों, विचारों, और संवेदनाओं को दूसरों तक पहुंचाता है। यह केवल मौखिक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि लिखित, सांकेतिक, और अन्य प्रकार की अभिव्यक्तियों को भी सम्मिलित करती है। भाषा एक सामाजिक संस्था है जो समाज में रहने वाले लोगों द्वारा विकसित और उपयोग की जाती है, और यह समय के साथ निरंतर परिवर्तित और विकसित होती रहती है।



**चित्र 1.1: भाषा का अर्थ**

भाषा की परिभाषा को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम इसके विभिन्न आयामों और घटकों को समझें। भाषा केवल शब्दों का एक संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जटिल प्रणाली है जिसमें ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, और अर्थ विज्ञान जैसे विभिन्न स्तर शामिल हैं। प्रत्येक स्तर अपने विशिष्ट नियमों और सिद्धांतों के साथ कार्य करता है, और ये सभी मिलकर एक समन्वित प्रणाली का निर्माण करते हैं जो प्रभावी संचार को संभव बनाती है। विभिन्न विद्वानों और भाषाविदों ने भाषा की परिभाषा अपने-अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत की है। प्रत्येक परिभाषा भाषा के एक विशेष पहलू को उजागर करती है और हमें इस जटिल घटना को समझने में मदद करती है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि

संकेतों की वह पद्धति है जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग परस्पर विचार विनिमय करते हैं। यह परिभाषा भाषा की मनमानी प्रकृति और सामाजिक कार्य को रेखांकित करती है।

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने भाषा को परिभाषित करते हुए कहा है कि जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है, उनको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं। यह परिभाषा भाषा के संचारात्मक कार्य पर बल देती है और इसे ध्वनि संकेतों की एक व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत करती है। डॉ. श्यामसुंदर दास ने भाषा को और भी सरल तरीके से परिभाषित किया है, उनके अनुसार जिसके द्वारा हम अपने विचार दूसरों पर प्रकट करते हैं और दूसरों के विचार समझते हैं, उसे भाषा कहते हैं। पश्चिमी भाषाविदों में स्विट ब्लाक ने भाषा को ध्वन्यात्मक प्रतीकों की यादृच्छिक व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया है जो एक सामाजिक समूह में संचार को सुविधाजनक बनाती है। एडवर्ड सेपिर की परिभाषा अधिक व्यापक है, उनके अनुसार भाषा विचारों, भावों और इच्छाओं को व्यक्त करने की पूर्णतः मानवीय और अनौपचारिक विधि है, जो स्वेच्छा से उत्पन्न प्रतीकों की व्यवस्था के माध्यम से कार्य करती है। यह परिभाषा भाषा की मानवीय विशेषता और प्रतीकात्मक प्रकृति को उजागर करती है।

लियोनार्ड ब्लूमफील्ड ने संरचनात्मक दृष्टिकोण से भाषा को परिभाषित करते हुए कहा कि भाषा मनुष्यों द्वारा ध्वनि के माध्यम से संवाद करने का तरीका है। नोम चॉम्स्की ने परिवर्तनकारी-जनक व्याकरण के सिद्धांत के आधार पर भाषा को परिभाषित किया और इसे मानव मस्तिष्क की जन्मजात क्षमता के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, भाषा एक सार्वभौमिक व्याकरण पर आधारित है जो सभी मानव भाषाओं में समान रूप से मौजूद है। भाषा की परिभाषा को समझने के लिए हमें इसके मुख्य घटकों को भी समझना होगा। पहला घटक है ध्वनि या उच्चारण। भाषा का प्राथमिक रूप मौखिक है, और ध्वनियाँ भाषा की मूल इकाइयाँ हैं। प्रत्येक भाषा में विशिष्ट ध्वनियों का एक समूह होता है जिसे स्वनिम कहा जाता है। ये ध्वनियाँ मनमानी होती हैं, अर्थात् किसी शब्द और उसके अर्थ के बीच कोई स्वाभाविक संबंध नहीं होता। उदाहरण के लिए, हिंदी में 'पानी' शब्द और अंग्रेजी में 'वाटर' शब्द एक ही वस्तु को दर्शाते हैं, लेकिन उनकी ध्वनियाँ पूरी तरह से भिन्न हैं।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

दूसरा महत्वपूर्ण घटक है शब्द या शब्दावली। शब्द ध्वनियों के सार्थक संयोजन हैं जो किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, गुण, या क्रिया को दर्शाते हैं। प्रत्येक भाषा में हजारों शब्द होते हैं जो उस भाषा समुदाय के सांस्कृतिक, सामाजिक, और भौगोलिक अनुभवों को प्रतिबिंबित करते हैं। शब्दावली निरंतर बदलती रहती है, नए शब्द जुड़ते हैं और पुराने शब्द अप्रचलित हो जाते हैं। तीसरा घटक है व्याकरण या वाक्य संरचना। व्याकरण वे नियम हैं जो शब्दों को सार्थक वाक्यों में व्यवस्थित करने का तरीका निर्धारित करते हैं। प्रत्येक भाषा के अपने व्याकरणिक नियम होते हैं जो शब्द क्रम, लिंग, वचन, काल, और अन्य व्याकरणिक श्रेणियों को नियंत्रित करते हैं। व्याकरण भाषा को संरचना और व्यवस्था प्रदान करता है, जिससे संचार स्पष्ट और प्रभावी होता है।

चौथा महत्वपूर्ण घटक है अर्थ। भाषा का अंतिम उद्देश्य अर्थ का संचार है। शब्दों, वाक्यों, और प्रसंगों के माध्यम से अर्थ का निर्माण होता है। अर्थ केवल शब्दकोशीय नहीं होता, बल्कि संदर्भ, संस्कृति, और सामाजिक परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है। एक ही शब्द या वाक्य अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ व्यक्त कर सकता है। भाषा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य संचार प्रणालियों से अलग करती हैं। पहली विशेषता है इसकी मनमानापन या स्वेच्छाचारिता। भाषा में शब्द और उनके अर्थ के बीच कोई स्वाभाविक या तार्किक संबंध नहीं होता। यह संबंध सामाजिक परंपरा और सहमति पर आधारित होता है। दूसरी विशेषता है इसकी सामाजिकता। भाषा एक सामाजिक संस्था है जो समाज में विकसित होती है और सामाजिक संपर्क के माध्यम से सीखी जाती है।

तीसरी विशेषता है भाषा की व्यवस्थित प्रकृति। भाषा एक व्यवस्थित प्रणाली है जिसके अपने नियम और संरचनाएँ होती हैं। यह यादृच्छिक ध्वनियों का संग्रह नहीं है, बल्कि एक संगठित व्यवस्था है। चौथी विशेषता है इसकी उत्पादकता या सृजनात्मकता। भाषा के सीमित नियमों और शब्दों का उपयोग करके असीमित वाक्यों का निर्माण किया जा सकता है। यह विशेषता मनुष्य को नए विचारों और अवधारणाओं को व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करती है। पाँचवीं विशेषता है भाषा की परिवर्तनशीलता। भाषा स्थिर नहीं है, बल्कि समय के साथ निरंतर बदलती रहती है। ध्वनियाँ, शब्द, और व्याकरणिक संरचनाएँ सभी परिवर्तन के अधीन हैं। यह परिवर्तन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, और तकनीकी कारकों से प्रभावित होता है। छठी विशेषता है

भाषा की सार्वभौमिकता। हालाँकि विश्व में हजारों अलग-अलग भाषाएँ हैं, लेकिन सभी मानव भाषाओं में कुछ सार्वभौमिक विशेषताएँ पाई जाती हैं। सभी भाषाओं में ध्वनि, शब्द, और व्याकरण की व्यवस्था होती है।

भाषा के विभिन्न कार्य भी इसकी परिभाषा को समझने में मदद करते हैं। प्राथमिक कार्य है संचार या सूचना का आदान-प्रदान। भाषा के माध्यम से लोग अपने विचारों, भावनाओं, और सूचनाओं को दूसरों तक पहुंचाते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है सामाजिक संबंधों की स्थापना और रखरखाव। भाषा के माध्यम से लोग सामाजिक संबंध बनाते हैं, समूह की पहचान स्थापित करते हैं, और सामाजिक एकता को बनाए रखते हैं। तीसरा कार्य है ज्ञान का संरक्षण और संचरण। भाषा के माध्यम से ज्ञान, अनुभव, और सांस्कृतिक परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित किया जाता है। चौथा कार्य है विचार और चिंतन का माध्यम। भाषा केवल संचार का साधन नहीं है, बल्कि विचार करने और तर्क करने का माध्यम भी है। मनुष्य अपनी भाषा में सोचता है और समस्याओं का समाधान करता है।

पाँचवाँ कार्य है भावनात्मक अभिव्यक्ति। भाषा के माध्यम से मनुष्य अपनी भावनाओं, संवेदनाओं, और मनोदशाओं को व्यक्त करता है। साहित्य, कविता, और कला में भाषा की यह क्षमता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। छठा कार्य है पहचान और अस्मिता का निर्माण। भाषा व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान का एक महत्वपूर्ण अंग है। लोग अपनी भाषा के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को व्यक्त करते हैं। भाषा के अध्ययन के लिए विभिन्न दृष्टिकोण विकसित किए गए हैं। संरचनात्मक भाषाविज्ञान भाषा की आंतरिक संरचना और व्यवस्था का अध्ययन करता है। यह दृष्टिकोण ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, और वाक्य विज्ञान के नियमों की पहचान और विश्लेषण पर केंद्रित है। परिवर्तनकारी-जनक व्याकरण का दृष्टिकोण भाषा की जन्मजात प्रकृति और सार्वभौमिक व्याकरण पर बल देता है। कार्यात्मक भाषाविज्ञान भाषा के सामाजिक और संप्रेषणात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दृष्टिकोण भाषा का अध्ययन उसके उपयोग के संदर्भ में करता है। सामाजिक भाषाविज्ञान भाषा और समाज के बीच संबंधों का अध्ययन करता है, जिसमें भाषा भिन्नता, भाषा परिवर्तन, और भाषा नीति जैसे विषय शामिल हैं। मनोभाषाविज्ञान भाषा अर्जन, भाषा प्रसंस्करण, और मस्तिष्क में भाषा के संगठन का अध्ययन करता है।



भाषा और विचार के बीच का संबंध भी भाषा की परिभाषा का एक महत्वपूर्ण पहलू है। सैपिर-व्होर्फ परिकल्पना के अनुसार, भाषा हमारे विचारों और विश्व को देखने के तरीके को प्रभावित करती है। यह परिकल्पना दो रूपों में प्रस्तुत की गई है - भाषाई निर्धारणवाद और भाषाई सापेक्षतावाद। भाषाई निर्धारणवाद का मजबूत रूप यह दावा करता है कि भाषा विचार को पूरी तरह से निर्धारित करती है, जबकि कमजोर रूप यह मानता है कि भाषा विचार को प्रभावित तो करती है, लेकिन निर्धारित नहीं करती। भाषा की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न सिद्धांत प्रस्तावित किए गए हैं। धनु-धनु सिद्धांत के अनुसार, भाषा प्राकृतिक ध्वनियों की नकल से उत्पन्न हुई। पूह-पूह सिद्धांत यह मानता है कि भाषा भावनात्मक विस्मयादिबोधक शब्दों से विकसित हुई। यो-ही-हो सिद्धांत के अनुसार, भाषा सामूहिक कार्य के दौरान उच्चारित ध्वनियों से उत्पन्न हुई। ता-ता सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि भाषा शारीरिक हावभावों के मौखिक समकक्षों से विकसित हुई।

आधुनिक सिद्धांत भाषा की उत्पत्ति को विकासवादी और जैविक परिप्रेक्ष्य से समझाते हैं। ये सिद्धांत मानव मस्तिष्क के विकास, मुखर तंत्र के परिवर्तन, और सामाजिक संगठन के विकास को भाषा की उत्पत्ति से जोड़ते हैं। कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि भाषा अचानक उत्पन्न हुई, जबकि अन्य यह मानते हैं कि यह धीरे-धीरे विकसित हुई। भाषा की प्रकृति को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि भाषा केवल मनुष्यों में ही पाई जाती है। हालाँकि अन्य प्राणी भी संचार करते हैं, लेकिन मानव भाषा की जटिलता, सृजनात्मकता, और अमूर्त विचारों को व्यक्त करने की क्षमता अद्वितीय है। पशु संचार सीमित और स्थितिजन्य होता है, जबकि मानव भाषा असीमित और संदर्भ-स्वतंत्र हो सकती है।

भाषा का अर्जन मानव विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। बच्चे स्वाभाविक रूप से और तेजी से भाषा सीखते हैं। यह क्षमता मानव मस्तिष्क की एक जन्मजात विशेषता मानी जाती है। बच्चे अपने पर्यावरण में सुनी गई भाषा को आत्मसात करते हैं और धीरे-धीरे उसके नियमों को समझते और उपयोग करते हैं। भाषा अर्जन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण अवधि होती है, जिसके दौरान भाषा सीखना सबसे आसान होता है। भाषा और संस्कृति के बीच गहरा संबंध है। भाषा संस्कृति का वाहक और संरक्षक है। यह सांस्कृतिक मूल्यों, विश्वासों, और परंपराओं को व्यक्त करती है और एक पीढ़ी से



दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करती है। प्रत्येक भाषा अपने भाषा समुदाय की विशिष्ट विश्वदृष्टि और अनुभवों को प्रतिबिंबित करती है। भाषा में निहित शब्दावली, मुहावरे, और कहावतें उस समुदाय की संस्कृति को प्रकट करते हैं। भाषा की विविधता विश्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। दुनिया में लगभग सात हजार भाषाएँ बोली जाती हैं, प्रत्येक अपनी विशिष्ट ध्वनियों, शब्दावली, और व्याकरण के साथ। यह विविधता मानव अनुभव की समृद्धि को दर्शाती है। हालाँकि, कई भाषाएँ विलुप्त होने के खतरे में हैं, जो सांस्कृतिक और भाषाई विरासत के लिए एक गंभीर चुनौती है। भाषा का लिखित रूप भी इसकी परिभाषा का एक महत्वपूर्ण पहलू है। लेखन प्रणालियों के विकास ने भाषा को स्थायित्व प्रदान किया और ज्ञान के संरक्षण और प्रसार को संभव बनाया। विभिन्न भाषाओं में विभिन्न लिपियों का उपयोग किया जाता है, जैसे देवनागरी, रोमन, अरबी, चीनी, आदि। लिखित भाषा मौखिक भाषा से कुछ भिन्न होती है, क्योंकि इसमें औपचारिकता और संरचना अधिक होती है।

भाषा का मानकीकरण भी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मानक भाषा वह रूप है जिसे शिक्षा, सरकार, और मीडिया में उपयोग किया जाता है। यह भाषा के विभिन्न बोलियों और क्षेत्रीय रूपों में से एक को चुनकर और उसे नियमबद्ध करके विकसित की जाती है। मानकीकरण भाषा को स्थिरता और एकरूपता प्रदान करता है, लेकिन यह भाषाई विविधता को भी प्रभावित कर सकता है। भाषा नीति और भाषा योजना समाज में भाषा के उपयोग को प्रभावित करते हैं। सरकारें और संस्थाएँ यह निर्धारित करती हैं कि कौन सी भाषाएँ आधिकारिक होंगी, शिक्षा में किन भाषाओं का उपयोग किया जाएगा, और भाषाई अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा कैसे की जाएगी। भाषा नीति सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक विचारों से प्रभावित होती है।

द्विभाषिकता और बहुभाषिकता आधुनिक दुनिया की महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। कई लोग दो या अधिक भाषाएँ बोलते और समझते हैं। यह क्षमता संज्ञानात्मक, सामाजिक, और आर्थिक लाभ प्रदान करती है। द्विभाषी व्यक्ति विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का काम करते हैं और अंतर-सांस्कृतिक संचार को सुविधाजनक बनाते हैं। भाषा परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है। ध्वनि परिवर्तन, शब्दावली में वृद्धि या कमी, व्याकरणिक संरचनाओं में बदलाव, और अर्थ में परिवर्तन सभी भाषा परिवर्तन के पहलू हैं। ये



परिवर्तन आंतरिक भाषाई कारणों और बाहरी सामाजिक कारणों से होते हैं। भाषा संपर्क, प्रौद्योगिकी, और सामाजिक गतिशीलता भाषा परिवर्तन के प्रमुख कारक हैं। भाषा परिवार की अवधारणा भाषाओं के बीच ऐतिहासिक संबंधों को समझने में मदद करती है। भाषाविद् भाषाओं को उनके सामान्य पूर्वज के आधार पर परिवारों में वर्गीकृत करते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी, संस्कृत, बांग्ला, और मराठी सभी इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की इंडो-आर्यन शाखा से संबंधित हैं। भाषा परिवारों का अध्ययन भाषाओं के विकास और प्रसार को समझने में मदद करता है।

भाषा और शक्ति के बीच का संबंध भी महत्वपूर्ण है। भाषा सामाजिक पदानुक्रम, वर्चस्व, और प्रतिरोध का माध्यम हो सकती है। जो लोग प्रभुत्वशाली भाषा बोलते हैं, उन्हें अक्सर सामाजिक और आर्थिक लाभ मिलता है। भाषा नीति और भाषा शिक्षा के माध्यम से शक्ति संबंध प्रभावित हो सकते हैं। प्रौद्योगिकी ने भाषा के उपयोग और अध्ययन को गहराई से प्रभावित किया है। कंप्यूटर, इंटरनेट, और मोबाइल उपकरणों ने नए प्रकार के भाषाई संचार को जन्म दिया है। डिजिटल संचार में उपयोग की जाने वाली भाषा अक्सर अनौपचारिक, संक्षिप्त, और संकेतात्मक होती है। मशीन अनुवाद, वाक् पहचान, और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण जैसी तकनीकों ने भाषा के उपयोग में नई संभावनाएँ खोली हैं। साहित्य और कला में भाषा की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। साहित्य भाषा की सृजनात्मक और सौंदर्यात्मक क्षमता का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है। कवि, लेखक, और नाटककार भाषा का उपयोग नए और अभिनव तरीकों से करते हैं, जिससे नए अर्थ और अनुभव उत्पन्न होते हैं। साहित्यिक भाषा सामान्य संचार की भाषा से अलग होती है, क्योंकि यह लय, छंद, अलंकार, और प्रतीकवाद का उपयोग करती है।

भाषा की ध्वनि प्रणाली को समझना भी आवश्यक है। ध्वनि विज्ञान भाषा की ध्वनियों का अध्ययन करता है। प्रत्येक भाषा में स्वर और व्यंजन की एक विशिष्ट प्रणाली होती है। ध्वनियों का उच्चारण मुखगुहा, जीभ, होंठ, और अन्य उच्चारण अवयवों की गति और स्थिति द्वारा निर्धारित होता है। ध्वनियों के संयोजन और वितरण के नियम प्रत्येक भाषा में भिन्न होते हैं। रूप विज्ञान शब्दों की आंतरिक संरचना का अध्ययन करता है। शब्द छोटी इकाइयों से बने होते हैं जिन्हें रूपिम कहा जाता है। रूपिम अर्थ की छोटी इकाइयाँ हैं। उदाहरण के लिए, 'लड़कियों' शब्द में तीन रूपिम हैं - 'लड़क' मूल

शब्द, 'ई' स्त्रीलिंग प्रत्यय, और 'यों' बहुवचन प्रत्यय। रूप विज्ञान यह समझाता है कि कैसे शब्द बनते हैं और कैसे उनके अर्थ में परिवर्तन होता है। वाक्य विज्ञान वाक्यों की संरचना का अध्ययन करता है। यह यह निर्धारित करता है कि शब्दों को कैसे व्यवस्थित किया जाता है और कैसे वे एक दूसरे से संबंधित होते हैं। विभिन्न भाषाओं में विभिन्न वाक्य संरचनाएँ होती हैं। कुछ भाषाओं में क्रिया वाक्य के अंत में आती है, जबकि अन्य में यह विषय के बाद आती है। वाक्य संरचना भाषा की व्याकरणिक प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

अर्थ विज्ञान भाषा में अर्थ का अध्ययन करता है। यह शब्दों, वाक्यांशों, और वाक्यों के अर्थ की जांच करता है। अर्थ केवल शब्दकोशीय नहीं होता, बल्कि संदर्भ, संस्कृति, और वक्ता के इरादे पर भी निर्भर करता है। अर्थ विज्ञान समानार्थी शब्द, विलोम शब्द, बहुअर्थी शब्द, और अन्य अर्थ संबंधों का अध्ययन करता है। व्यावहारिक विज्ञान भाषा के उपयोग का अध्ययन करता है। यह यह जांचता है कि वास्तविक संचार स्थितियों में भाषा का उपयोग कैसे किया जाता है। व्यावहारिक विज्ञान संदर्भ, वक्ता के इरादे, और श्रोता की व्याख्या पर ध्यान केंद्रित करता है। यह वाक् कृत्य सिद्धांत, संवाद विश्लेषण, और विनम्रता सिद्धांत जैसे विषयों को शामिल करता है। भाषा शिक्षा और भाषा सीखने की प्रक्रियाएँ भी भाषा के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। मातृभाषा अर्जन और दूसरी भाषा सीखना विभिन्न प्रक्रियाएँ हैं। दूसरी भाषा सीखने में प्रेरणा, आयु, और सीखने की रणनीतियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भाषा शिक्षण विधियाँ समय के साथ विकसित हुई हैं, व्याकरण-अनुवाद विधि से लेकर संचारात्मक दृष्टिकोण तक।

भाषा और पहचान का संबंध व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण है। लोग अपनी भाषा के माध्यम से अपनी जातीय, धार्मिक, और सांस्कृतिक पहचान व्यक्त करते हैं। भाषा समुदाय की सदस्यता और अपनापन की भावना प्रदान करती है। भाषा हानि या भाषा परिवर्तन पहचान के संकट का कारण बन सकता है। भाषा विकास की अवस्थाएँ बच्चों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। शैशवावस्था में बच्चे ध्वनियों का उत्पादन करना शुरू करते हैं, फिर धीरे-धीरे शब्द और वाक्य बोलना सीखते हैं। भाषा विकास के विभिन्न चरण होते हैं, प्रत्येक अपनी विशेषताओं के साथ। भाषा विकास में देरी या समस्याएँ बच्चे के समग्र विकास को प्रभावित कर सकती हैं।



भाषा विकार और भाषा चिकित्सा भाषा अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अनुप्रयुक्त क्षेत्र है। कुछ लोगों को भाषा उत्पादन, समझ, या दोनों में कठिनाई होती है। ये समस्याएँ जन्मजात हो सकती हैं या बाद में चोट या बीमारी के कारण विकसित हो सकती हैं। भाषा चिकित्सक इन समस्याओं का निदान और उपचार करते हैं। भाषा अधिकार और भाषाई न्याय की अवधारणाएँ तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही हैं। सभी लोगों को अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने, न्याय प्रणाली तक पहुँचने, और सार्वजनिक सेवाओं का उपयोग करने का अधिकार है। भाषाई अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करना लोकतांत्रिक समाजों के लिए एक चुनौती है। भाषा और लिंग के बीच का संबंध भी एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है। भाषा में लिंग कैसे व्यक्त किया जाता है, और भाषा का उपयोग लैंगिक रूढ़िवाद को कैसे प्रतिबिंबित और सुदृढ़ करता है, ये महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। कुछ भाषाओं में व्याकरणिक लिंग होता है, जबकि अन्य में नहीं। भाषा में लैंगिक समावेशिता एक समकालीन चिंता है।

भाषा संपर्क और भाषा मिश्रण विविध समाजों की विशेषताएँ हैं। जब विभिन्न भाषा समुदाय संपर्क में आते हैं, तो भाषाएँ एक दूसरे को प्रभावित करती हैं। यह उधार शब्दों, कोड-स्विचिंग, और यहाँ तक कि नई भाषाओं जैसे पिजिन और क्रियोल के विकास में परिणत हो सकता है। भाषा संरक्षण और पुनर्जीवन के प्रयास विश्वभर में चल रहे हैं। कई लुप्तप्राय भाषाओं को बचाने के लिए समुदाय, सरकारें, और संगठन मिलकर काम कर रहे हैं। भाषा प्रलेखन, भाषा घोंसले, और भाषा शिक्षण कार्यक्रम भाषा संरक्षण की रणनीतियाँ हैं। भाषा और भावना का संबंध व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण है। लोग अपनी मातृभाषा के प्रति गहरा भावनात्मक लगाव महसूस करते हैं। भाषा सुरक्षा, आराम, और पहचान की भावना प्रदान करती है। बहुभाषी व्यक्ति अक्सर विभिन्न भाषाओं में विभिन्न भावनाएँ व्यक्त करते हैं। भाषा की परिभाषा को पूर्ण रूप से समझने के लिए हमें यह स्वीकार करना होगा कि भाषा एक बहुआयामी और जटिल घटना है। यह केवल शब्दों का संग्रह या ध्वनियों का समूह नहीं है, बल्कि एक जीवंत, विकसित होती, और सामाजिक रूप से निर्मित प्रणाली है। भाषा मानव अनुभव का केंद्र है, जो हमें सोचने, संवाद करने, और दुनिया को समझने की क्षमता प्रदान करती है। यह हमारी सांस्कृतिक विरासत का वाहक है और हमारी पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है।



भाषा का अध्ययन न केवल शैक्षणिक रुचि का विषय है, बल्कि व्यावहारिक महत्व भी रखता है। भाषा शिक्षण, अनुवाद, भाषा प्रौद्योगिकी, और भाषा नीति जैसे क्षेत्रों में भाषा के ज्ञान का उपयोग किया जाता है। भाषा की समझ हमें बेहतर संचारक, अधिक संवेदनशील विश्व नागरिक, और अधिक प्रभावी शिक्षक और सीखने वाले बनाती है। अंततः, भाषा की परिभाषा एक चलती हुई लक्ष्य है, क्योंकि हमारी भाषा की समझ निरंतर विकसित हो रही है। नए शोध, नई तकनीकें, और नए सामाजिक संदर्भ भाषा के नए पहलुओं को उजागर करते रहते हैं। हालाँकि, मूल तत्व स्थिर रहते हैं - भाषा एक मानव संकाय है जो ध्वनियों, प्रतीकों, और संरचनाओं के माध्यम से अर्थ का निर्माण और संचार करता है। यह हमारी मानवता का सबसे महत्वपूर्ण और विशिष्ट पहलू है, जो हमें अन्य सभी प्राणियों से अलग करता है और हमें एक जटिल, सांस्कृतिक, और तकनीकी सभ्यता बनाने में सक्षम बनाता है।]

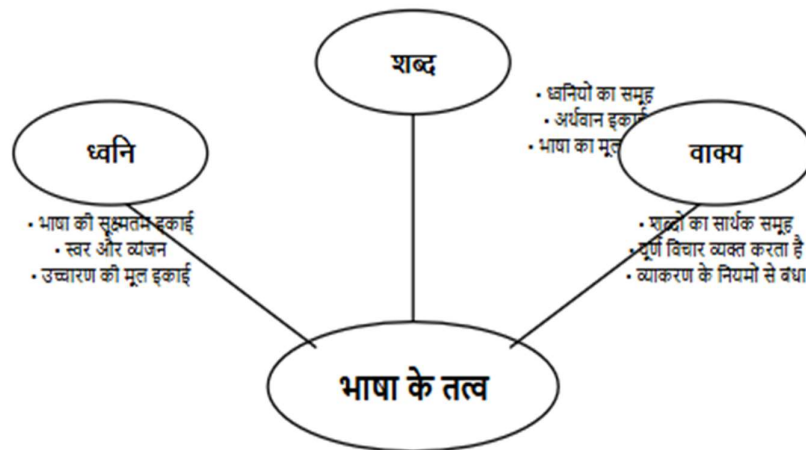


## इकाई 1.2: भाषा के तत्व, अंग, प्रकृति और विशेषताएँ

### 1.2.1 भाषा के तत्व (ध्वनि, शब्द और वाक्य)

भाषा मानव समाज की सर्वाधिक प्रभावशाली, जटिल और रचनात्मक प्रणाली है। यह केवल विचारों को व्यक्त करने का साधन नहीं, बल्कि मानव सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान की आधारशिला है। प्रत्येक भाषा की संरचना कुछ विशिष्ट इकाइयों से मिलकर बनती है, जिन्हें उसके *तत्व* कहा जाता है। ये तत्व ध्वनि, शब्द और वाक्य के रूप में भाषा की नींव निर्मित करते हैं।

भाषा के अध्ययन की दृष्टि से ये तीनों इकाइयाँ क्रमशः सूक्ष्म से स्थूल की ओर जाती हैं, ध्वनि सबसे छोटी इकाई, शब्द मध्यवर्ती इकाई, और वाक्य सबसे बड़ी संप्रेषण इकाई मानी जाती है। इन तीनों का परस्पर संबंध उतना ही घनिष्ठ है जितना शरीर, मन और आत्मा का होता है।



#### भाषा की विशेषताएँ

मानव समाज की सर्वाधिक प्रभावशाली, जटिल और रचनात्मक प्रणाली  
विचारों को व्यक्त करने का साधन  
मानव सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान की आधारशिला

चित्र 1.2: भाषा के तत्व

## 1. ध्वनि – भाषा की सबसे सूक्ष्म इकाई

ध्वनि भाषा की आत्मा है। यह वह श्रव्य संकेत है जिसके माध्यम से विचार, भावनाएँ और अनुभूतियाँ प्रकट की जाती हैं। मनुष्य का मुख, जिह्वा, दाँत, कंठ आदि जब किसी विशिष्ट प्रकार से क्रियाशील होते हैं, तब ध्वनियों का उत्पादन होता है।

### A. ध्वनि की परिभाषा

भाषाशास्त्रियों ने ध्वनि को भिन्न-भिन्न रूप में परिभाषित किया है।

- **पाणिनि** ने इसे “वर्ण” कहा है — जो उच्चारण की इकाई है।
- **फर्डिनांड द सॉस्यूर** के अनुसार — “ध्वनि भाषा का भौतिक पक्ष है जो विचारों को रूप प्रदान करता है।”
- **भद्रेश्वर पंड्या** लिखते हैं — “भाषा का अस्तित्व तभी तक है जब तक उसकी ध्वनियाँ अस्तित्व में हैं।”

ध्वनि ही वह पहला माध्यम है जिससे मनुष्य बोलने की क्षमता विकसित करता है।

### B. ध्वनियों का वर्गीकरण

भाषाविज्ञान में ध्वनियों को सामान्यतः दो वर्गों में बाँटा जाता है —

1. **स्वर:** जिनके उच्चारण में श्वास मार्ग में कोई अवरोध नहीं होता। जैसे — अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
2. **व्यंजन:** जिनके उच्चारण में किसी न किसी स्थान पर अवरोध उत्पन्न होता है। जैसे — क, ख, ग, घ, च, ट, ठ, द, न, प, ब, म आदि।

इसके अतिरिक्त ध्वनियों को **मात्रा**, **बल**, **लय** और **स्वराघात** के आधार पर भी विभाजित किया जाता है। हिंदी जैसी भाषाओं में इन विशेषताओं का उपयोग अर्थ परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

### C. ध्वनि और अर्थ का संबंध

ध्वनियों का क्रम जब बदलता है तो शब्द और उसके अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। जैसे, "फल" और "जल", यहाँ केवल एक ध्वनि के परिवर्तन से अर्थ पूर्णतः बदल गया। इसी प्रकार "दिन" और "बिन", "माल" और "हाल" जैसी जोड़ी शब्द इस संबंध को स्पष्ट करते हैं।

इस प्रकार ध्वनि भाषा की वह ईंट है, जिससे शब्द और वाक्य की दीवार खड़ी होती है।

### D. ध्वनि का सामाजिक पक्ष

ध्वनि का प्रयोग केवल भौतिक नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। विभिन्न क्षेत्रों में ध्वनि के उच्चारण में भिन्नता पाई जाती है। यही कारण है कि भाषाएँ अनेक बोलियों में विभाजित होती हैं।

उदाहरण के लिए, हिंदी की "खड़ी बोली", "ब्रज", "अवधी" और "भोजपुरी" में एक ही शब्द के उच्चारण में ध्वन्यात्मक अंतर पाया जाता है, जैसे, "कहाँ जा रहे हो?" → ब्रज में "कै जा रहो है?" और भोजपुरी में "कहाँ जात बाड़ा?"।

यह विविधता भाषा की जीवंतता और क्षेत्रीयता का प्रतीक है।

## 2. शब्द – भाषा की अर्थ इकाई

जब ध्वनियों का समूह किसी निश्चित व्याकरणिक नियम के अनुसार संयोजित होकर अर्थ प्रदान करता है, तो वह **शब्द** कहलाता है। शब्द भाषा की अर्थ-संवहन इकाई है।

### A. शब्द की परिभाषा

- पाणिनि ने कहा — "धातु और प्रत्यय के संयोग से बना रूप शब्द कहलाता है।"
- भोजदेव के अनुसार — "वर्णों का वह समूह जो किसी अर्थ का बोध कराए, शब्द कहलाता है।"

- **सॉक्सूर** के अनुसार — “शब्द एक संकेत (Sign) है, जो ध्वनि और अर्थ दोनों का योग है।”

अर्थात् शब्द केवल ध्वनि मात्र नहीं, बल्कि ध्वनि और अर्थ का एक बोधक प्रतीक है।

## B. शब्द की उत्पत्ति के स्रोत

हिंदी भाषा के शब्द चार प्रमुख स्रोतों से प्राप्त हुए हैं -

1. **तत्सम शब्द:** संस्कृत से यथावत लिए गए, जैसे - सूर्य, पुत्र, जल, पृथ्वी।
2. **तद्भव शब्द:** संस्कृत से विकृत रूप में प्राप्त, जैसे - सूरज (सूर्य), बेटा (पुत्र), धरती (पृथ्वी)।
3. **देशज शब्द:** स्वदेशी उत्पत्ति के, जैसे - झोला, टोकरी, बगुला।
4. **विदेशी शब्द:** अन्य भाषाओं से लिए गए, जैसे - कमीज़ (फ़ारसी), आलू (पुर्तगाली), स्टेशन (अंग्रेज़ी)।

यह विविधता हिंदी को समृद्ध और जीवंत बनाती है।

## C. शब्द की संरचना

शब्द तीन स्तरों पर अध्ययन का विषय है -

1. **रूपविज्ञान:** शब्द की संरचना का अध्ययन।
2. **अर्थविज्ञान:** शब्द के अर्थ का अध्ययन।
3. **प्रयोगविज्ञान:** संदर्भ में शब्द के प्रयोग का अध्ययन।

उदाहरण के लिए, “जल” का सामान्य अर्थ पानी है, पर “जल गया” वाक्य में इसका अर्थ आग से संबंधित हो जाता है। यह शब्द की प्रयोगगत विविधता है।

## D. शब्द का सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष

शब्द केवल भाषा की संरचना का भाग नहीं है, वह समाज और संस्कृति का दर्पण भी है। किसी समाज के रीति-रिवाज, परंपराएँ और मूल्य शब्दों में अंकित होते हैं।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

जैसे - "रामराज्य", "गुरुदेव", "माँ", "धरतीमाता" - ये शब्द भारतीय संस्कृति और श्रद्धा-परंपरा के प्रतीक हैं।

शब्द समय के साथ बदलते भी हैं - कुछ नए बनते हैं, कुछ पुराने लुप्त हो जाते हैं। यही प्रक्रिया भाषा को गतिशील बनाए रखती है।

### 3. वाक्य – भाषा की संप्रेषण इकाई

शब्दों का क्रमबद्ध और व्याकरणानुसार संयोजन जब किसी पूर्ण विचार को व्यक्त करता है, तो उसे **वाक्य** कहते हैं। वाक्य ही भाषा की वास्तविक संप्रेषण इकाई है, क्योंकि यही वह रूप है जिसके माध्यम से विचार, आदेश, प्रश्न या भावना व्यक्त होती है।

#### A. वाक्य की परिभाषा

- पाणिनि ने वाक्य को "अर्थपूर्ण शब्द समूह" कहा है।
- भोजदेव के अनुसार — "शब्दसमूहो वाक्यम्।"
- आचार्य किशोरीदास वाजपेयी लिखते हैं — "वाक्य वह इकाई है जिससे पूर्ण विचार की अभिव्यक्ति होती है।"

इस प्रकार वाक्य भाषा का वह स्वरूप है जो अर्थ को पूर्णता देता है।

#### B. वाक्य के अंग

वाक्य सामान्यतः तीन अंगों से बनता है —

1. **कर्ता:** जो कार्य करता है।
2. **क्रिया:** जो कार्य या स्थिति का बोध कराती है।
3. **कर्म:** जिस पर कार्य का प्रभाव पड़ता है।

उदाहरण – "राम (कर्ता) फल (कर्म) खाता है (क्रिया)।"

### C. वाक्य के प्रकार

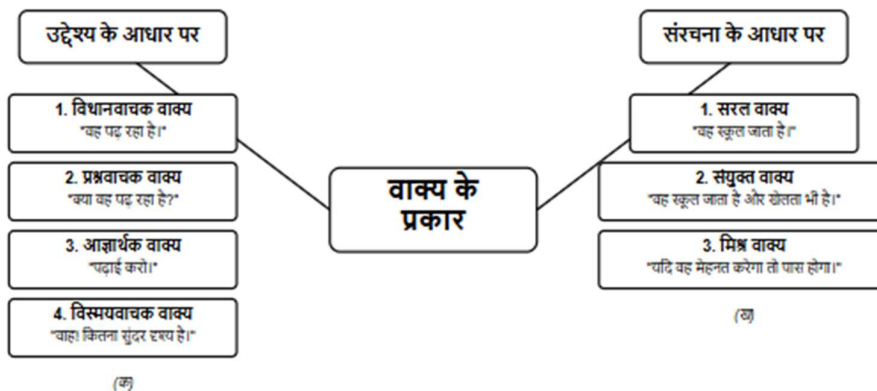
वाक्य को उसके उद्देश्य और संरचना के आधार पर विभाजित किया जा सकता है —

#### (क) उद्देश्य के आधार पर:

- विधानवाचक वाक्य: "वह पढ़ रहा है।"
- प्रश्नवाचक वाक्य: "क्या वह पढ़ रहा है?"
- आज्ञार्थक वाक्य: "पढ़ाई करो।"
- विस्मयवाचक वाक्य: "वाह! कितना सुंदर दृश्य है।"

#### (ख) संरचना के आधार पर:

- सरल वाक्य – "वह स्कूल जाता है।"
- संयुक्त वाक्य – "वह स्कूल जाता है और खेलता भी है।"
- मिश्र वाक्य – "यदि वह मेहनत करेगा तो पास होगा।"



चित्र 1.3: वाक्य के प्रकार

### D. वाक्य की संरचनात्मक विशेषताएँ

हिंदी में वाक्य सामान्यतः "कर्ता + कर्म + क्रिया" क्रम में बनता है, जबकि अंग्रेज़ी में "कर्ता + क्रिया + कर्म" क्रम होता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

यह अंतर भाषाओं की संरचनात्मक विशिष्टता को दर्शाता है।

वाक्य के निर्माण में व्याकरण, विन्यास, भावार्थ और लयात्मकता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। साहित्यिक रचनाओं में कवि या लेखक इन्हीं तत्वों से वाक्य को कलात्मक बनाता है।

### **E. वाक्य और विचार का संबंध**

विचार और वाक्य एक-दूसरे के पूरक हैं। विचार बिना वाक्य के अभिव्यक्त नहीं हो सकता और वाक्य बिना विचार के निरर्थक है। यही कारण है कि भाषा की शक्ति का मूल्यांकन वाक्य संरचना की गुणवत्ता से होता है।

### **4. ध्वनि, शब्द और वाक्य का परस्पर संबंध**

इन तीनों तत्वों का संबंध श्रेणीबद्ध और निर्भरकारी है —

- ध्वनि → शब्द बनाती है
- शब्द → वाक्य बनाते हैं
- वाक्य → अर्थ का संप्रेषण करते हैं

यह क्रम भाषा की वैज्ञानिक संरचना को स्पष्ट करता है।

यदि किसी स्तर पर कोई त्रुटि हो, तो अर्थ में विकृति आ जाती है।  
उदाहरण -

“राम फल खाता है” और “फल राम खाता है” - दोनों में शब्द समान हैं, पर क्रम बदलने से अर्थ बदल गया।

इससे स्पष्ट है कि भाषा के तत्वों के बीच संतुलन आवश्यक है।

### **5. ध्वनि, शब्द, वाक्य और भाषा की एकता**

भाषा का अस्तित्व तभी संभव है जब उसके तीनों आधार - ध्वनि, शब्द और वाक्य - एक साथ कार्य करें।

- ध्वनि उसे श्रव्य बनाती है,
- शब्द उसे अर्थपूर्ण बनाते हैं, और
- वाक्य उसे विचारोन्मुख बनाता है।

इनके बिना भाषा अधूरी है।

ध्वनि, शब्द और वाक्य भाषा के मूलभूत स्तंभ हैं। ध्वनि के बिना शब्द नहीं, शब्द के बिना वाक्य नहीं, और वाक्य के बिना विचार नहीं। यही तीनों मिलकर भाषा को जीवन देते हैं।

ध्वनि भाषा की आत्मा है, शब्द उसका शरीर है, और वाक्य उसकी चेतना। भाषा का अध्ययन इन्हीं तीन स्तरों से प्रारंभ होकर सामाजिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक गहराइयों तक पहुँचता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि -

**“ध्वनि भाषा का बीज है, शब्द उसका वृक्ष है, और वाक्य उसका फल।”**

### 1.2.2 भाषा के अंग (मौखिक और लिखित रूप)

भाषा मनुष्य की सबसे बड़ी सामाजिक और बौद्धिक उपलब्धि है। यह केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, ज्ञान और अनुभव का भंडार भी है। भाषा का अध्ययन केवल उसके रूपों तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह भी देखा जाता है कि भाषा किन-किन रूपों में प्रयोग होती है। सामान्यतः भाषा के दो प्रमुख अंग या रूप माने गए हैं - **मौखिक** और **लिखित**।



**चित्र 1.4: भाषा के अंग**



ये दोनों रूप भाषा के अस्तित्व और विकास के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। मौखिक भाषा बोलने-सुनने की क्रिया से संबंधित है, जबकि लिखित भाषा दृष्टिगत संकेतों या लिपि के माध्यम से विचार व्यक्त करती है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं - मौखिक भाषा जीवन्तता प्रदान करती है और लिखित भाषा स्थायित्व।

## 1. मौखिक भाषा

### A. मौखिक भाषा की उत्पत्ति

मौखिक भाषा का विकास मनुष्य की सबसे प्रारंभिक संप्रेषणीय उपलब्धि है। आदिकालीन मानव ने ध्वनियों के माध्यम से अपने विचार और भाव प्रकट करना सीखा। धीरे-धीरे ये ध्वनियाँ व्यवस्थित होकर शब्द और वाक्य का रूप लेने लगीं। भाषावैज्ञानिकों के अनुसार, मानव ने सबसे पहले *प्राकृतिक ध्वनियों की नकल* (Bow-wow theory), *भावनात्मक उद्गार* (Pooh-pooh theory), और *सामूहिक श्रमगीतों* (Yo-he-ho theory) के माध्यम से बोलने की आदत विकसित की। यह सब मौखिक भाषा की नींव थी।

मौखिक भाषा का इतिहास लिखित भाषा से कहीं अधिक पुराना है। जब तक लेखन प्रणाली विकसित नहीं हुई थी, तब तक सम्पूर्ण ज्ञान, परंपरा, संस्कृति और धर्म मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रसारित होते रहे। उदाहरण के लिए, वैदिक संस्कृत के ग्रंथ जैसे ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद आदि पहले मौखिक परंपरा के रूप में पीढ़ियों तक स्मृति द्वारा संरक्षित किए गए थे।

### B. मौखिक भाषा की विशेषताएँ

मौखिक भाषा के अनेक विशिष्ट गुण हैं, जो उसे लिखित भाषा से अलग पहचान देते हैं-

1. **सजीव और तात्कालिक संप्रेषण:** मौखिक भाषा के माध्यम से संवाद सीधा और तुरंत स्थापित होता है। बोलने वाला और सुनने वाला एक-दूसरे की प्रतिक्रिया तुरंत समझ सकते हैं।

2. **भावनात्मकता और अभिव्यंजना:** बोलते समय स्वर, लय, उतार-चढ़ाव, और चेहरे के भावों से अर्थ में गहराई आती है। जैसे "हाँ" शब्द विभिन्न स्वरों में सहमति, व्यंग्य या क्रोध व्यक्त कर सकता है।
3. **लचीलापन और सहजता:** मौखिक भाषा में नियमों का कठोर पालन आवश्यक नहीं होता। यह परिस्थिति और भावनाओं के अनुसार लचीली होती है।
4. **व्याकरण की सीमितता:** मौखिक भाषा में अक्सर व्याकरणिक शुद्धता से अधिक संवाद की स्पष्टता पर ध्यान दिया जाता है।
5. **सांस्कृतिक विविधता:** एक ही भाषा के अलग-अलग क्षेत्रों में उच्चारण और शब्दों में विविधता पाई जाती है, जैसे हिंदी की क्षेत्रीय बोलियाँ - अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुंदेली आदि।
6. **स्मृति-आधारित अस्तित्व:** मौखिक भाषा का अस्तित्व तब तक रहता है जब तक वह बोली और सुनी जाती है। यह लिखित भाषा की तरह स्थायी नहीं होती।

### C. मौखिक भाषा के लाभ

1. संचार की गति अधिक होती है।
2. श्रोता की प्रतिक्रिया तुरंत मिलती है।
3. भावनात्मक संबंध मजबूत बनता है।
4. शिक्षण और प्रेरण में प्रभावी है।

इसीलिए शिक्षक, नेता, कवि और वक्ता अपनी मौखिक क्षमता के बल पर जन-समूह को प्रभावित करते हैं।

### D. मौखिक भाषा की सीमाएँ

1. **स्थायित्व का अभाव:** मौखिक भाषा क्षणभंगुर होती है।
2. **रिकॉर्डिंग कठिन:** बिना लिखे इसे सुरक्षित रखना संभव नहीं।
3. **अर्थ की अस्पष्टता:** स्वर या भाव स्पष्ट न होने पर अर्थ भिन्न हो सकता है।
4. **मानकीकरण कठिन:** क्षेत्रीय विविधता के कारण एकरूपता कम होती है।



## 2. लिखित भाषा

### लिखित भाषा का उद्भव

लिखित भाषा मानव सभ्यता के विकास की एक क्रांतिकारी उपलब्धि है। जब मनुष्य ने ध्वनियों को प्रतीकों के माध्यम से स्थायी रूप में अंकित करना सीखा, तभी लेखन प्रणाली का विकास हुआ।

प्रारंभ में लेखन का माध्यम पत्थर, धातु, ताड़पत्र, भोजपत्र और बाद में कागज़ बना। मिस्र की *हाइरोग्लिफिक लिपि*, मेसोपोटामिया की *क्यूनिफॉर्म लिपि* और भारत की *ब्राह्मी लिपि* लिखित भाषा के प्रारंभिक रूप हैं।

### लिखित भाषा की विशेषताएँ

1. **स्थायित्व:** लिखित भाषा मौखिक भाषा की तरह नष्ट नहीं होती। इसे संरक्षित और पुनः उपयोग किया जा सकता है।
2. **मानकीकरण:** इसमें वर्तनी, व्याकरण और लिपि के निश्चित नियम होते हैं, जिससे एकरूपता बनी रहती है।
3. **विचारशीलता:** लिखते समय लेखक सोच-समझकर शब्दों का चयन करता है, जिससे भाषा अधिक सटीक और औपचारिक होती है।
4. **ज्ञान-संरक्षण:** लिखित रूप में ज्ञान, इतिहास, साहित्य और संस्कृति को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।
5. **संचार की व्यापकता:** लिखित भाषा समय और स्थान की सीमा से परे होती है - कोई व्यक्ति सैकड़ों वर्षों बाद भी किसी लेखक के विचार पढ़ सकता है।

### लिखित भाषा की सीमाएँ

1. **तत्काल प्रतिक्रिया का अभाव:** लेखक और पाठक के बीच प्रत्यक्ष संवाद नहीं होता।
2. **भावनात्मक कमी:** लिखित रूप में स्वर, लय और चेहरे के भाव नहीं होते, जिससे भावनात्मक प्रभाव कम हो सकता है।

3. **साक्षरता पर निर्भरता:** जो पढ़ना-लिखना नहीं जानता, उसके लिए यह भाषा अनुपयोगी होती है।

### मौखिक और लिखित भाषा में अंतर

| आधार        | मौखिक भाषा                  | लिखित भाषा                  |
|-------------|-----------------------------|-----------------------------|
| उत्पत्ति    | सबसे प्राचीन, स्वाभाविक रूप | बाद में विकसित, कृत्रिम रूप |
| माध्यम      | ध्वनि और श्रवण              | लिपि और दृष्टि              |
| स्थायित्व   | अस्थायी                     | स्थायी                      |
| व्याकरण     | लचीला, कम औपचारिक           | नियमबद्ध और मानकीकृत        |
| भावनात्मकता | अधिक                        | अपेक्षाकृत कम               |
| संचार गति   | तेज                         | धीमी                        |
| संरक्षण     | कठिन                        | सरल                         |
| प्रतिक्रिया | तुरंत मिलती है              | विलंबित मिलती है            |

### दोनों रूपों का परस्पर संबंध

मौखिक और लिखित भाषा एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं हैं।

- मौखिक भाषा लिखित भाषा की **नींव** है।
- लिखित भाषा मौखिक भाषा का **विस्तार** और **संरक्षण साधन** है।

बच्चा पहले बोलना सीखता है, फिर लिखना। इसी क्रम से सभ्यता में भी पहले मौखिक भाषा आई, फिर लेखन विकसित हुआ।



## आधुनिक युग में दोनों का संगम

तकनीकी युग में मौखिक और लिखित भाषा के बीच का अंतर धीरे-धीरे कम हो रहा है।

उदाहरण के लिए -

- व्हाट्सऐप, वॉयस नोट्स, यूट्यूब, पॉडकास्ट, स्पीच टू टेक्स्ट जैसी तकनीकें मौखिक और लिखित दोनों का संगम हैं।
- सोशल मीडिया में हम लिखित रूप में बोलचाल की भाषा का प्रयोग करने लगे हैं - जैसे "अरे यार, क्या बात है!"

इससे स्पष्ट होता है कि भाषा लगातार नए रूप ग्रहण कर रही है और दोनों अंग एक-दूसरे को समृद्ध कर रहे हैं।

मौखिक और लिखित दोनों रूप भाषा की अभिव्यक्ति के आवश्यक अंग हैं। मौखिक भाषा व्यक्ति-से-व्यक्ति संवाद की आत्मा है, जबकि लिखित भाषा समाज और सभ्यता की स्मृति है। मौखिक भाषा भावनात्मक और तात्कालिक है, जबकि लिखित भाषा स्थायी और विवेचनात्मक। दोनों के बिना भाषा अधूरी है।

**“बोलना भाषा को जन्म देता है, और लिखना उसे अमरता प्रदान करता है।”**

---

### 1.2.3 भाषा की प्रकृति (सामाजिक, गतिशील, मानवीय)

---

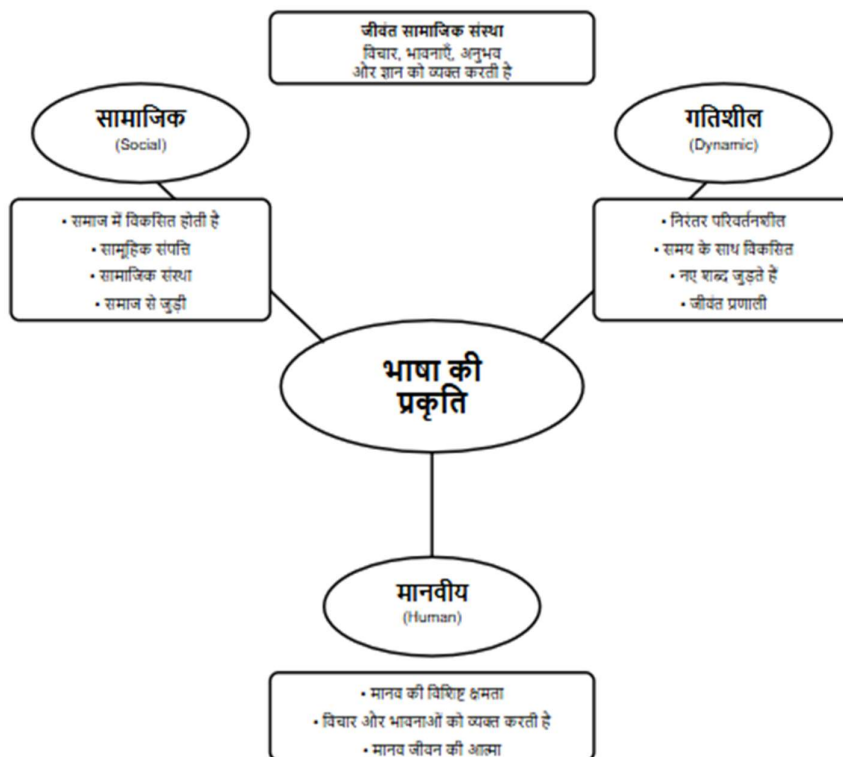
भाषा केवल शब्दों और व्याकरण का समूह नहीं है; यह एक **जीवंत सामाजिक संस्था** है। यह मानव जीवन की आत्मा है जो उसके विचार, भावनाएँ, अनुभव और ज्ञान को व्यक्त करती है। भाषा की प्रकृति को समझना उसके अस्तित्व, विकास और कार्य को समझने के समान है।

भाषा की तीन मूलभूत विशेष प्रकृतियाँ मानी गई हैं —

1. सामाजिक
2. गतिशील
3. मानवीय

इन तीनों आयामों के माध्यम से भाषा की वास्तविक पहचान स्पष्ट होती है।

भाषा का  
परिचय



चित्र 1.5: भाषा की प्रकृति

## 1. भाषा की सामाजिक प्रकृति

### भाषा एक सामाजिक आवश्यकता

मनुष्य स्वभावतः सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर उसे अपने विचार, भावनाएँ और अनुभव दूसरों तक पहुँचाने की आवश्यकता होती है। भाषा इसी आवश्यकता की पूर्ति करती है। भाषा का विकास व्यक्ति के भीतर नहीं, बल्कि समाज के भीतर होता है।

फ्रांसीसी भाषाविद् फर्डिनांड डी सॉस्यूर ने कहा था -

“Language is a social institution.”

अर्थात् भाषा समाज द्वारा निर्मित, पोषित और नियंत्रित संस्था है।



## समाज से भाषा का जन्म और विकास

भाषा का जन्म समाज की सामूहिक चेतना से हुआ है। जब लोग एक-दूसरे के संपर्क में आए, तभी संचार की आवश्यकता उत्पन्न हुई। यह आवश्यकता ही भाषा का कारण बनी।

- परिवार, ग्राम, राज्य और राष्ट्र - इन सभी सामाजिक इकाइयों ने भाषा को विकसित किया।
- समाज के सांस्कृतिक, आर्थिक, और राजनीतिक परिवर्तनों ने भाषा को निरंतर प्रभावित किया।

उदाहरण के लिए - हिंदी भाषा में संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेज़ी के शब्दों का समावेश इसीलिए हुआ क्योंकि भारत विभिन्न समाजों और संस्कृतियों के संपर्क में आया।

## सामाजिक व्यवहार का उपकरण

भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों की अभिव्यक्ति का भी माध्यम है। हम अपने व्यवहार, आदर, स्नेह, क्रोध, या व्यंग्य को भाषा के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

उदाहरण -

- “आप” कहना सम्मान का भाव है।
- “तू” कहना आत्मीयता या अपमान का संकेत हो सकता है।

इस प्रकार भाषा सामाजिक स्तरों के अनुरूप बदलती रहती है।

## सामाजिक विविधता और भाषा

भाषा का रूप समाज की विविधता पर निर्भर करता है। एक ही भाषा के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग रूप मिलते हैं - इन्हें उपभाषाएँ या बोलियाँ कहा जाता है।

उदाहरण - हिंदी की ब्रज, अवधी, भोजपुरी, हरियाणवी, राजस्थानी आदि बोलियाँ सामाजिक और भौगोलिक विविधता का प्रमाण हैं।

इसके अतिरिक्त सामाजिक स्तर (जाति, वर्ग, पेशा, लिंग) भी भाषा को प्रभावित करते हैं।

जैसे -

- शिक्षित वर्ग की हिंदी और ग्रामीण बोलचाल की हिंदी में अंतर स्पष्ट है।
- युवा वर्ग सोशल मीडिया की "मिश्रित भाषा" (हिंग्लिश) का प्रयोग अधिक करता है।

## समाज और भाषा का पारस्परिक प्रभाव

भाषा और समाज परस्पर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

- समाज बदलता है तो भाषा भी बदलती है।
- नई तकनीक, नए विचार, नए पेशे - सब भाषा में नए शब्द और अभिव्यक्तियाँ जोड़ते हैं।

उदाहरण - "मोबाइल", "सेल्फी", "ऑनलाइन", "डाउनलोड", "रील", "फॉलोअर" - ये शब्द सामाजिक परिवर्तन के परिणाम हैं।

भाषा समाज से बाहर अस्तित्व में नहीं रह सकती। यह समाज की आवश्यकताओं के अनुसार जन्म लेती है, बढ़ती है और बदलती रहती है। अतः भाषा का पहला और सबसे प्रमुख गुण है - उसकी सामाजिकता।

## 2. भाषा की गतिशील प्रकृति

### भाषा स्थिर नहीं, परिवर्तनशील है

भाषा एक जीवित तत्व है - इसका अर्थ है कि यह निरंतर परिवर्तनशील है। समय, स्थान, समाज और संस्कृति के साथ इसका रूप, शब्दावली और प्रयोग बदलते रहते हैं।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

भाषा में यह गतिशीलता ही उसे जीवित बनाए रखती है। यदि भाषा में परिवर्तन न हो तो वह मृत हो जाएगी, जैसे - संस्कृत या लैटिन की प्राचीन स्थिति।

### भाषा में परिवर्तन के कारण

भाषा में परिवर्तन कई कारणों से होते हैं:

1. **सामाजिक परिवर्तन:** समाज में जब नए विचार, व्यवसाय, और तकनीक आते हैं तो नए शब्द और रूप विकसित होते हैं।
2. **सांस्कृतिक संपर्क:** एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति से संपर्क भाषा को समृद्ध करता है। उदाहरण: हिंदी में "किताब" (अरबी), "कमीज़" (फारसी), "सड़क" (तुर्की), "ट्रेन" (अंग्रेज़ी)।
3. **भौगोलिक विविधता:** अलग-अलग क्षेत्रों में उच्चारण और शब्द बदलते हैं - यही कारण है कि एक ही भाषा की अनेक बोलियाँ बनती हैं।
4. **समय का प्रभाव:** पुराने शब्द लुप्त हो जाते हैं, नए शब्द जुड़ते हैं। जैसे "पत्र" की जगह "ईमेल" का प्रयोग आधुनिक समय में सामान्य है।

### ध्वनि और व्याकरण में परिवर्तन

भाषा में परिवर्तन केवल शब्दों तक सीमित नहीं, बल्कि ध्वनियों और व्याकरण में भी होता है।

उदाहरण -

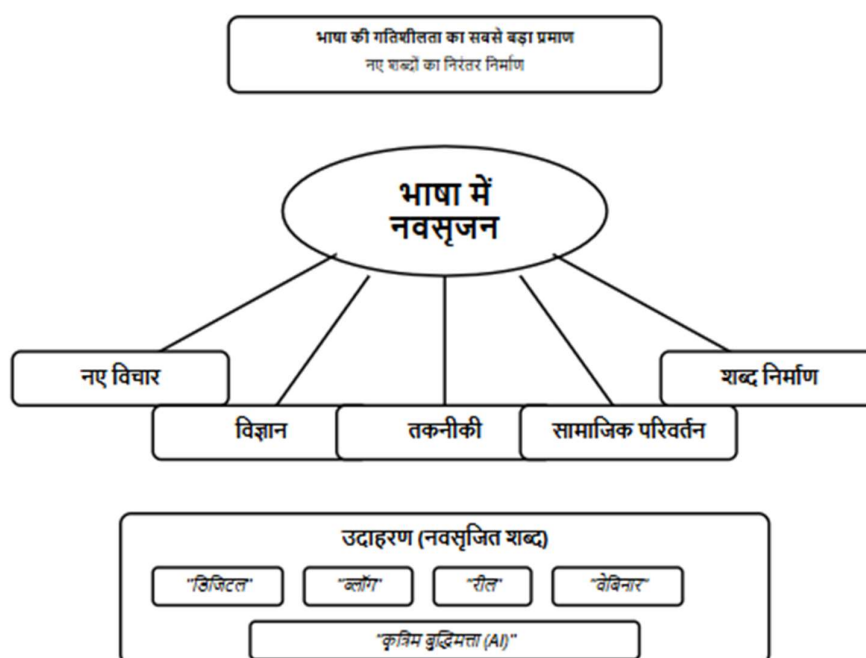
- संस्कृत का "गच्छामि" → हिंदी का "जाता हूँ"
- "अस्ति" → "है"

यह परिवर्तन ध्वनि और व्याकरणिक सरलीकरण के कारण हुआ।

## भाषा में नवसृजन

भाषा की गतिशीलता का सबसे बड़ा प्रमाण उसका *नवसृजन* है। भाषा नए विचारों, विज्ञान, तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों के अनुसार अपने शब्दों का निर्माण करती रहती है।

उदाहरण - "डिजिटल", "ब्लॉग", "रील", "वेबिनार", "कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)" जैसे शब्द इस नवसृजन के द्योतक हैं।



चित्र 1.6: भाषा में नवसृजन

## तकनीकी युग में भाषा का रूपांतरण

डिजिटल युग में भाषा का रूप तेजी से बदल रहा है।

- इंटरनेट, सोशल मीडिया और मोबाइल एप्स ने नई अभिव्यक्तियों को जन्म दिया है।
- हिंग्लिश (Hindi + English) जैसे मिश्रित रूप युवाओं की पसंद बन चुके हैं।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

उदाहरण: "चलो यार!", "तू ऑनलाइन है क्या?"- यह आधुनिक भाषाई गतिशीलता का उदाहरण है।

### निष्कर्ष (गतिशील प्रकृति)

भाषा की गतिशीलता उसकी जीवन-शक्ति है। यह परिवर्तनशीलता ही भाषा को जीवित और उपयोगी बनाए रखती है। इसलिए भाषा को स्थिर मानना उसके विकास को रोकना है।

### 3. भाषा की मानवीय प्रकृति

#### भाषा मनुष्य की विशिष्ट देन

भाषा केवल मनुष्य की संपत्ति है। पशु-पक्षी ध्वनियाँ तो निकालते हैं, परंतु वे **संरचित, प्रतीकात्मक और व्याकरणिक भाषा** का प्रयोग नहीं कर सकते।

मनुष्य ने ही ध्वनियों को प्रतीकों में बदला, उन्हें अर्थ दिए, और फिर उनसे विचारों का निर्माण किया। इस प्रकार भाषा उसकी बुद्धि, चेतना और सामाजिकता का प्रमाण है।

#### भाषा और मस्तिष्क का संबंध

भाषा का निर्माण मानव मस्तिष्क की बौद्धिक प्रक्रिया से होता है।

- मस्तिष्क के *ब्रॉका क्षेत्र (Broca's Area)* और *वर्निके क्षेत्र (Wernicke's Area)* में भाषा की समझ और अभिव्यक्ति की क्षमता होती है।
- यह न्यूरोलॉजिकल क्रिया केवल मनुष्य में विकसित है।

इसलिए कहा जाता है -

"भाषा मानव मन का दर्पण है।"

## भाषा और विचार

भाषा विचार की अभिव्यक्ति का माध्यम है, किंतु कई भाषाविद् यह भी मानते हैं कि **भाषा स्वयं विचार को आकार देती है।**

**सापिर-व्हॉर्फ परिकल्पना** के अनुसार -

“मनुष्य जिस भाषा में सोचता है, वही उसकी वास्तविकता को परिभाषित करती है।”

अर्थात् भाषा केवल विचार व्यक्त नहीं करती, बल्कि उन्हें निर्मित भी करती है।

## भाषा और संस्कृति

भाषा मनुष्य की संस्कृति का वाहक है। उसमें समाज की परंपराएँ, मूल्य, और ज्ञान-संवेदनाएँ संरक्षित रहती हैं। प्रत्येक भाषा अपनी संस्कृति की आत्मा है।

उदाहरण -

- हिंदी में “नमस्ते”, “प्रणाम”, “सत्संग”, “धर्म” - ये केवल शब्द नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रतीक हैं।
- अंग्रेज़ी में “नमस्ते” या “शुभ प्रभात” समानार्थक हैं, परंतु सांस्कृतिक भाव अलग है।

## भाषा और सृजनशीलता

भाषा मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता को व्यक्त करती है। कविता, कहानी, गीत, नाटक, निबंध - ये सब मानव मस्तिष्क की रचनात्मकता का परिणाम हैं।

भाषा के बिना साहित्य, दर्शन, विज्ञान या इतिहास की रचना असंभव है। इसलिए भाषा केवल संचार का साधन नहीं, बल्कि **सृजन का उपकरण** भी है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

## भाषा और नैतिकता

भाषा मनुष्य के सामाजिक और नैतिक व्यवहार को भी प्रभावित करती है। शिष्टाचार, सम्मान, संवेदना - ये सब भाषा के माध्यम से प्रकट होते हैं। संवेदनशील और मर्यादित भाषा व्यक्ति के चरित्र और संस्कृति को दर्शाती है।

भाषा मनुष्य का दर्पण है - उसकी बुद्धि, संवेदना और सृजनशीलता की प्रतीक। इसी के माध्यम से मनुष्य अपने समाज, संस्कृति और अस्तित्व को व्यक्त करता है। इसलिए भाषा को मानवीय कहा जाता है क्योंकि यह केवल मनुष्य के साथ उत्पन्न और विकसित हुई है।

## समग्र निष्कर्ष (भाषा की प्रकृति)

भाषा का वास्तविक स्वरूप तीन गुणों में निहित है -

1. **सामाजिकता** - भाषा समाज के बिना संभव नहीं।
2. **गतिशीलता** - भाषा परिवर्तनशील है।
3. **मानवता** - भाषा केवल मनुष्य की देन है।

ये तीनों मिलकर भाषा को एक जीवंत, सांस्कृतिक और रचनात्मक संस्था बनाते हैं।

“भाषा समाज की आत्मा, संस्कृति का दर्पण और मनुष्य की चेतना का विस्तार है।”

---

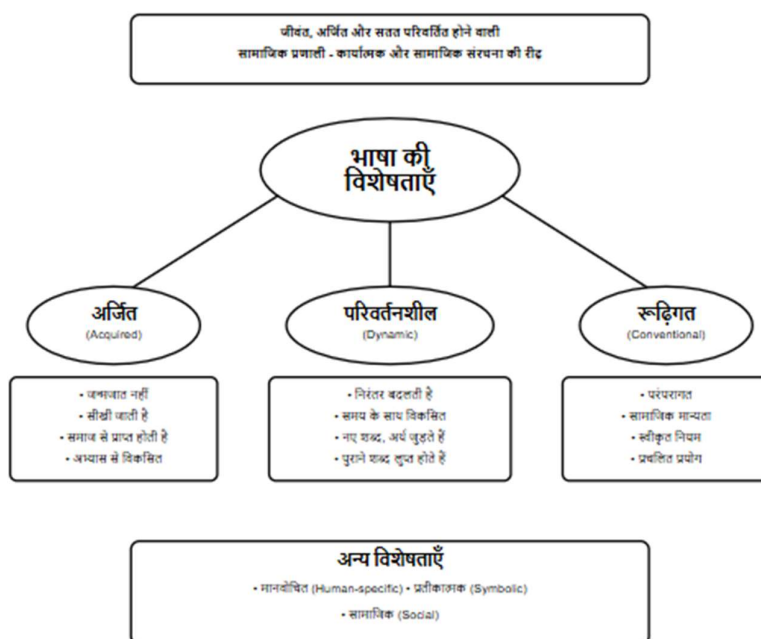
### 1.2.4 भाषा की विशेषताएँ (अर्जित, परिवर्तनशील, रूढ़िगत)

---

भाषा की प्रकृति और अंगों के अध्ययन के पश्चात् यदि हम उसके आंतरिक स्वरूप और कार्यप्रणाली को देखें, तो स्पष्ट होता है कि भाषा एक जीवंत, अर्जित और सतत परिवर्तित होने वाली सामाजिक प्रणाली है। भाषा की विशेषताएँ वे गुण हैं, जो उसे अन्य संप्रेषण प्रणालियों से भिन्न बनाते हैं। भाषाविज्ञान में भाषा की अनेक विशेषताओं का उल्लेख किया गया है - जैसे कि उसका मानवोचित होना, प्रतीकात्मक होना, सामाजिक होना, परिवर्तनशील होना, तथा परंपरागत या रूढ़िगत होना। किन्तु यहाँ हम विशेष रूप से तीन प्रमुख विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे -

1. अर्जित
2. परिवर्तनशील
3. रूढ़िगत

ये तीनों विशेषताएँ भाषा की कार्यात्मक और सामाजिक संरचना की रीढ़ हैं।



चित्र 1.7: भाषा की विशेषताएँ

## 1. भाषा अर्जित होती है

### भाषा जन्मजात नहीं होती

भाषा मनुष्य में जन्म से उपस्थित नहीं होती। हर शिशु बोलने की प्राकृतिक क्षमता तो लेकर आता है, परंतु उसे कौन-सी भाषा बोलनी है - यह समाज और वातावरण से सीखनी पड़ती है।

अर्थात् भाषा **सीखने और अर्जित करने की प्रक्रिया** है, न कि आनुवंशिक देन। इसीलिए किसी बच्चे को यदि प्रारंभिक वर्षों में भाषा का संपर्क न मिले, तो वह बोलना नहीं सीख पाता।



### उदाहरण:

जंगली परिवेश में पले बच्चों (feral children) में भाषा विकास नहीं पाया गया - जैसे "गीनी" या "अमला-कमला" के प्रकरण।

यह सिद्ध करता है कि भाषा अर्जित होती है।

### भाषा अर्जन की प्रक्रिया

भाषा अर्जन बचपन में स्वाभाविक रूप से होता है। यह प्रक्रिया चार चरणों में पूरी होती है -

1. **श्रवण चरण:** बच्चा पहले ध्वनियाँ सुनता है और उनकी पहचान करता है। माँ की आवाज़ या परिचित ध्वनियाँ उसे आश्वस्त करती हैं।
2. **उच्चारण चरण:** धीरे-धीरे बच्चा 'माँ', 'पापा', 'पानी' जैसे सरल शब्द बोलने लगता है।
3. **अनुकरण चरण:** वह आसपास के लोगों की भाषा की नकल करता है और व्याकरण के नियम स्वाभाविक रूप से सीखता है।
4. **संरचना चरण:** बाल्यावस्था में ही वह वाक्य बनाना, अर्थ समझना और प्रतिक्रिया देना सीख जाता है।

भाषा अर्जन की यह प्रक्रिया **अनुभव-आधारित** होती है, न कि केवल शिक्षण से।

### अर्जित भाषा और सिखाई गई भाषा में अंतर

| आधार      | अर्जित भाषा        | सिखाई गई भाषा                |
|-----------|--------------------|------------------------------|
| प्रक्रिया | स्वाभाविक          | योजनाबद्ध                    |
| स्थान     | घर, समाज, परिवेश   | विद्यालय या प्रशिक्षण केंद्र |
| गति       | स्वतः, सहज रूप में | धीरे-धीरे, औपचारिक रूप में   |
| उद्देश्य  | संचार की आवश्यकता  | ज्ञान या व्यावसायिक उपयोग    |
| उदाहरण    | मातृभाषा           | दूसरी या विदेशी भाषा         |



उदाहरण के लिए –

एक बच्चा हिंदी अपने घर में सुन-सुनकर बोलना सीखता है (अर्जित भाषा),  
लेकिन अंग्रेज़ी उसे विद्यालय में सिखाई जाती है (सिखाई गई भाषा)।

## **समाज और परिवार की भूमिका**

भाषा अर्जन की सबसे बड़ी भूमिका परिवार और समाज निभाते हैं।  
माता-पिता, भाई-बहन, मित्र, शिक्षक - सब भाषा के वातावरण का निर्माण करते हैं।  
यही कारण है कि जिस वातावरण में बच्चा पलेगा, उसी भाषा का वह प्रयोग करेगा।

इसलिए कहा जाता है -

“भाषा सीखी जाती है, सिखाई नहीं जाती।”

अर्थात् भाषा पकड़ी जाती है, सिखाई नहीं जाती।

भाषा मनुष्य की अर्जित क्षमता है। यह जन्मजात नहीं, बल्कि समाज के संपर्क और  
संचार की प्रक्रिया से विकसित होती है। भाषा अर्जन की यह स्वाभाविक क्षमता ही  
मनुष्य को अन्य जीवों से भिन्न बनाती है।

## **2. भाषा परिवर्तनशील होती है**

### **परिवर्तनशीलता का अर्थ**

भाषा स्थिर नहीं होती; वह समय, समाज और संस्कृति के साथ बदलती रहती है।  
यह परिवर्तन उसकी जीवंतता का संकेत है। जो भाषा नहीं बदलती, वह नष्ट हो जाती  
है - जैसे प्राचीन संस्कृत या लैटिन अब केवल अध्ययन की भाषा बन गई हैं।

### **परिवर्तन के रूप**

भाषा में परिवर्तन कई स्तरों पर दिखाई देता है -



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

1. **ध्वनि परिवर्तन (Phonetic Change):** शब्दों के उच्चारण में बदलाव होता है।

जैसे - संस्कृत का "राजन्" → हिंदी का "राजा"

2. **रूप परिवर्तन (Morphological Change):** शब्दों के रूप में परिवर्तन होता है।

जैसे - "कर्म करीत" → "करता है"

3. **अर्थ परिवर्तन (Semantic Change):** एक ही शब्द का अर्थ समय के साथ बदल जाता है।

जैसे - "अच्छा" पहले नैतिक अर्थ में था, अब सामान्य प्रशंसा का शब्द है।

4. **संरचना परिवर्तन (Syntactic Change):** वाक्य विन्यास और व्याकरण में बदलाव आता है।

जैसे - "मैं भोजन करता हूँ" → "मैं खाना खाता हूँ।"

### परिवर्तन के कारण

1. **सामाजिक परिवर्तन:** समाज के नए विचार और रीति-रिवाज भाषा को प्रभावित करते हैं।
2. **तकनीकी प्रगति:** विज्ञान और तकनीक से नए शब्द जुड़ते हैं - जैसे "इंटरनेट", "रील", "क्लाउड" आदि।
3. **संस्कृति-संपर्क:** विभिन्न भाषाओं के संपर्क से मिश्रित रूप उत्पन्न होते हैं - जैसे "हिंग्लिश", "टैंग्लिश"।
4. **आर्थिक और राजनीतिक कारण:** शासन, शिक्षा और व्यापार से भी भाषा में नये शब्द आते हैं।

## परिवर्तनशीलता के लाभ

भाषा की यह लचीलापन उसे समाज के अनुरूप बनाता है।

यदि भाषा कठोर होती, तो वह बदलते युग में उपयोगी नहीं रह पाती।

परिवर्तनशीलता से -

- भाषा की प्रभावशीलता बढ़ती है,
- नए विचारों का स्वागत होता है,
- और संप्रेषण अधिक सजीव बनता है।

## उदाहरण: हिंदी की परिवर्तनशीलता

हिंदी भाषा सदियों से परिवर्तनशील रही है -

- अपभ्रंश → अवहट्ट → प्रारंभिक हिंदी → आधुनिक हिंदी
- संस्कृत, फारसी, उर्दू, अंग्रेज़ी आदि से शब्दों का सतत आगमन हुआ।

आज की हिंदी में “मोबाइल”, “ऑनलाइन”, “डाउनलोड” जैसे शब्द सहज रूप से प्रयुक्त होते हैं, जो उसकी गतिशीलता का प्रमाण हैं।

भाषा की परिवर्तनशीलता उसे युगानुकूल बनाती है। यह विशेषता ही उसे मृत होने से बचाती है और समाज के विकास के साथ जोड़ती है। इसलिए कहा जाता है -

“भाषा जितनी बदलती है, उतनी जीवित रहती है।”

## 3. भाषा रूढ़िगत होती है

### रूढ़िगतता का अर्थ

भाषा की रूढ़िगतता का तात्पर्य है कि यह सामाजिक परंपराओं और स्वीकृत नियमों पर आधारित होती है। भाषा के शब्द और उनके अर्थ समाज द्वारा “मान्य” किए जाते हैं।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

उदाहरण - हम “जल” शब्द को पानी के लिए इसलिए प्रयोग करते हैं क्योंकि समाज में यह परंपरा बन गई है। यदि हम “जल” को किसी और अर्थ में प्रयोग करें, तो भ्रम उत्पन्न होगा।

### भाषा एक सामाजिक संधि

भाषा का अस्तित्व इसलिए संभव है क्योंकि समाज के लोग यह “अनुबंध” करते हैं कि किसी विशेष ध्वनि या शब्द का अर्थ क्या होगा। यह एक **अनौपचारिक सामाजिक समझौता** है - जिसे सॉस्पूर ने “संकेतों की मनमानी” कहा।

अर्थात् -

“शब्द और उसके अर्थ के बीच कोई स्वाभाविक संबंध नहीं होता; वह समाज द्वारा निर्धारित होता है।”

उदाहरण:

- “Tree” अंग्रेज़ी में वृक्ष के लिए है,
- “पेड़” हिंदी में,
- “Arbre” फ्रेंच में।

अर्थ एक ही है, पर शब्द अलग हैं - यह रूढ़िगतता का परिणाम है।

### रूढ़िगतता और स्थायित्व का संबंध

भाषा की रूढ़िगतता उसे स्थायित्व देती है। यदि हर व्यक्ति अपने-अपने अर्थ बनाने लगे, तो संचार असंभव हो जाएगा। इसलिए भाषा में कुछ मानक नियम और परंपराएँ आवश्यक हैं -

- वर्तनी,
- व्याकरण,
- उच्चारण,
- अर्थ आदि।

## रूढ़िगतता और नवाचार का संतुलन

भाषा केवल रूढ़ियों में बंधी नहीं रहती; वह समय-समय पर नई रूढ़ियाँ भी बनाती है।

उदाहरण -

“मेल” पहले डाक से जुड़ा शब्द था, अब “ई-मेल” के रूप में नया अर्थ ग्रहण कर चुका है।

इससे स्पष्ट होता है कि भाषा में रूढ़िगतता और नवाचार दोनों का संतुलन आवश्यक है।

## भाषा शिक्षण में रूढ़िगतता का महत्व

भाषा की रूढ़िगतता शिक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसी के कारण व्याकरण, शब्दकोश, और पाठ्यक्रम निर्धारित किए जा सकते हैं। यदि भाषा में कोई मानक न हो, तो शिक्षा प्रणाली असंभव हो जाएगी।

भाषा की रूढ़िगतता उसकी सामाजिक एकरूपता और स्थायित्व की गारंटी है। यह भाषा को अराजकता से बचाती है और समाज में पारस्परिक समझ बनाए रखती है।

अतः यह भाषा की एक आवश्यक विशेषता है।

## समग्र निष्कर्ष (भाषा की विशेषताएँ)

भाषा की विशेषताएँ उसके अस्तित्व, विकास और उपयोग की नींव हैं। तीनों - अर्जित, परिवर्तनशील और रूढ़िगत - विशेषताएँ परस्पर संबंधित हैं:

| विशेषता     | प्रकृति                  | प्रभाव                                      |
|-------------|--------------------------|---------------------------------------------|
| अर्जित      | सीखने योग्य, स्वाभाविक   | व्यक्ति भाषा के माध्यम से समाज से जुड़ता है |
| परिवर्तनशील | गतिशील, विकसित होने वाली | भाषा समयानुकूल बनती रहती है                 |
| रूढ़िगत     | परंपरागत, मानकीकृत       | भाषा में एकरूपता और स्थिरता बनी रहती है     |



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

इन तीनों के समन्वय से भाषा न केवल जीवित रहती है, बल्कि विकसित होकर नई सृजनात्मक संभावनाओं को जन्म देती है।

**“भाषा अर्जित होती है इसलिए जीवित है, परिवर्तनशील है इसलिए प्रगतिशील है, और रूढ़िगत है इसलिए समझ में आती है।”**

### **उपसंहार (समग्र अध्याय का सारांश)**

इस सम्पूर्ण अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि -

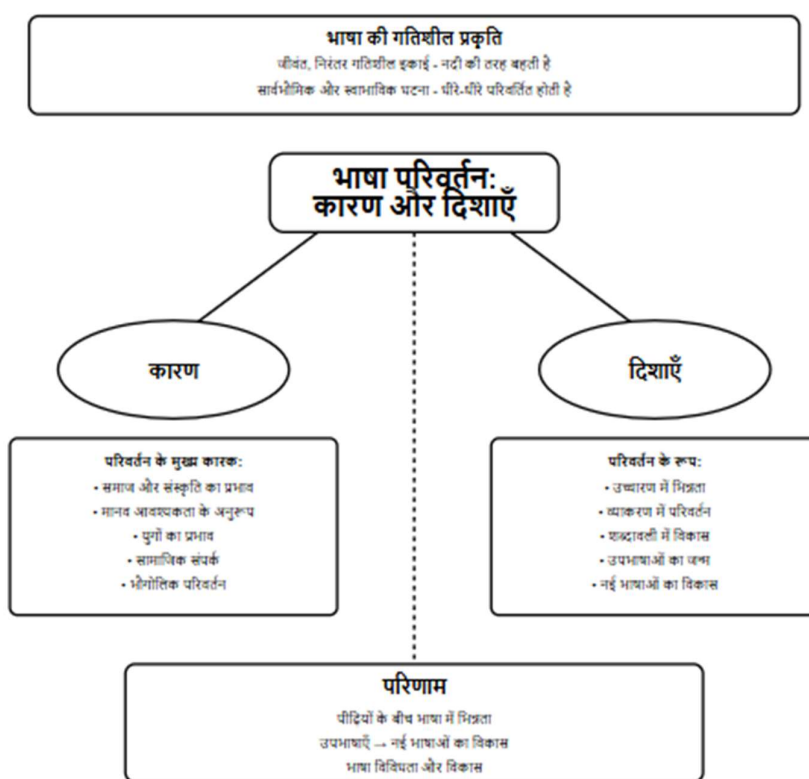
- भाषा के तत्व (ध्वनि, शब्द, वाक्य) उसकी संरचना के अंग हैं।
- उसके अंग (मौखिक और लिखित रूप) उसके प्रयोग के साधन हैं।
- उसकी प्रकृति (सामाजिक, गतिशील, मानवीय) उसके अस्तित्व की पहचान है।
- और उसकी विशेषताएँ (अर्जित, परिवर्तनशील, रूढ़िगत) उसके निरंतर विकास की प्रेरक शक्ति हैं।

अतः भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति और मानव सभ्यता की आत्मा है।

**“भाषा वही जीवित है जो समाज में बोलती, बदलती और सीखती रहती है।”**

## इकाई 1.3: भाषा परिवर्तन के कारण व दिशाएँ

भाषा, मानव सभ्यता की नींव, कोई स्थिर और जड़ वस्तु नहीं है; यह एक जीवंत, निरंतर गतिशील इकाई है। जिस प्रकार कोई नदी अपने स्रोत से निकलकर मार्ग में आने वाली बाधाओं और भूभागों से प्रभावित होकर लगातार अपनी दिशा, गति और स्वरूप बदलती रहती है, ठीक उसी प्रकार भाषा भी युगों-युगों तक मानव समाज, संस्कृति और आवश्यकता के अनुरूप स्वयं को परिवर्तित करती रहती है। भाषा परिवर्तन एक सार्वभौमिक और स्वाभाविक घटना है, जो किसी भी भाषा के इतिहास में अपरिहार्य है। यह परिवर्तन धीरे-धीरे और अनजाने में होता है, लेकिन इसका परिणाम यह होता है कि एक ही भाषा बोलने वाले समूह की पीढ़ियाँ समय के साथ उच्चारण, व्याकरण और शब्दावली में भिन्नता महसूस करने लगती हैं। यह परिवर्तन ही उपभाषाओं को जन्म देता है, जो अंततः नई भाषाओं के रूप में विकसित हो सकती हैं। भाषा विज्ञान में, परिवर्तन की इस प्रक्रिया को समझने के लिए इसके कारणों और इसके रूपों (दिशाओं) का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।



चित्र 1.8: भाषा परिवर्तन: कारण और दिशाएँ



### 1.3.1 भाषा परिवर्तन के कारण

भाषा परिवर्तन के कारण बहुआयामी होते हैं और उन्हें सुविधा की दृष्टि से मुख्य रूप से सामाजिक, भौगोलिक और मनोवैज्ञानिक वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। ये कारण अकेले या सामूहिक रूप से कार्य करके भाषा के स्वरूप को प्रभावित करते हैं।

#### क) सामाजिक कारण

सामाजिक कारण भाषा परिवर्तन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि भाषा का जन्म और विकास समाज में ही होता है। समाज की संरचना, गतिशीलता और संपर्क की प्रवृत्ति सीधे भाषा को प्रभावित करती है।

**1. सांस्कृतिक और शैक्षिक प्रभाव:** शिक्षा का प्रसार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान भाषा की शब्दावली को समृद्ध करता है। जब किसी समाज में नए विचार, विज्ञान या कला का विकास होता है, तो उन्हें अभिव्यक्त करने के लिए नए शब्दों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने "इंटरनेट," "वेबसाइट," "सर्वर" जैसे हजारों शब्दों को हिंदी और अन्य भाषाओं में समाहित कर दिया है, जिससे न केवल शब्दावली बदली है, बल्कि वाक्य संरचना भी प्रभावित हुई है। इसी प्रकार, धार्मिक या सांस्कृतिक आंदोलनों के दौरान विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग बढ़ जाता है।

**2. सामाजिक प्रतिष्ठा और वर्ग भेद:** समाज में विभिन्न वर्ग, जाति या लिंग समूह अपनी विशिष्ट भाषा शैली (सोशियोलेक्ट) का प्रयोग करते हैं। उच्च वर्ग या शिक्षित वर्ग द्वारा प्रयुक्त भाषा को अक्सर अधिक प्रतिष्ठित माना जाता है, और निचले या कम शिक्षित वर्ग के लोग अनजाने में उस प्रतिष्ठित भाषा का अनुकरण करने का प्रयास करते हैं। इस अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण कई ध्वनिगत और व्याकरणिक परिवर्तन जन्म लेते हैं। उदाहरण के लिए, किसी विशिष्ट वर्ग के उच्चारण (जैसे 'r' का उच्चारण न करना) का फैल जाना या व्याकरणिक रूपों का मानकीकरण हो जाना।

**3. भाषा संपर्क और द्विभाषिकता:** जब दो भिन्न भाषा-भाषी समूह एक-दूसरे के निकट आते हैं-चाहे वह व्यापार, उपनिवेशीकरण, प्रवास या राजनीतिक वर्चस्व के कारण हो-तो दोनों भाषाओं के बीच शब्दों और संरचनाओं का आदान-प्रदान होता है। यह शायद भाषा परिवर्तन का सबसे प्रबल कारण है। हिंदी में अरबी, फारसी और अंग्रेजी शब्दों की विशाल उपस्थिति इसी संपर्क का परिणाम है। इस संपर्क के कारण उधार लिए गए शब्दों के साथ-साथ ध्वनि में (जैसे /f/ ध्वनि का आना), और व्याकरणिक निर्माणों में भी परिवर्तन आ जाता है। इसे आंतरिक और बाहरी कारण दोनों माना जा सकता है।

**4. आधुनिकीकरण और नवोन्मेष:** नए आविष्कारों, तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के दबाव में भाषाएँ लगातार विकसित होती हैं। यह न केवल नए शब्दों को जन्म देता है (**शब्द-सृजन**), बल्कि मौजूदा शब्दों को भी नए अर्थ प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, संस्कृत में "यात्रा" का अर्थ था "जाना," जबकि आज इसका अर्थ "पर्यटन" या "सफर" से जुड़ गया है। यह समाज की बदलती आवश्यकताओं का सीधा परिणाम है।

**5. फैशन और अस्थायी प्रवृत्ति:** युवा पीढ़ी या विशेष समूह अक्सर अपनी पहचान बनाने के लिए विशिष्ट शब्दों, मुहावरों या उच्चारणों का प्रयोग शुरू कर देते हैं, जो एक "फैशन" बन जाता है। यदि यह प्रवृत्ति पर्याप्त समय तक चलती है, तो यह भाषा का स्थायी हिस्सा बन जाती है। शब्दों का संक्षिप्त रूप (जैसे 'LOL' या 'ROFL') या स्लैंग (Slang) इसी श्रेणी में आते हैं।

## ख) भौगोलिक कारण

भौगोलिक परिस्थितियाँ सीधे तौर पर भाषा परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक का काम करती हैं, विशेषकर बोली और उपभाषाओं के निर्माण में।

**1. भौगोलिक अलगाव:** जब एक ही भाषा बोलने वाला समूह भौगोलिक बाधाओं (जैसे ऊँचे पहाड़, गहरे समुद्र, या घने जंगल) के कारण कई छोटे समूहों में बँट जाता है, तो उन समूहों के बीच सीधा संपर्क टूट जाता है। संपर्क की कमी के कारण, प्रत्येक समूह स्वतंत्र रूप से अपने ध्वनि, व्याकरण और शब्दावली में छोटे-छोटे परिवर्तन



विकसित करना शुरू कर देता है। समय के साथ, ये छोटे अंतर इतने बड़े हो जाते हैं कि वे अलग-अलग उपभाषाओं का रूप ले लेते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी की विभिन्न उपभाषाओं (जैसे अवधी, ब्रज, भोजपुरी) का विकास काफी हद तक भौगोलिक दूरी के कारण हुआ है।

**2. जलवायु और वातावरण का प्रभाव:** यद्यपि यह कारण विवादित रहा है, कुछ भाषाविद् मानते हैं कि जलवायु उच्चारण को प्रभावित कर सकती है। अत्यधिक ठंडे प्रदेशों में, जहाँ मुँह को कम खोलना सुविधाजनक होता है, वहाँ के लोग कम मुखर ध्वनियों का उपयोग कर सकते हैं। इसी प्रकार, किसी विशेष स्थान पर उपलब्ध वनस्पतियों, जीवों या भौगोलिक विशेषताओं के लिए विशिष्ट शब्दावली का विकास होता है, जो अन्य स्थानों पर अनुपस्थित होती है।

### ग) मनोवैज्ञानिक कारण

मनोवैज्ञानिक कारण वे हैं जो वक्ता और श्रोता की मनःस्थिति, उनकी सुविधा और मस्तिष्क की प्रक्रियाओं से जुड़े होते हैं। ये कारण भाषा के भीतर आंतरिक रूप से काम करते हैं।

**1. श्रम लाघव:** मानव मन स्वभाव से ही सरलता और सुविधा की तलाश करता है। वक्ता सदैव कम से कम प्रयास में अपने विचार व्यक्त करना चाहता है। यह प्रवृत्ति ध्वनि परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण है। उदाहरण के लिए, कठिन या जटिल ध्वनियों को सरल बनाना, शब्दों का संक्षेप करना, या उच्चारण में कमी करना। 'स्थिर' → 'थिर,' 'गुरु' → 'गुड़' (उड़िया में), 'रेल-गाड़ी' → 'रेल' (छोटा करना) इसी प्रवृत्ति का उदाहरण हैं।

**2. सादृश्यता:** मानव मस्तिष्क अनियमितताओं की बजाय नियम और समरूपता पसंद करता है। सादृश्यता वह प्रवृत्ति है जिसके द्वारा वक्ता किसी एक प्रचलित पैटर्न के आधार पर दूसरे शब्दों को बदल देता है। यह अक्सर भाषा की अनियमितताओं को दूर करता है। उदाहरण के लिए, यदि 'चलना' का भूतकाल 'चला' है, तो एक बच्चा 'जाना' का भूतकाल गलती से 'जाया' (नियम के आधार पर) कह सकता है, जबकि सही रूप 'गया' है। समय के साथ, यह सादृश्यता अनियमित रूपों को नियमित रूपों

में बदल देती है। जैसे संस्कृत में कई कारक रूप थे, हिंदी में सादृश्यता के कारण वे काफी सरल हो गए।

भाषा का  
परिचय



**3. भूल या अस्पष्ट उच्चारण:** बोलने की प्रक्रिया में हुई सामान्य भूलें (जैसे जिह्वा का फिसलना) या बच्चों द्वारा शब्दों का गलत अनुकरण, यदि व्यापक रूप से स्वीकार कर लिया जाए, तो वे स्थायी परिवर्तन बन जाते हैं। 'अस्पष्ट' उच्चारण अक्सर नए ध्वनियों या रूपों को जन्म देते हैं।

**4. अति-शुद्धता:** जब कोई वक्ता, जो किसी बोली या भाषा की एक विशिष्ट विशेषता रखता है, मानक भाषा बोलने का प्रयास करता है, तो वह कभी-कभी उस विशेषता को ज़रूरत से ज़्यादा सुधारने की कोशिश करता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी बोली में 's' को 'h' (स → ह) बोला जाता है, तो उस बोली का वक्ता मानक भाषा में 'ह' वाले शब्दों को भी 'स' से बोल सकता है, जिससे गलती से परिवर्तन आ जाता है।

**5. शिष्टता और वर्जित शब्द:** कुछ शब्द या विचार सामाजिक रूप से अप्रिय, अशिष्ट या वर्जित माने जाते हैं (जैसे मृत्यु, रोग, शारीरिक क्रियाएँ)। इन शब्दों के स्थान पर अधिक शिष्ट, नरम और अप्रत्यक्ष शब्दों का प्रयोग शुरू हो जाता है, जिन्हें शिष्टोक्ति कहते हैं। ये नए शब्द धीरे-धीरे पुराने शब्दों को प्रतिस्थापित कर देते हैं, जिससे अर्थ परिवर्तन (अर्थापिकर्ष) या नए शब्दों का निर्माण होता है।

---

### 1.3.2 भाषा परिवर्तन की दिशाएँ

---

भाषा परिवर्तन के कारण उसकी संरचना के विभिन्न स्तरों पर दिखाई देते हैं। इन परिवर्तनों को मुख्य रूप से तीन दिशाओं या स्तरों में वर्गीकृत किया जाता है: ध्वनि परिवर्तन, अर्थ परिवर्तन और रूप परिवर्तन (व्याकरणिक परिवर्तन)।

#### क) ध्वनि परिवर्तन

ध्वनि परिवर्तन से तात्पर्य भाषा की उच्चारण प्रणाली और उसकी स्वनिम व्यवस्था में आए बदलावों से है। यह अक्सर श्रम लाघव के मनोवैज्ञानिक नियम के कारण होता है।

**1. लोप:** जब उच्चारण को सरल बनाने के लिए किसी ध्वनि (स्वर या व्यंजन) को शब्द से हटा दिया जाता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

- **उदाहरण:** संस्कृत 'स्थाली' → हिंदी 'थाली' (स का लोप)।
- **मध्य स्वर लोप:** 'सरस्वती' → 'सरसती,' 'उपासना' → 'उपसना'।

**2. आगम:** जब दो कठिन ध्वनियों के बीच उच्चारण को आसान बनाने के लिए कोई नई ध्वनि जोड़ दी जाती है, या शब्द के आरंभ/अंत में ध्वनि जोड़ी जाती है।

- **उदाहरण:** अंग्रेजी 'School' → हिंदी 'इस्कूल' (इ-स्वर का आगम)।
- 'दोष' → 'दोख' (ख-व्यंजन का आगम)।

**3. विपर्यय:** जब शब्द के भीतर ध्वनियों का स्थान परस्पर बदल जाता है।

- **उदाहरण:** संस्कृत 'चिह्न' → सामान्य प्रयोग में 'चिन्ह'।
- 'अज्ञान' → 'अनजान' (अ-ज्ञान का विपर्यय)।

**4. समीकरण:** जब एक ध्वनि अपने निकट की दूसरी ध्वनि के प्रभाव से उसी के समान या उससे मिलती-जुलती बन जाती है। यह उच्चारण में सुविधा लाता है।

- **उदाहरण:** संस्कृत 'कर्म' → प्राकृत 'कम्म' (र् का म में परिवर्तन)।
- 'पद्म' → 'पम्म'।
- **पूर्ण समीकरण:** जब दोनों ध्वनियाँ एक हो जाती हैं।

**5. विसमीकरण:** जब एक ही शब्द में दो समान या लगभग समान ध्वनियाँ होती हैं, और वक्ता उच्चारण की नीरसता को तोड़ने के लिए उनमें से एक को बदल देता है।

- **उदाहरण:** संस्कृत 'नख' → कहीं-कहीं 'नह' (समान कंठ्य ध्वनि ख/ह को भिन्न बनाने का प्रयास)।

**6. घोषीकरण और अघोषीकरण :**

- **घोषीकरण:** अघोष ध्वनि का सघोष ध्वनि में बदल जाना। जैसे: 'सड़क' का 'ड़' (घोष) → 'सड़क' (हिंदी में)।
- **अघोषीकरण:** सघोष ध्वनि का अघोष में बदल जाना। (यह कम प्रचलित है)।

## ख) अर्थ परिवर्तन

अर्थ परिवर्तन से तात्पर्य शब्द की ध्वनि में बदलाव आए बिना उसके अर्थ या अर्थ-क्षेत्र में होने वाले बदलावों से है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक कारणों का सीधा परिणाम है।

**1. अर्थ विस्तार:** जब कोई शब्द पहले किसी सीमित अर्थ को व्यक्त करता था, लेकिन समय के साथ वह एक व्यापक अर्थ को व्यक्त करने लगता है।

### • उदाहरण:

- **'तैल' (संस्कृत):** मूल रूप से केवल 'तिल' (Sesame) से निकले तेल के लिए प्रयुक्त होता था।
- **'तेल' (हिंदी):** अब किसी भी प्रकार के तेल (सरसों, नारियल, पेट्रोल आदि) के लिए प्रयुक्त होता है।
- **'दाल' (संस्कृत):** मूल रूप से केवल 'दलने' (तोड़ना) की क्रिया से उत्पन्न अनाज के लिए था। अब सभी तरह की दालों के लिए।

**2. अर्थ संकोच:** जब कोई शब्द पहले व्यापक अर्थ को व्यक्त करता था, लेकिन समय के साथ वह किसी विशेष या सीमित अर्थ तक ही सीमित हो जाता है।

### • उदाहरण:

- **'मृग' (संस्कृत):** मूल रूप से 'मृग' का अर्थ किसी भी 'पशु' (जानवर) के लिए था।
- **'मृग' (हिंदी):** अब यह शब्द मुख्य रूप से केवल 'हिरण' (Deer) के लिए प्रयुक्त होता है।
- **'भोजन' (संस्कृत):** मूल रूप से 'खाद्य वस्तु' (कोई भी खाना) के लिए था। अब इसका प्रयोग सीमित अर्थ में किया जाता है, जैसे 'रात्रि-भोजन'।

**3. अर्थोत्कर्ष/अर्थदिश:** जब किसी शब्द का अर्थ समय के साथ बेहतर, अधिक प्रतिष्ठित या सकारात्मक हो जाता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

• **उदाहरण:**

- **'साहस' (संस्कृत):** प्राचीन काल में इसका अर्थ अक्सर 'दुस्साहस' या 'बुरे कामों के लिए हिम्मत' होता था।
- **'साहस' (हिंदी):** अब इसका अर्थ 'वीरता,' 'हिम्मत,' या 'शौर्य' जैसे सकारात्मक गुणों के लिए होता है।

**5. अर्थापकर्ष:** जब किसी शब्द का अर्थ समय के साथ गिरकर, निम्नस्तरीय या नकारात्मक हो जाता है। यह अक्सर शिष्टोक्ति के कारण होता है, जहाँ शिष्ट शब्द भी बाद में नकारात्मक अर्थ ले लेता है।

• **उदाहरण:**

- **'जघन्य' (संस्कृत):** प्राचीन काल में 'जघन्य' का अर्थ था 'जंघा के योग्य' (उत्कृष्ट)।
- **'जघन्य' (हिंदी):** अब इसका अर्थ 'अत्यंत बुरा,' 'घृणित' या 'निंदनीय' होता है (जैसे 'जघन्य अपराध')।

**5. लाक्षणिक अर्थ/अलंकारिक प्रयोग:** जब शब्द का प्रयोग किसी समानता या रूपक के आधार पर उसके मूल अर्थ से भिन्न अर्थ में किया जाता है, और वह नया अर्थ ही स्थायी बन जाता है।

- **उदाहरण:** 'कान' का अर्थ सुनने वाले अंग से हटकर 'ध्यान' या 'सुनवाई' के लिए प्रयुक्त होना (जैसे: "इस बात पर कान दो")।

**ग) रूप परिवर्तन**

रूप परिवर्तन से तात्पर्य भाषा की व्याकरणिक संरचना, शब्द निर्माण, उपसर्गों-प्रत्ययों और कारक व्यवस्था में होने वाले बदलावों से है। यह भी सादृश्यता और सरलीकरण की प्रवृत्ति से प्रेरित होता है।

**1. विभक्ति/परसर्गों का क्षरण:** भाषाएँ अक्सर अपने इतिहास में संयोगात्मकता से वियोगात्मकता की ओर बढ़ती हैं। संस्कृत जैसी संयोगात्मक भाषाओं में, शब्द के साथ ही विभक्ति जुड़ी होती थी (जैसे रामः, रामम्, रामेण)। हिंदी जैसी वियोगात्मक भाषाएँ

इन विभक्तियों को अलग करती हैं और उनके स्थान पर **परसर्गों** का प्रयोग करती हैं (जैसे राम ने, राम को, राम से)। यह बदलाव रूप परिवर्तन का सबसे बड़ा उदाहरण है।

- **उदाहरण:** संस्कृत 'जनेन' (मनुष्य द्वारा) → प्राकृत 'जणेण' → हिंदी 'जन से' (परसर्ग का प्रयोग)।

**2. नए प्रत्ययों और उपसर्गों का निर्माण:** समय के साथ, कुछ स्वतंत्र शब्द अपना अर्थ खोकर व्याकरणिक तत्वों (जैसे **प्रत्यय** या **उपसर्ग**) के रूप में प्रयुक्त होने लगते हैं।

- **उदाहरण:** 'कर' क्रिया (करना) का प्रयोग हिंदी में संयुक्त क्रियाएँ बनाने के लिए किया जाता है (जैसे: 'खा-कर', 'जा-कर')।
- मूल संस्कृत शब्द जैसे 'आचार्य' का 'आरी' प्रत्यय के रूप में प्रयोग होना (जैसे: 'सोना' → 'सुनार')।

**3. शब्दों का व्याकरणिक वर्ग बदलना:** जब एक शब्द एक व्याकरणिक वर्ग से निकलकर दूसरे में प्रयोग होने लगता है।

- **उदाहरण:** हिंदी में कई **संज्ञा** शब्द **क्रिया-विशेषण** के रूप में प्रयुक्त होने लगे हैं (जैसे 'सुबह' → "वह सुबह गया")।

**4. सादृश्यता द्वारा अनियमितता का सरलीकरण:** जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, सादृश्यता व्याकरणिक रूपों को नियमित करने का कार्य करती है। यह विशेष रूप से क्रिया रूपों और बहुवचन में अनियमितता को कम करता है।

- **उदाहरण:** अंग्रेजी में, पुराने समय में 'cow' का बहुवचन 'kine' होता था, जो सादृश्यता के कारण अब 'cows' हो गया है। हिंदी में भी क्रिया रूपों के जटिल भूतकालिक रूपों का सरलीकरण होता है।

**5. संयुक्त क्रियाओं का विकास:** हिंदी जैसी भाषाओं में 'होना,' 'जाना,' 'लेना' जैसी सहायक क्रियाओं के मेल से संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं (जैसे: 'मर जाना,' 'खा लेना')। ये



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

संयुक्त क्रियाएँ कार्य की पूर्णता, निरंतरता या अन्य अर्थ-छटाओं को व्यक्त करती हैं, जो पुराने व्याकरणिक ढाँचों में संभव नहीं था। यह पूर्णतः रूप परिवर्तन की दिशा है।

भाषा परिवर्तन एक जटिल, बहु-कार्यकारण और सतत प्रक्रिया है जो भाषा को प्रासंगिक और उपयोगी बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। परिवर्तन के मूल में हमेशा मानव मन की सरलीकरण की प्रवृत्ति (श्रम लाघव), तर्कसंगत बनाने की इच्छा (सादृश्यता), और सामाजिक संपर्क की आवश्यकता काम करती है।

हमने देखा कि सामाजिक कारण (जैसे भाषा संपर्क, शिक्षा, वर्ग भेद) और भौगोलिक कारण (जैसे अलगाव) भाषा के स्वरूप को बाहरी रूप से प्रभावित करते हैं, जबकि मनोवैज्ञानिक कारण (जैसे श्रम लाघव, सादृश्यता, अति-शुद्धता) भाषा के आंतरिक ढाँचे को पुनर्गठित करते हैं।

ये कारण अंततः तीन मुख्य दिशाओं में अपना प्रभाव दिखाते हैं:

- **ध्वनि परिवर्तन** उच्चारण को सरल बनाता है।
- **अर्थ परिवर्तन** सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप शब्दावली को लचीला बनाता है।
- **रूप परिवर्तन** व्याकरणिक व्यवस्था को सुसंगत और सरल बनाता है।

संक्षेप में, भाषा एक जीवित स्मारक है जो अपने बोलने वालों के इतिहास, भूगोल और मनोविज्ञान को अपने भीतर समाहित करती है। परिवर्तन ही भाषा का स्थायी नियम है, और यही इसे भविष्य के लिए तैयार करता है।

---

## इकाई 1.4: भाषा विज्ञान - परिभाषा एवं स्वरूप

---

---

### 1.4.1 भाषा विज्ञान की परिभाषा: अर्थ और परिभाषाएँ

---

भाषाविज्ञान मानविकी और सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत सबसे आकर्षक और व्यवस्थित विषयों में से एक है, जो मानव भाषा की समस्त जटिलता और विविधता के वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए समर्पित है। मूलतः, भाषाविज्ञान, संचार की एक संरचित प्रणाली के रूप में भाषा का विद्वत्तापूर्ण अध्ययन है, जिसमें सभी मानव भाषाओं को नियंत्रित करने वाले सार्वभौमिक सिद्धांत और प्रत्येक भाषा को विशिष्ट बनाने वाली विशिष्ट विशेषताएँ, दोनों शामिल हैं। "भाषाविज्ञान" शब्द स्वयं लैटिन शब्द "लिंग्वा" से बना है, जिसका अर्थ है जीभ या भाषा, और प्रत्यय के साथ मिलकर, जो अध्ययन या विज्ञान के किसी क्षेत्र को दर्शाता है। यह व्युत्पत्ति संबंधी आधार इस विषय के भाषा पर एक जैविक क्षमता और एक सांस्कृतिक घटना, दोनों के रूप में ध्यान केंद्रित करने को रेखांकित करता है जो मनुष्य को पृथ्वी पर अन्य सभी प्रजातियों से अलग करती है।

विभिन्न विद्वानों और भाषाविज्ञान सिद्धांतकारों ने ऐसी परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं जो इस बहुमुखी अनुशासन के विभिन्न आयामों को दर्शाती हैं। फर्डिनेंड डी सौसुरे, जिन्हें अक्सर आधुनिक भाषाविज्ञान का जनक माना जाता है, ने भाषाविज्ञान को एक ऐसे विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जो भाषा का अध्ययन संकेतों की एक प्रणाली के रूप में करता है, और भाषाई तत्वों के बीच संरचनात्मक संबंधों पर ज़ोर देता है, न कि केवल उनके ऐतिहासिक विकास पर। उनके प्रभावशाली कार्य ने भाषाविज्ञान को एक व्यवस्थित और समकालिक अध्ययन के रूप में स्थापित किया, जो किसी विशेष समय बिंदु पर मौजूद भाषा पर केंद्रित था। नोम चोम्स्की, जिनके क्रांतिकारी सिद्धांतों ने बीसवीं सदी में इस क्षेत्र को बदल दिया, ने भाषाविज्ञान को मानव भाषा क्षमता के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया, और इसे उन सहज संज्ञानात्मक संरचनाओं की जाँच के रूप में देखा जो मनुष्यों को भाषा सीखने और उसका उपयोग करने में सक्षम बनाती हैं। चोम्स्की के दृष्टिकोण ने भाषाई क्षमता के जैविक और मनोवैज्ञानिक आधारों की ओर ध्यान केंद्रित किया, और भाषा को मानव मन की एक खिड़की के रूप में माना।



अन्य परिभाषाएँ भाषाविज्ञान संबंधी अन्वेषण के विभिन्न पहलुओं पर ज़ोर देती हैं। एडवर्ड सैपिर ने भाषाविज्ञान को इस अध्ययन के रूप में वर्णित किया है कि मनुष्य किस प्रकार स्पष्ट वाणी और लिखित प्रतीकों के माध्यम से संवाद करते हैं, और भाषा के अभिव्यंजक और संप्रेषणात्मक कार्यों पर प्रकाश डालते हैं। लियोनार्ड ब्लूमफ़ील्ड ने भाषाविज्ञान को एक व्यवहारवादी दृष्टिकोण से देखा और इसे प्रेक्षणीय वाणी व्यवहार और भाषाई रूपों के वितरण के संदर्भ में भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया। अधिक समकालीन परिभाषाएँ भाषाविज्ञान को एक अंतःविषय क्षेत्र के रूप में मान्यता देती हैं जो संज्ञानात्मक विज्ञान, नृविज्ञान, मनोविज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान और तंत्रिका विज्ञान का उपयोग यह समझने के लिए करता है कि भाषा कैसे काम करती है, इसे कैसे अर्जित किया जाता है, यह समय के साथ कैसे बदलती है, और मानव मस्तिष्क में इसका प्रसंस्करण कैसे होता है।

भाषाविज्ञान अध्ययन का दायरा भाषाओं के मात्र वर्णन से कहीं आगे तक विस्तृत है। भाषाविज्ञान भाषा की सार्वभौमिकताओं, सभी मानव भाषाओं में समान विशेषताओं, के साथ-साथ उन मानदंडों से संबंधित मूलभूत प्रश्नों की पड़ताल करता है जिनके आधार पर भाषाएँ बदलती हैं। यह इस बात का परीक्षण करता है कि बच्चे अपनी पहली भाषा को उल्लेखनीय गति और एकरूपता के साथ कैसे सीखते हैं, भले ही उन्हें प्राप्त होने वाली प्रेरणाओं की कमी हो। भाषाविद् इस बात का पता लगाते हैं कि भाषाएँ पीढ़ियों के साथ कैसे बदलती हैं, वे विचार और संस्कृति को कैसे प्रभावित करती हैं, वे मन और मस्तिष्क में कैसे संरचित होती हैं, और उन्हें कम्प्यूटेशनल रूप से कैसे प्रतिरूपित किया जा सकता है। यह अनुशासन सैद्धांतिक भाषाविज्ञान, जो भाषा की संरचना और कार्य को समझने के लिए मॉडल और ढाँचे विकसित करता है, और अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, जो भाषा शिक्षण, अनुवाद, वाक् चिकित्सा और भाषा नीति जैसी व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करता है, दोनों को समाहित करता है।

इसके अलावा, भाषाविज्ञान अपनी भाषा का अध्ययन उसकी अपनी शर्तों पर करने की अपनी प्रतिबद्धता के कारण खुद को अलग पहचान देता है, न कि यह निर्धारित करने के कि भाषा का प्रयोग कैसे किया जाना चाहिए। निर्देशात्मक अभिविन्यास के बजाय वर्णनात्मक, भाषाविज्ञान विभिन्न समुदायों में भाषा के प्रयोग के वास्तविक स्वरूपों का दस्तावेजीकरण और विश्लेषण करने का प्रयास करता है, यह स्वीकार करते हुए कि

सभी भाषाएँ और बोलियाँ समान रूप से जटिल और नियम-संचालित प्रणालियाँ हैं। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण भाषा को एक प्राकृतिक घटना के रूप में देखता है जिसका अध्ययन आवश्यक है, ठीक उसी तरह जैसे जीवविज्ञानी जीवित जीवों का अध्ययन करते हैं या भौतिक विज्ञानी पदार्थ और ऊर्जा का अध्ययन करते हैं। यह क्षेत्र स्वीकार करता है कि भाषा कई स्तरों पर मौजूद होती है-भाषण का निर्माण करने वाली व्यक्तिगत ध्वनियों से लेकर बातचीत में व्यक्त जटिल सामाजिक अर्थों तक-और भाषा को समझने के लिए इन विभिन्न स्तरों और उनकी अंतःक्रियाओं का परीक्षण करना आवश्यक है।

#### 1.4.2 भाषाविज्ञान की प्रकृति: वैज्ञानिक अध्ययन विधियाँ

भाषाविज्ञान की प्रकृति मूलतः वैज्ञानिक है, जिसकी विशेषता व्यवस्थित अवलोकन, अनुभवजन्य अन्वेषण, परिकल्पना निर्माण और भाषा संबंधी सैद्धांतिक दावों का कठोर परीक्षण है। अन्य विज्ञानों की तरह, भाषाविज्ञान अपने अध्ययन के विषय के बारे में ज्ञान निर्माण हेतु वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग करता है, ऐसे सिद्धांत विकसित करता है जो प्रेक्षित भाषाई परिघटनाओं की व्याख्या कर सकें और नए आँकड़ों में पैटर्न की भविष्यवाणी कर सकें। यह वैज्ञानिक विशेषता भाषाविज्ञान को भाषा के बारे में आकस्मिक अवलोकन या निर्देशात्मक व्याकरण शिक्षण से अलग करती है, और इसे पद्धतिगत कठोरता और सैद्धांतिक परिष्कार वाले अनुशासन के रूप में स्थापित करती है। भाषाविज्ञान की वैज्ञानिक प्रकृति कई प्रमुख आयामों में प्रकट होती है: अनुभवजन्य साक्ष्य के प्रति इसकी प्रतिबद्धता, औपचारिक सिद्धांतों और मॉडलों का विकास, मिथ्याकरणीयता और परीक्षणीयता पर इसका जोर, और व्यक्तिगत भाषाओं से परे सामान्यीकरण की इसकी खोज।

अनुभवजन्य अन्वेषण भाषा विज्ञान का आधार है। भाषाविद् कई स्रोतों से आँकड़े एकत्र करते हैं, जिनमें मूल वक्ता के अंतर्ज्ञान, स्वाभाविक रूप से घटित होने वाली वाणी और लिखित पाठ, नियंत्रित प्रयोग, कॉर्पस विश्लेषण, ध्वनिक माप, मस्तिष्क इमेजिंग अध्ययन और भाषा समुदायों के साथ व्यवस्थित क्षेत्रीय कार्य शामिल हैं। यह अनुभवजन्य आधार यह सुनिश्चित करता है कि भाषाई सिद्धांत केवल अनुमान या अंतर्ज्ञान के बजाय प्रत्यक्ष वास्तविकता पर आधारित रहें। आँकड़ा-संचालित दृष्टिकोण के लिए भाषाविदों को भाषाई घटनाओं का सावधानीपूर्वक दस्तावेजीकरण करना



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

आवश्यक है, अक्सर वाणी ध्वनियों को सटीकता से दर्शाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला जैसी विशिष्ट प्रतिलेखन प्रणालियों का उपयोग करते हैं, या बड़े आँकड़ों में महत्वपूर्ण पैटर्न की पहचान करने के लिए सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करते हैं। भाषाविज्ञान की अनुभवजन्य प्रकृति का यह भी अर्थ है कि सिद्धांतों का लगातार नए आँकड़ों के आधार पर परीक्षण किया जाना चाहिए, विरोधाभास उभरने पर उन्हें संशोधित किया जाना चाहिए, और दुनिया की लगभग सात हज़ार भाषाओं में पाई जाने वाली भाषाई विविधता की पूरी श्रृंखला को ध्यान में रखते हुए उन्हें परिष्कृत किया जाना चाहिए।

औपचारिक मॉडलों और सैद्धांतिक ढाँचों का विकास भाषाविज्ञान की वैज्ञानिक प्रकृति का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। भाषाविद् भाषाई ज्ञान और प्रक्रियाओं के स्पष्ट, प्रायः गणितीय या तार्किक, निरूपण निर्मित करते हैं। उदाहरण के लिए, जनरेटिव व्याकरण, औपचारिक नियमों और सिद्धांतों का उपयोग करके यह मॉडल बनाता है कि कैसे सीमित भाषाई संसाधन संभावित वाक्यों की एक अनंत श्रृंखला उत्पन्न करते हैं। इष्टतमता सिद्धांत, ध्वन्यात्मक प्रतिमानों की व्याख्या करने के लिए प्रतिबंधात्मक श्रेणीकरण का उपयोग करता है, जबकि निर्माण व्याकरण रूप-अर्थ युग्मों की विस्तृत सूची विकसित करता है। ये औपचारिक दृष्टिकोण भाषाओं में कौन सी संरचनाएँ होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए, इस बारे में सटीक पूर्वानुमान लगाने में सक्षम बनाते हैं, जिससे विभिन्न सैद्धांतिक ढाँचों में अनुभवजन्य परीक्षण और तुलना की सुविधा मिलती है। भाषाई ज्ञान का औपचारिकीकरण, गणनात्मक कार्यान्वयन की भी अनुमति देता है, जिससे भाषाविद् यह परीक्षण कर सकते हैं कि क्या उनके सिद्धांत वास्तविक भाषा आँकड़ों को समझने के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्ट और पूर्ण हैं।

भाषाविज्ञान मिथ्याकरणीयता के सिद्धांत को अपनाता है, जो दार्शनिक कार्ल पॉपर द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक अन्वेषण की एक विशिष्ट विशेषता है। भाषाई परिकल्पनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि उन्हें अनुभवजन्य साक्ष्यों द्वारा संभावित रूप से अस्वीकृत किया जा सके। उदाहरण के लिए, यदि कोई भाषाविद् यह प्रस्तावित करता है कि सभी भाषाओं की एक विशिष्ट व्याकरणिक श्रेणी होती है या वे एक विशिष्ट शब्द क्रम प्रतिबंध का पालन करती हैं, तो इस दावे की जाँच विभिन्न भाषाओं का परीक्षण करके की जा सकती है। एक भी प्रति-उदाहरण की खोज के

लिए परिकल्पना में संशोधन की आवश्यकता होगी। मिथ्याकरणीयता के प्रति यह प्रतिबद्धता भाषाई सिद्धांतों को अप्रमाणित सिद्धांत बनने से रोकती है और विस्तारित अनुभवजन्य ज्ञान के आधार पर निरंतर परिशोधन को प्रोत्साहित करती है। भाषाविज्ञान के इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ प्रभावशाली सिद्धांतों को विरोधाभासी साक्ष्यों के सामने आने पर संशोधित या त्याग दिया गया, जो इस क्षेत्र के वैज्ञानिक सिद्धांतों के प्रति निष्ठा को दर्शाता है।

व्यवस्थित कार्यप्रणाली भाषाविज्ञान संबंधी अनुसंधान को उसके विभिन्न उपक्षेत्रों में विशिष्ट बनाती है। ध्वनिविज्ञानी वाक् ध्वनियों के ध्वनिक गुणों को मापने के लिए परिष्कृत उपकरणों का उपयोग करते हैं, आवृत्ति, आयाम और अवधि जैसे मापदंडों को मिलीसेकंड की सटीकता के साथ ट्रैक करते हैं। वाक्य रचनाविज्ञानी शब्द क्रम परिवर्तन, सर्वनाम बंधन, प्रश्न निर्माण और अन्य परिघटनाओं के प्रमाणों का उपयोग करके वाक्यों की पदानुक्रमित संरचना निर्धारित करने के लिए घटक परीक्षणों और निदानों का उपयोग करते हैं। मनोभाषाविज्ञानी सावधानीपूर्वक नियंत्रित प्रयोगों की रचना करते हैं जो प्रतिक्रिया समय, नेत्र गति या मस्तिष्क गतिविधि को मापते हैं ताकि यह पता लगाया जा सके कि भाषा वास्तविक समय में कैसे संसाधित होती है। समाजभाषाविज्ञानी सामाजिक समूहों में भाषा विविधता के पैटर्न का दस्तावेजीकरण करने के लिए व्यवस्थित सर्वेक्षण और साक्षात्कार आयोजित करते हैं, भाषाई विशेषताओं और सामाजिक कारकों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सहसंबंधों की पहचान करने के लिए मात्रात्मक विधियों का उपयोग करते हैं। अल्प-प्रलेखित भाषाओं के साथ काम करने वाले क्षेत्र भाषाविद् उद्घोषणा, रिकॉर्डिंग और विश्लेषण के लिए कठोर प्रोटोकॉल का पालन करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके विवरण विश्वसनीय और अनुकरणीय हैं।

सार्वभौमिकों और प्रतीकात्मक सामान्यीकरणों की खोज, भाषाविज्ञान की उस आकांक्षा को दर्शाती है कि वह केवल व्यक्तिगत भाषाओं को सूचीबद्ध करने के बजाय, भाषा का विज्ञान विकसित करे। भाषाविद् उन सिद्धांतों की पहचान करने का प्रयास करते हैं जो संभावित मानव भाषाओं को सीमित करते हैं, और सभी या अधिकांश भाषाओं में पाई जाने वाली विशेषताओं को उनसे अलग करते हैं जो दुर्लभ या असंभव हैं। इस तुलनात्मक दृष्टिकोण ने उल्लेखनीय पैटर्न उजागर किए हैं, जैसे कि



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

निहितार्थात्मक सार्वभौमिक जो कुछ विशेषताओं के आधार पर उनकी उपस्थिति की भविष्यवाणी करते हैं, या सांख्यिकीय प्रवृत्तियाँ कि भाषाएँ अपनी ध्वनि प्रणालियों और व्याकरणिक संरचनाओं को कैसे व्यवस्थित करती हैं। भाषाई सार्वभौमिकों की खोज इस दृष्टिकोण का समर्थन करती है कि मानव भाषा क्षमता जन्मजात संज्ञानात्मक बाधाओं द्वारा आकार लेती है, जबकि प्रतीकात्मक भिन्नता मानव भाषाई प्रणालियों में निहित लचीलेपन और रचनात्मकता को उजागर करती है। सार्वभौमिक सिद्धांतों और पैरामीट्रिक भिन्नता के बीच यह संतुलन भाषाई सिद्धांत का एक केंद्रीय केंद्र बिंदु है।

आधुनिक भाषाविज्ञान की अंतःविषय प्रकृति, संबंधित क्षेत्रों से अंतर्दृष्टि और विधियों को समाहित करके, इसके वैज्ञानिक स्वरूप को और निखारती है। तंत्रिकाभाषाविज्ञान, भाषा प्रसंस्करण के तंत्रिका आधारों का अध्ययन करने के लिए तंत्रिका विज्ञान की मस्तिष्क इमेजिंग तकनीकों का उपयोग करता है। कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान, भाषा अधिग्रहण और उपयोग के मॉडल के लिए एल्गोरिदम और मशीन लर्निंग तकनीकों का उपयोग करता है। मनोभाषाविज्ञान, भाषा बोध और उत्पादन का अध्ययन करने के लिए प्रायोगिक मनोविज्ञान का सहारा लेता है। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, भाषा परिवारों के पुनर्निर्माण और भाषाई परिवर्तनों का पता लगाने के लिए विकासवादी जीव विज्ञान के समान विधियों का उपयोग करता है। विविध पद्धतियों का यह एकीकरण भाषाविज्ञान अनुसंधान को समृद्ध बनाता है और उन प्रश्नों की जाँच को सक्षम बनाता है जिनका कोई भी एक दृष्टिकोण पर्याप्त रूप से समाधान नहीं कर सकता।

## इकाई 1.5: भाषा विज्ञान के अंग और अध्ययन पद्धतियाँ

### 1.5.1 भाषाविज्ञान के घटक: ध्वनिविज्ञान, आकृति विज्ञान, वाक्यविन्यास, अर्थविज्ञान

एक व्यापक अनुशासन के रूप में भाषाविज्ञान में विश्लेषण के कई मूलभूत घटक या स्तर शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक भाषा संरचना और अर्थ के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित है। ये घटक एक परस्पर संबद्ध प्रणाली का निर्माण करते हैं, जिसमें प्रत्येक स्तर मानव भाषा की समृद्ध जटिलता का निर्माण करने के लिए एक-दूसरे पर निर्माण और अंतःक्रिया करता है। चार प्राथमिक घटक, ध्वनिविज्ञान, आकारिकी, वाक्यविन्यास और अर्थविज्ञान, भाषाई संगठन के विशिष्ट किन्तु परस्पर संबंधित क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मोटे तौर पर ध्वनि की सबसे छोटी अर्थपूर्ण इकाइयों से लेकर वाक्यों और संवाद में जटिल अर्थों के निर्माण तक बढ़ते हैं। इन घटकों और उनकी अंतःक्रियाओं को समझना यह समझने के लिए आवश्यक है कि भाषा एक संचार प्रणाली और संज्ञानात्मक क्षमता के रूप में कैसे कार्य करती है।

ध्वनिविज्ञान भाषा में ध्वनि प्रणालियों का अध्ययन करता है, यह जाँच करता है कि विशिष्ट भाषाओं में और सामान्यतः सभी भाषाओं में वाक् ध्वनियाँ कैसे व्यवस्थित और प्रतिरूपित होती हैं। ध्वनिविज्ञान के विपरीत, जो वाक् ध्वनियों के भौतिक गुणों और उच्चारण तंत्रों का परीक्षण करता है, ध्वनिविज्ञान इस बात पर केंद्रित है कि भाषाई प्रणालियों में ध्वनियाँ कैसे कार्य करती हैं, यह अध्ययन करते हुए कि कौन से ध्वनि अंतर अर्थ भेद उत्पन्न करते हैं और कौन से रूपांतर पूर्वानुमेय या गैर-विपरीत हैं। ध्वनिविज्ञानी स्वनिमों का विश्लेषण करते हैं, जो अमूर्त ध्वनि इकाइयाँ हैं जो किसी भाषा में शब्दों को अलग करती हैं, और उन ध्वन्यात्मक नियमों की जाँच करते हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि विभिन्न संदर्भों में ध्वनियाँ कैसे संयोजित और परिवर्तित होती हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी बोलने वाले पहचानते हैं कि "पैट" और "बैट" अलग-अलग शब्द हैं क्योंकि /p/ और /b/ अंग्रेजी में अलग-अलग स्वनिम हैं, जबकि "पिन" में महाप्राण [p<sup>h</sup>] और "स्पिन" में महाप्राण [p] एक ही स्वनिम के विभिन्न रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ध्वन्यात्मक अध्ययन में शब्दांश संरचना, तनाव पैटर्न, स्वर प्रणालियाँ, स्वर-शैली की रूपरेखा और आत्मसातीकरण, विलोपन और उच्चारण जैसी ध्वन्यात्मक प्रक्रियाएँ शामिल हैं। विभिन्न भाषाएँ बहुत भिन्न ध्वन्यात्मक प्रणालियाँ



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

प्रदर्शित करती हैं, कुछ भाषाएँ क्लिक का प्रयोग ध्वनि के रूप में करती हैं, अन्य शब्द अर्थों में अंतर करने के लिए शाब्दिक स्वर का प्रयोग करती हैं, और फिर भी कुछ में जटिल व्यंजन समूह या स्वर सामंजस्य प्रणालियाँ होती हैं। ध्वन्यात्मक सिद्धांत इन प्रतिमानों को उन सिद्धांतों और प्रतिबंधों के माध्यम से समझाने का प्रयास करता है जो संभावित ध्वनि प्रणालियों को नियंत्रित करते हैं। इस क्षेत्र ने जनरेटिव ध्वन्यात्मकता में नियम-आधारित दृष्टिकोणों से लेकर इष्टतमता सिद्धांत जैसे प्रतिबंध-आधारित ढाँचों तक, भाषा-विशिष्ट प्रतिमानों और पार-भाषाई सामान्यीकरणों, दोनों को ध्यान में रखते हुए, परिष्कृत मॉडल विकसित किए हैं। ध्वन्यात्मक ज्ञान अधिकांशतः अचेतन होता है; देशी वक्ता स्पष्ट जागरूकता के बिना ही जटिल ध्वन्यात्मक नियमों को सहजता से लागू कर देते हैं, जो दर्शाता है कि भाषाई दक्षता का यह घटक सचेत विचार के स्तर से नीचे कार्य करता है।

आकृति विज्ञान शब्दों की आंतरिक संरचना और उनके रूपिम नामक छोटी अर्थपूर्ण इकाइयों से बनने के तरीके की जाँच करता है। रूपिम उस न्यूनतम इकाई का प्रतिनिधित्व करता है जो अर्थ या व्याकरणिक कार्य वहन करती है, और शब्दों में एक रूपिम (जैसे "बिल्ली") या कई रूपिम (जैसे "बिल्लियाँ", जिसमें मूल "बिल्ली" बहुवचन प्रत्यय "-s" के साथ संयुक्त है, या "अमित्रता", जिसमें चार रूपिम हैं: "अन-", "मित्र", "-ली", और "-नेस") शामिल हो सकते हैं। आकृति विज्ञानी मुक्त रूपिमों के बीच अंतर करते हैं जो शब्दों के रूप में अकेले खड़े हो सकते हैं और बद्ध रूपिम जिन्हें अन्य तत्वों से जुड़ना पड़ता है, साथ ही उन विषयवस्तु रूपिमों के बीच भी अंतर करते हैं जो शाब्दिक अर्थ रखते हैं और व्याकरणिक रूपिम जो संबंधों या श्रेणियों को इंगित करते हैं। यह क्षेत्र शब्द निर्माण प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है, जिसमें व्युत्पत्ति, जो मूल में प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाती है (जैसे "टीच" से "टीचर" बनाना), समास, जो स्वतंत्र शब्दों को जोड़ता है (जैसे "ब्लैकबोर्ड"), विभक्ति, जो काल, संख्या या कारक जैसी व्याकरणिक श्रेणियों को व्यक्त करने के लिए शब्दों को संशोधित करती है, और पुनरावृत्ति, रूपांतरण और सम्मिश्रण जैसी कई अन्य प्रक्रियाएँ शामिल हैं। भाषाएँ अपनी रूपात्मक जटिलता में नाटकीय रूप से भिन्न होती हैं: मंदारिन चीनी जैसी पृथक भाषाएँ प्रति शब्द अपेक्षाकृत कम रूपिमों का उपयोग करती हैं और शब्द क्रम और अलग-अलग कार्य शब्दों के माध्यम से व्याकरणिक संबंधों को व्यक्त करती हैं,

जबकि इनुक्तिटुट जैसी बहुसंश्लेषी भाषाएँ कई रूपियों को एकल शब्दों में समेट सकती हैं जो वह व्यक्त करते हैं जिसे व्यक्त करने के लिए अंग्रेजी को पूरे वाक्यों की आवश्यकता होगी। रूपात्मक विश्लेषण भाषाओं द्वारा शाब्दिक जानकारी और व्याकरणिक चिह्नों को व्यवस्थित करने के तरीके में व्यवस्थित पैटर्न प्रकट करता है, यह दर्शाता है कि शब्द निर्माण रूपों के मनमाने संचय के बजाय नियमित सिद्धांतों का पालन करता है। रूपात्मकता को समझना यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि भाषाएँ अपनी शब्दावली का विस्तार कैसे करती हैं, बच्चे शब्द संरचना कैसे सीखते हैं, और भाषा प्रसंस्करण के दौरान व्याकरणिक जानकारी कैसे एन्कोड और डिक्कोड होती है।

वाक्यविन्यास उन सिद्धांतों और नियमों की जाँच करता है जो शब्दों के संयोजन से वाक्यांश और वाक्य बनाने को नियंत्रित करते हैं, और व्याकरणिक व्यवस्थाओं के अंतर्निहित पदानुक्रमिक संरचनाओं की जाँच करता है। वाक्यविन्यास विश्लेषण से पता चलता है कि वाक्यों में शब्दों के सरल रैखिक अनुक्रमों से परे एक आंतरिक संगठन होता है; घटक मिलकर ऐसी इकाइयों का निर्माण करते हैं जो विभिन्न व्याकरणिक संक्रियाओं के लिए सुसंगत संस्थाओं के रूप में कार्य करती हैं। उदाहरण के लिए, "जिज्ञासु बालक ने अनेक प्रश्न पूछे" वाक्य में, वाक्यविन्यास विश्लेषण "जिज्ञासु बालक" को एक संज्ञा पदबंध घटक के रूप में और "कई प्रश्न पूछे" को एक क्रिया पदबंध के रूप में पहचानता है, जिसमें प्रत्येक पदबंध की अपनी आंतरिक संरचना होती है। वाक्यविन्यास सिद्धांत वाक्य संरचना के बारे में मूलभूत प्रश्नों को संबोधित करता है: हम "उसने क्या खरीदा?" क्यों कह सकते हैं, लेकिन "उसने पुस्तक क्या खरीदी और?" नहीं कह सकते। वक्ता विभिन्न वाक्य रूपों के बीच संबंधों को, जैसे सक्रिय और निष्क्रिय निर्माणों के बीच संबंध, क्यों पहचानते हैं? भाषाएँ अपने शब्द क्रम पैटर्न में कैसे भिन्न होती हैं, और कौन सी बाधाएँ संभावित विविधताओं को सीमित करती हैं? वाक्य रचना के उत्पादक दृष्टिकोण, जो चॉम्स्की के परिवर्तनकारी व्याकरण द्वारा आरंभ किए गए और बाद में विभिन्न ढाँचों जैसे सरकार और बंधन सिद्धांत, न्यूनतम कार्यक्रम, आदि के माध्यम से विकसित हुए, प्रस्तावित करते हैं कि वाक्य रचना कौशल में अमूर्त सिद्धांतों और मापदंडों का ज्ञान शामिल है। अन्य ढाँचे, जैसे शाब्दिक कार्यात्मक व्याकरण, शीर्ष-संचालित वाक्यांश संरचना व्याकरण और निर्माण



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

व्याकरण, वाक्य रचना संगठन पर वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। वाक्य रचना अनुसंधान ने कई सार्वभौमिक और लगभग सार्वभौमिक सिद्धांतों को उजागर किया है, जैसे संरचना निर्भरता (यह सिद्धांत कि व्याकरणिक संक्रियाएँ रैखिक स्थिति के बजाय पदानुक्रमित संरचना को संदर्भित करती हैं) और गति संक्रियाओं पर प्रतिबंध। अंतर-भाषाई वाक्य रचना अनुसंधान से पता चलता है कि हालाँकि भाषाएँ सतही शब्द क्रम और रूपात्मक बोध में काफी भिन्न होती हैं, फिर भी वे अंतर्निहित संगठनात्मक सिद्धांतों को साझा करती हैं जो मानव संज्ञान के सार्वभौमिक पहलुओं को दर्शाते हैं। वाक्य रचना ज्ञान वक्ताओं को ऐसे नए वाक्यों का निर्माण और समझने में सक्षम बनाता है जिनका उन्होंने पहले कभी सामना नहीं किया है, जो मानव भाषाई क्षमता की रचनात्मक और उत्पादक प्रकृति को प्रदर्शित करता है।

शब्दार्थ विज्ञान भाषाई अर्थों की पड़ताल करता है, यह जाँच करता है कि शब्द, वाक्यांश और वाक्य किस प्रकार सूचना संप्रेषित करते हैं और वक्ता भाषाई अभिव्यक्तियों को कैसे समझते और व्याख्या करते हैं। शब्दार्थ विश्लेषण कई स्तरों पर कार्य करता है: शाब्दिक शब्दार्थ विज्ञान शब्द अर्थों की जाँच करता है, जिसमें पर्यायवाची, विलोम, सम्मोहन और बहुअर्थता जैसे अर्थ संबंध शामिल हैं; संरचनागत शब्दार्थ विज्ञान अध्ययन करता है कि कैसे छोटी इकाइयों के अर्थ मिलकर बड़ी अभिव्यक्तियों के अर्थ उत्पन्न करते हैं, संरचनागत सिद्धांत का पालन करते हुए कि एक जटिल अभिव्यक्ति का अर्थ उसके भागों के अर्थों और उनके संयोजन के तरीके से व्यवस्थित रूप से व्युत्पन्न होता है; और वाक्यगत शब्दार्थ विज्ञान सत्य स्थितियों, तार्किक संबंधों और प्रस्तावात्मक विषयवस्तु का विश्लेषण करता है। शब्दार्थशास्त्री इस बात की जाँच करते हैं कि भाषा दुनिया में संस्थाओं को कैसे संदर्भित करती है, यह संबंधों और घटनाओं को कैसे व्यक्त करती है, और कैसे अर्थ विभिन्न संदर्भों में स्थिर रहता है जबकि व्यावहारिक लचीलेपन की भी अनुमति देता है। औपचारिक शब्दार्थ दृष्टिकोण अर्थों और उनके संबंधों को सटीक रूप से दर्शाने के लिए तार्किक संकेतन और समुच्चय सिद्धांत का उपयोग करते हैं, ऐसे मॉडल विकसित करते हैं जो अर्थगत निहितार्थों, विरोधाभासों और पूर्वधारणाओं की भविष्यवाणी कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह समझना कि "जॉन ने एक गेंडा देखा" का तात्पर्य "जॉन ने एक जानवर देखा" से है, लेकिन "जॉन ने कुछ नहीं देखा" के विरोधाभासी है, इन

अभिव्यक्तियों में निहित तार्किक संबंधों के अर्थगत विश्लेषण की आवश्यकता है। अर्थगत अनुसंधान अस्पष्टता (जहाँ अभिव्यक्तियों के अनेक अर्थ होते हैं), अस्पष्टता (जहाँ प्रयोज्यता की सीमाएँ स्पष्ट नहीं होतीं), मुहावरेदारता (जहाँ पारंपरिक अर्थ रचनात्मक व्याख्या से अलग हो जाते हैं), और रूपक (जहाँ अर्थ व्यवस्थित रूप से विभिन्न क्षेत्रों में विस्तृत होते हैं) जैसी गूढ़ घटनाओं को संबोधित करता है। अर्थगत और व्यावहारिकता के बीच का संबंध-संदर्भ में अर्थ का अध्ययन, जिसमें निहितार्थ, वाक् क्रियाएँ और संवादात्मक अनुमान शामिल हैं-एक महत्वपूर्ण अंतरफलक का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि वक्ता अक्सर अपने कथनों की शाब्दिक अर्थगत सामग्री से कहीं अधिक संप्रेषित करते हैं। अर्थगत दक्षता उस महत्वपूर्ण ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है जो भाषा उपयोगकर्ताओं को सटीक अर्थ व्यक्त करने, सूक्ष्म वैचारिक अंतरों को पहचानने और प्रस्तावों के बीच तार्किक संबंधों को पहचानने में सक्षम बनाता है।

### **1.5.2 प्रमुख अध्ययन विधियाँ: ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक विधियाँ**

भाषा के अध्ययन में विभिन्न पद्धतिगत दृष्टिकोणों का प्रयोग किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक भाषाई परिघटनाओं पर विशिष्ट दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। तीन प्रमुख अध्ययन विधियाँ, ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और तुलनात्मक, ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और तुलनात्मक, मूलभूत दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिन्होंने सदियों से भाषाई अनुसंधान को आकार दिया है और समकालीन अन्वेषण के लिए आवश्यक ढाँचे प्रदान करती रही हैं। ये विधियाँ अपने समय-क्षेत्र, विश्लेषणात्मक लक्ष्यों और साक्ष्य-आधारित आधारों में भिन्न हैं, फिर भी मानव भाषा की व्यापक समझ के निर्माण में एक-दूसरे के पूरक हैं। ऐतिहासिक विधि समय के साथ भाषा में हुए परिवर्तनों की जाँच करती है, वर्णनात्मक विधि किसी विशेष समय पर भाषा की संरचना का विश्लेषण करती है, और तुलनात्मक विधि भाषाओं के बीच समानताओं और अंतरों की जाँच करती है। ये सभी दृष्टिकोण मिलकर भाषाविदों को इन मूलभूत प्रश्नों का समाधान करने में सक्षम बनाते हैं कि भाषाएँ कैसे विकसित होती हैं, वे कैसे संगठित होती हैं, और कौन से सार्वभौमिक सिद्धांत उनकी संरचना और विविधता को नियंत्रित करते हैं।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

भाषाविज्ञान में ऐतिहासिक पद्धति, जिसे डायक्रॉनिक भाषाविज्ञान भी कहा जाता है, यह जाँच करती है कि समय के साथ भाषाएँ कैसे बदलती हैं, और पीढ़ियों के दौरान ध्वनियों, शब्दों, व्याकरणिक संरचनाओं और अर्थों के विकास का पता लगाती है। यह दृष्टिकोण उन्नीसवीं शताब्दी में तुलनात्मक भाषाविज्ञान के उदय और इंडो-यूरोपीय भाषाओं के बीच व्यवस्थित ध्वनि-संगति की खोज के साथ एक प्रमुख प्रतिमान के रूप में उभरा, जिससे प्रोटो-इंडो-यूरोपीय भाषा का पुनर्निर्माण और भाषा परिवारों की स्थापना हुई। ऐतिहासिक भाषाविद् विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों का परीक्षण करते हैं: अंग्रेजी में महान स्वर परिवर्तन जैसे ध्वन्यात्मक परिवर्तन, जिसने चौदहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों के बीच दीर्घ स्वरों के उच्चारण को बदल दिया; रूपात्मक परिवर्तन जैसे अंग्रेजी में कारक अंत का लोप या लैटिन से रोमांस भाषाओं का विकास; वाक्य-रचना संबंधी परिवर्तन जिनमें शब्द क्रम में परिवर्तन या विषय-वस्तु वाले शब्दों का व्याकरणिक रूप से कार्यात्मक शब्दों में परिवर्तन शामिल हैं; और अर्थ संबंधी परिवर्तन जहाँ शब्द अर्थ विस्तृत, संकुचित, स्थानांतरित या रूपकात्मक विस्तार से गुजरते हैं। इस पद्धति में कई तकनीकों और सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है। तुलनात्मक विधि, पैतृक भाषाओं की विशेषताओं के पुनर्निर्माण के लिए संबंधित भाषाओं के सजातीय शब्दों में व्यवस्थित ध्वनि संगति का उपयोग करती है; उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी के "father", जर्मन के "Vater", लैटिन के "pater", ग्रीक के "patēr" और संस्कृत के "pitṛ" की तुलना करके नियमित ध्वनि संगति का पता चलता है जो एक प्रोटो-इंडो-यूरोपीय रूप की ओर इशारा करती है। आंतरिक पुनर्निर्माण, प्रारंभिक चरणों का अनुमान लगाने के लिए एक ही भाषा के भीतर के पैटर्न का विश्लेषण करता है, और उन अनियमितताओं और परिवर्तनों की पहचान करता है जो ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का संकेत देते हैं। ऐतिहासिक भाषाविद्, उपलब्ध होने पर, लिखित अभिलेखों का उपयोग करते हैं, प्राचीन ग्रंथों, शिलालेखों और दस्तावेजों की जाँच करके प्रमाणित परिवर्तनों का पता लगाते हैं, हालाँकि वे लिखित दस्तावेज़ीकरण से परे प्रागैतिहासिक चरणों का भी पुनर्निर्माण करते हैं। इस विधि ने भाषा परिवर्तन में सार्वभौमिक प्रवृत्तियों को उजागर किया है, जैसे कि यह अवलोकन कि कुछ ध्वनि परिवर्तन दूसरों की तुलना में अधिक बार होते हैं, व्याकरणिकरण पूर्वानुमेय मार्गों का अनुसरण करता है, और अर्थगत परिवर्तन सुधार और निंदा जैसे नियमित पैटर्न

प्रदर्शित करते हैं। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान न केवल व्यक्तिगत भाषा इतिहास को समझने में योगदान देता है, बल्कि भाषाई परिवर्तन की क्रियाविधि, भाषा विकास में सामाजिक कारकों की भूमिका और भाषा परिवर्तन एवं भाषा अर्जन के बीच संबंध जैसे व्यापक प्रश्नों पर भी प्रकाश डालता है। आधुनिक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान समाजभाषाई दृष्टिकोणों को समाहित करता है जो इस बात की जाँच करते हैं कि समकालीन वाचिक समुदायों में विविधता किस प्रकार ऐतिहासिक परिवर्तन को पूर्वरूपित और संचालित करती है, और यह स्वीकार करते हैं कि समकालिक विविधता और ऐतिहासिक परिवर्तन समान गतिशील प्रक्रियाओं पर अलग-अलग लौकिक दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

वर्णनात्मक विधि, या समकालिक भाषाविज्ञान, भाषा संरचना का विश्लेषण और दस्तावेज़ीकरण करने पर केंद्रित है, जैसा कि वह किसी विशेष समय बिंदु पर, आमतौर पर वर्तमान में, ऐतिहासिक विकास या शुद्धता के बारे में निर्देशात्मक मानदंडों के संदर्भ के बिना मौजूद है। सॉसर द्वारा समर्थित और बीसवीं शताब्दी में विकसित यह दृष्टिकोण, भाषा को परस्पर संबंधित तत्वों की एक प्रणाली के रूप में मानता है, जिनके मूल्य ऐतिहासिक उत्पत्ति के बजाय प्रणाली के भीतर उनके संबंधों से प्राप्त होते हैं। वर्णनात्मक भाषाविज्ञान का उद्देश्य विशिष्ट भाषाओं या भाषा विविधताओं में ध्वन्यात्मक प्रणालियों, रूपात्मक प्रतिमानों, वाक्य-रचना संरचनाओं और अर्थ संबंधों का व्यापक और सटीक विवरण प्रदान करना है, जो आदर्श मानकों या निर्देशात्मक नियमों के बजाय वक्ताओं द्वारा वास्तविक प्रयोग पर आधारित है। वर्णनात्मक विधि विशेष रूप से संकटग्रस्त भाषाओं के दस्तावेज़ीकरण के लिए महत्वपूर्ण है, जिनमें से कई में लिखित परंपराओं का अभाव है और जो आसन्न विलुप्ति का सामना कर रही हैं; भाषा समुदायों के साथ काम करने वाले वर्णनात्मक भाषाविद् व्याकरण, शब्दकोश और पाठ संग्रह बनाते हैं जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए इन भाषा प्रणालियों के ज्ञान को संरक्षित करते हैं। वर्णनात्मक कार्य में व्यवस्थित उद्बोधन तकनीकों का प्रयोग किया जाता है, स्वाभाविक भाषण का अभिलेखन और विश्लेषण किया जाता है, और स्वीकार्य प्रयोग की सीमाएँ निर्धारित करने के लिए देशी वक्ताओं के साथ व्याकरणिकता संबंधी निर्णय लिए जाते हैं। इस पद्धति में अध्ययन की जा रही भाषा के भीतर सार्थक श्रेणियों और प्रतिमानों की खोज पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने की



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

आवश्यकता होती है, न कि अन्य भाषाओं के विश्लेषणात्मक ढाँचों को थोपने की, विशेष रूप से इस धारणा से बचने की कि सभी भाषाएँ लैटिन व्याकरणिक श्रेणियों के अनुरूप हैं। उदाहरण के लिए, वर्णनात्मक कार्य से पता चला है कि कई भाषाओं में स्पष्ट संज्ञा-क्रिया भेद का अभाव है, कुछ भाषाओं में विस्तृत प्रमाणिक प्रणालियाँ हैं जिनमें वक्ताओं को अपनी जानकारी का स्रोत बताना आवश्यक होता है, और अन्य भाषाओं में जटिल सहमति प्रणालियाँ या क्रमिक क्रिया निर्माण होते हैं जो यूरोपीय भाषाओं में अज्ञात हैं। वर्णनात्मक भाषाविज्ञान विभिन्न वक्ता समूहों, रजिस्ट्रों और संदर्भों में भिन्नता का दस्तावेजीकरण करते समय समाजभाषाविज्ञान से जुड़ता है, यह स्वीकार करते हुए कि भाषा एक एकल समान प्रणाली के रूप में नहीं, बल्कि संबंधित विविधताओं के संग्रह के रूप में मौजूद है। वर्णनात्मक पद्धति ने हजारों भाषाओं के लिए संदर्भ व्याकरण, शब्दकोश और पाठ संग्रह तैयार किए हैं, जिससे टाइपोलॉजिकल और सैद्धांतिक अनुसंधान के लिए एक अमूल्य अनुभवजन्य आधार तैयार हुआ है। समकालीन वर्णनात्मक कार्य में तेजी से कॉर्पस भाषाई पद्धतियों को शामिल किया जा रहा है, जिसमें आवृत्ति पैटर्न, सहसंयोजन संबंधी प्राथमिकताओं और सांख्यिकीय प्रवृत्तियों की पहचान करने के लिए स्वाभाविक रूप से होने वाले पाठों के बड़े संग्रह का विश्लेषण किया जाता है, जो केवल उद्दीपन से उभर कर नहीं आ सकते हैं।

तुलनात्मक पद्धति भाषाओं के बीच समानताओं और अंतरों की जाँच करती है ताकि विविधता के पैटर्न की पहचान की जा सके, आनुवंशिक संबंध स्थापित किए जा सकें और संभावित भाषाओं को परिभाषित करने वाले सार्वभौमिक सिद्धांतों की खोज की जा सके। जहाँ ऐतिहासिक भाषाविज्ञान भाषा के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए तुलना का उपयोग करता है, वहीं व्यापक अर्थों में तुलनात्मक भाषाविज्ञान में प्रकार्यात्मक शोध शामिल होता है जो असंबंधित भाषाओं में विविधता की जाँच करके यह निर्धारित करता है कि मानव भाषा में कौन सी विशेषताएँ समान, दुर्लभ या असंभव प्रतीत होती हैं। भाषा प्रकार्यविज्ञान, संरचनात्मक विशेषताओं जैसे शब्द क्रम (अंग्रेजी जैसी कर्ता-क्रिया-वस्तु भाषाओं को जापानी जैसी कर्ता-क्रिया-क्रिया भाषाओं या आयरिश जैसी क्रिया-कर्ता-वस्तु भाषाओं से अलग करना), रूपात्मक प्रकार (पृथक्करण, समूहन, संलयन, बहुसंश्लेषण), केस चिह्नन में संरक्षण पैटर्न (नाममात्र-कर्मक बनाम एर्गोटिव-

निरपेक्ष प्रणालियाँ), और अनगिनत अन्य मापदंडों के अनुसार भाषाओं का वर्गीकरण करता है। प्रतीकात्मक शोध ने आश्चर्यजनक पैटर्न उजागर किए हैं: उदाहरण के लिए, ग्रीनबर्ग के शब्द क्रम सार्वभौमिकों ने दिखाया कि क्रिया-वस्तु क्रम वाली भाषाएं आम तौर पर सहायक क्रियाओं को मुख्य क्रियाओं से पहले रखती हैं, जबकि वस्तु-क्रिया भाषाएं आम तौर पर सहायक क्रियाओं को मुख्य क्रियाओं के बाद रखती हैं, जो यह दर्शाता है कि ये पैटर्न स्वतंत्र नहीं बल्कि परस्पर जुड़े हुए हैं। तुलनात्मक पद्धति निहितार्थ सार्वभौमिकों की जांच करती है, जहां एक विशेषता की उपस्थिति दूसरी की उपस्थिति या अनुपस्थिति की भविष्यवाणी करती है; उदाहरण के लिए, यदि किसी भाषा में व्याकरणिक द्वैत संख्या है (एक, दो और दो से अधिक में अंतर करना), तो लगभग निश्चित रूप से इसमें बहुवचन संख्या भी होगी। तुलनात्मक शोध पूर्ण सार्वभौमिकों की भी जांच करता है, जो सभी ज्ञात भाषाओं में मौजूद विशेषताएं हैं, हालांकि ऐसी सार्वभौमिक आश्चर्यजनक रूप से दुर्लभ हैं और अक्सर बहस का विषय होती हैं। अंतर-भाषाई तुलना कई लक्ष्यों की पूर्ति करती है: यह निर्धारित करके सैद्धांतिक ढाँचों की भविष्यवाणियों का परीक्षण करना कि प्रस्तावित सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से लागू होते हैं या भाषा-विशिष्ट शर्तों की आवश्यकता रखते हैं, मौजूदा सिद्धांतों को चुनौती देने वाली नई घटनाओं की खोज करना, उन प्रवृत्तियों की पहचान करना जो भाषा संरचना पर संज्ञानात्मक या संचार संबंधी बाधाओं को दर्शा सकती हैं, और भाषा विकास एवं अधिग्रहण के सिद्धांतों को सूचित करना। तुलनात्मक पद्धति में विश्व भाषा संरचना एटलस जैसे टाइपोलॉजिकल डेटाबेस के विकास से क्रांतिकारी बदलाव आया है, जो सैकड़ों भाषाओं को अनेक संरचनात्मक विशेषताओं के लिए व्यवस्थित रूप से कोडित करता है, जिससे अंतर-भाषाई पैटर्न का मात्रात्मक विश्लेषण संभव होता है। तुलनात्मक शोध भाषाई विविधता, जिन तरीकों से भाषाएँ भिन्न होती हैं, और भाषाई एकता, दोनों के बारे में हमारी समझ को परिष्कृत करता रहता है, वे अंतर्निहित सिद्धांत जो संभावित विविधता को नियंत्रित करते हैं और भाषा के लिए साझा मानवीय क्षमता को दर्शाते हैं।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

---

## 1.6 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

---

### 1.6.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

---

1. भाषा की सबसे उपयुक्त परिभाषा है:

- क) केवल बोलने की कला
- ख) विचार विनिमय का सामाजिक माध्यम
- ग) लिखने की कला
- घ) व्याकरण का ज्ञान

**उत्तर:** ख) विचार विनिमय का सामाजिक माध्यम

2. भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई है:

- क) ध्वनि
- ख) शब्द
- ग) वाक्य
- घ) रूपिम

**उत्तर:** घ) रूपिम

3. भाषा की प्रकृति है:

- क) स्थिर
- ख) परिवर्तनशील
- ग) अपरिवर्तनशील
- घ) कृत्रिम

**उत्तर:** ख) परिवर्तनशील

4. भाषा-विज्ञान का अध्ययन क्षेत्र है:

- क) केवल व्याकरण
- ख) केवल साहित्य
- ग) भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन
- घ) केवल शब्दकोश

**उत्तर:** ग) भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन

5. भाषा-परिवर्तन का प्रमुख कारण नहीं है:

- क) सामाजिक संपर्क
- ख) भौगोलिक स्थिति
- ग) व्याकरण की पुस्तकें
- घ) समय

**उत्तर:** ग) व्याकरण की पुस्तकें

6. ध्वनि-विज्ञान भाषा-विज्ञान की कौन-सी शाखा है?

- क) मुख्य शाखा
- ख) गौण शाखा
- ग) सहायक शाखा
- घ) स्वतंत्र विषय

**उत्तर:** क) मुख्य शाखा

7. भाषा की विशेषता नहीं है:

- क) अर्जित
- ख) सामाजिक
- ग) जन्मजात
- घ) परिवर्तनशील

**उत्तर:** ग) जन्मजात

8. वर्णनात्मक भाषा-विज्ञान का संबंध है:

- क) भाषा के इतिहास से
- ख) किसी समय विशेष की भाषा से
- ग) भाषाओं की तुलना से
- घ) केवल प्राचीन भाषा से

**उत्तर:** ख) किसी समय विशेष की भाषा से

9. भाषा का प्राथमिक रूप है:

- क) लिखित
- ख) मौखिक



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

ग) सांकेतिक

घ) इनमें से कोई नहीं

**उत्तर:** ख) मौखिक

**10.** आधुनिक भाषा-विज्ञान का जनक किसे माना जाता है?

क) पाणिनि

ख) फर्डिनांड डी सॉस्यूर

ग) नोआम चॉम्स्की

घ) ब्लूमफील्ड

**उत्तर:** ख) फर्डिनांड डी सॉस्यूर

---

### 1.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

---

1. भाषा की परिभाषा देते हुए इसकी प्रकृति बताइए।
2. भाषा के प्रमुख तत्वों का उल्लेख कीजिए।
3. भाषा परिवर्तन के कोई तीन कारण लिखिए।
4. भाषा विज्ञान से आप क्या समझते हैं?
5. भाषा अध्ययन की वर्णनात्मक पद्धति क्या है?

---

### 1.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

---

1. भाषा की परिभाषा देते हुए इसके तत्व, अंग, प्रकृति और विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. भाषा परिवर्तन के विभिन्न कारणों और दिशाओं की विस्तृत विवेचना कीजिए।
3. भाषा विज्ञान की परिभाषा देते हुए इसके स्वरूप और अंगों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
4. भाषा विज्ञान की प्रमुख अध्ययन पद्धतियों (ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक) का विस्तृत परिचय दीजिए।
5. भाषा एक सामाजिक और परिवर्तनशील माध्यम है। इस कथन की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

---

## मॉड्यूल 2

### रूपिम विज्ञान - शब्द का परिचय

---

#### संरचना

**इकाई 2.1** रूपिम विज्ञान - शब्द और रूप (पद) संबंध

**इकाई 2.2** अर्थतत्व, रूप और संरूप

**इकाई 2.3** रूपिम और स्वनिम

---

#### 2.0 उद्देश्य

- रूपिम विज्ञान की अवधारणा और क्षेत्र को समझना तथा भाषा संरचना में इसकी भूमिका को पहचानना।
- शब्द और रूप (पद) के पारस्परिक संबंध तथा शब्द निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
- अर्थतत्व, रूप और संरूप के माध्यम से शब्द के अर्थ और रूपात्मक संरचना को समझना।
- रूपिम और स्वनिम के अंतर, प्रकार और स्वरूप का विश्लेषण करना।
- प्रत्यय, उपसर्ग और विभक्ति जैसे संबंध तत्वों के माध्यम से भाषा में रूप परिवर्तन और शब्द विकास की प्रक्रिया को स्पष्ट करना।

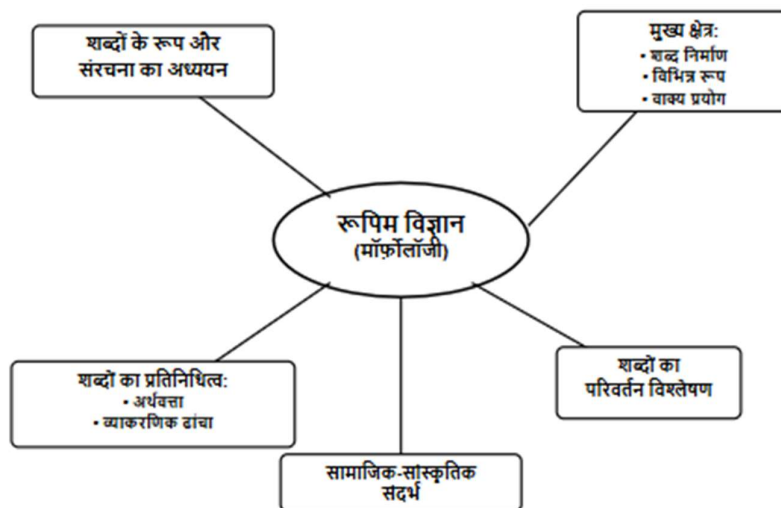
---

#### इकाई 2.1: रूपिम विज्ञान - शब्द और रूप (पद) संबंध

---

##### 2.1.1 रूपिम विज्ञान का परिचय

रूपिम विज्ञान, जिसे भाषा विज्ञान की दृष्टि से 'मॉर्फोलॉजी' कहा जाता है, भाषा के उस क्षेत्र का अध्ययन है जो शब्दों के रूप, संरचना और उनके परिवर्तन से संबंधित है। यह विज्ञान शब्दों के निर्माण, उनके विभिन्न रूपों, और उनके वाक्यों में प्रयुक्त होने के तरीकों का विश्लेषण करता है। रूपिम विज्ञान यह स्पष्ट करता है कि शब्द केवल भाषा का एक साधन नहीं हैं, बल्कि यह भाषा की अर्थवत्ता, व्याकरणिक ढांचा और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।



**चित्र 2.1: रूपिम विज्ञान**

हिंदी भाषा में रूपिम विज्ञान का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल शब्दों के रूपांतरण को समझने में मदद करता है, बल्कि यह भाषा के प्रयोग, उसके नियमों और संरचनात्मक सटीकता को भी स्पष्ट करता है। हिंदी जैसे समृद्ध भाषा में शब्द निर्माण और उनके रूप परिवर्तन का इतिहास लंबा और जटिल है। संस्कृत, अपभ्रंश, फारसी और तुर्की जैसी भाषाओं का प्रभाव हिंदी शब्द संरचना में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उदाहरण स्वरूप, संस्कृत से 'साहित्य', 'ज्ञान', 'विज्ञान' जैसे शब्द आए हैं, जबकि फारसी और अरबी से 'इन्सान', 'किताब', 'हुकूमत' जैसे शब्द हिंदी में शामिल हुए।

रूपिम विज्ञान भाषा के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायक है, यह शब्दों के मूल तत्व, उनके रूपांतरण और उनके वाक्यों में प्रयुक्त होने की प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। उदाहरण के लिए, 'खेल' शब्द के विभिन्न रूप, खेलता है, खेला, खेली, खेलेंगे, यह दर्शाते हैं कि शब्द का रूप काल, पुरुष और संख्या के अनुसार बदलता है। इसी प्रकार, संज्ञा 'किताब' के रूप, किताबें, किताबों, से यह ज्ञात होता है कि शब्द के रूप में परिवर्तन उसके प्रयोग और अर्थ को प्रभावित करता है।

रूपिम विज्ञान का क्षेत्र केवल शब्दों के रूपांतरण तक सीमित नहीं है। यह भाषा के व्याकरणिक नियमों, जैसे संज्ञा-क्रिया संबंध, विशेषण और क्रियाविशेषण का उपयोग

और वाक्य में पदों का स्थान भी शामिल करता है। यह विज्ञान यह भी बताता है कि किस प्रकार भाषा के नए रूप विकसित होते हैं और किस प्रकार समाज और संस्कृति शब्दों के अर्थ और उपयोग को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, आज के समय में तकनीकी शब्द जैसे 'मोबाइल', 'इंटरनेट', 'सॉफ्टवेयर' आदि हिंदी में धीरे-धीरे अनुवादित और परिवर्तित होकर नए रूप ले रहे हैं।

इस प्रकार, रूपिम विज्ञान भाषा की व्याकरणिक संरचना और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रयोग का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन भाषा के मौलिक तत्व, उनके परिवर्तन और उनके अर्थ के विस्तार को समझने में सहायक होता है।

---

### 2.1.2 शब्द और रूप (पद) का संबंध

---

#### शब्द निर्माण और रूप परिवर्तन

हिंदी भाषा में शब्द और उनके रूपों का संबंध अत्यंत गहरा और जटिल है। प्रत्येक शब्द किसी न किसी मूल तत्व या धातु से उत्पन्न होता है और उसके विभिन्न रूप भाषा में प्रयोग की सुविधा और अर्थ स्पष्टता के अनुसार बदलते हैं। शब्द निर्माण और रूप परिवर्तन भाषा की व्याकरणिक संरचना को मजबूत बनाते हैं और वाक्यों में अभिव्यक्ति को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाते हैं। शब्द निर्माण की प्रक्रिया में अनेक माध्यम होते हैं। सबसे प्रमुख है धातु से शब्द का निर्माण। हिंदी में क्रियाएँ किसी धातु से उत्पन्न होती हैं और विभिन्न प्रत्ययों और उपसर्गों के जोड़ से उनका रूपांतरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'पढ़' धातु से क्रियाएँ बनती हैं, पढ़ना, पढ़ा, पढ़ती, पढ़ेंगे। इसी प्रकार, संज्ञाएँ भी धातु से उत्पन्न होती हैं, 'खेल' से 'खिलाड़ी', 'खेलना', 'खेल' शब्दों का निर्माण।

रूप परिवर्तन भाषा की बहुआयामीता और लचकता को दर्शाता है। यह परिवर्तन केवल काल, लिंग और संख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि शब्द के अर्थ और भाव को भी प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, विशेषण 'सुंदर' का रूप परिवर्तन, सुंदरता, सुंदरतम, शब्द को संज्ञा और विशेषण दोनों रूपों में प्रयोग योग्य बनाता है। इसी प्रकार, 'जल' शब्द का रूप परिवर्तन, जल, पानी, जलमय, शब्द के प्रयोग और भाव को भिन्न बनाता है।



शब्द और रूप का संबंध वाक्य में उनके स्थान, अर्थ और संप्रेषणीयता के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, 'राम' नामक संज्ञा का रूप, राम, रामों, रामने, विभक्ति और प्रयोग के अनुसार बदलता है। 'राम ने खाना खाया' वाक्य में 'राम' कर्ता के रूप में प्रयोग हुआ, जबकि 'राम को किताब दी' में 'राम' सम्प्रदान के रूप में प्रयुक्त हुआ। इस प्रकार शब्द का रूप और उसके प्रयोग का संबंध गहन रूप से जुड़ा हुआ है।

इसके अलावा, शब्द और रूप का संबंध अर्थ और भाव के स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण स्वरूप, 'दौड़' शब्द के रूप, दौड़ना, दौड़ती, दौड़ी, से क्रिया, काल और भाव स्पष्ट होता है। इसी प्रकार, 'खुश' शब्द के रूप, खुशहाल, खुशबू, खुशी, शब्द के अर्थ और भाव को विस्तारित करते हैं। इस तरह, शब्द और रूप का संबंध भाषा की अभिव्यक्ति को स्पष्ट, सटीक और बहुआयामी बनाता है।

---

### 2.1.3 संबंध तत्व

---

#### प्रत्यय, उपसर्ग, विभक्ति

रूपिम विज्ञान में संबंध तत्व शब्दों के अर्थ, रूप और प्रयोग को नियंत्रित करने वाले महत्वपूर्ण घटक हैं। ये तत्व भाषा की संरचना को व्यवस्थित और सटीक बनाने में मदद करते हैं। मुख्य संबंध तत्व हैं, प्रत्यय, उपसर्ग और विभक्ति।

**प्रत्यय** वह तत्व है जो शब्द के मूल में जोड़कर नए अर्थ और रूप उत्पन्न करता है। प्रत्यय शब्द की श्रेणी, अर्थ और काल को बदलने में सहायक होते हैं। उदाहरण स्वरूप, 'खेल' शब्द में '-ना' प्रत्यय जोड़ने से 'खेलना' बनता है, 'सुंदर' में '-ता' जोड़ने से 'सुंदरता' बनती है। प्रत्यय शब्दों के अर्थ और प्रयोग की विविधता उत्पन्न करता है और भाषा को लचीला बनाता है।

**उपसर्ग** वह तत्व है जो शब्द के पहले जोड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन करता है। हिंदी में उपसर्ग जैसे 'वि-', 'सु-', 'प्रति-', 'अनु-' आदि का प्रयोग शब्दों में विशेष अर्थ उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'गणना' शब्द में 'वि-' उपसर्ग जोड़ने से 'विगणना' बनती है, जिसका अर्थ मूल शब्द से भिन्न होता है। उपसर्ग भाषा में शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ विस्तार को नियंत्रित करता है।

**विभक्ति** शब्द के अंत में जुड़ने वाला तत्व है जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण को वाक्य में अन्य पदों के साथ जोड़ता है और उसका प्रयोग वाक्य में स्पष्ट करता है। हिंदी में विभक्ति के प्रकार हैं, कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण और सम्बंध। उदाहरण के लिए, 'राम ने खाना खाया' में 'ने' कर्ता विभक्ति है, 'राम को किताब दी' में 'को' सम्प्रदान विभक्ति है। विभक्ति भाषा को व्याकरणिक रूप से सटीक और स्पष्ट बनाती है।

संबंध तत्व शब्दों को नए अर्थ, रूप और प्रयोग प्रदान करते हैं। वे भाषा की संरचना को समृद्ध और अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाते हैं। भाषा में इन तत्वों के सही और प्रभावी प्रयोग से संवाद स्पष्ट, अर्थपूर्ण और बहुआयामी होता है। उपसंहार के रूप में कहा जा सकता है कि रूपिम विज्ञान भाषा की नींव है। यह न केवल शब्दों और उनके रूपों का अध्ययन करता है, बल्कि भाषा के प्रयोग, अर्थ, संरचना और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शब्द और रूप का संबंध भाषा की अभिव्यक्ति को स्पष्ट और बहुआयामी बनाता है, जबकि संबंध तत्व भाषा को व्यवस्थित और प्रभावशाली बनाते हैं। हिंदी भाषा में रूपिम विज्ञान का अध्ययन भाषा के विकास, शब्द संरचना और व्याकरणिक सटीकता को समझने के लिए आवश्यक है।

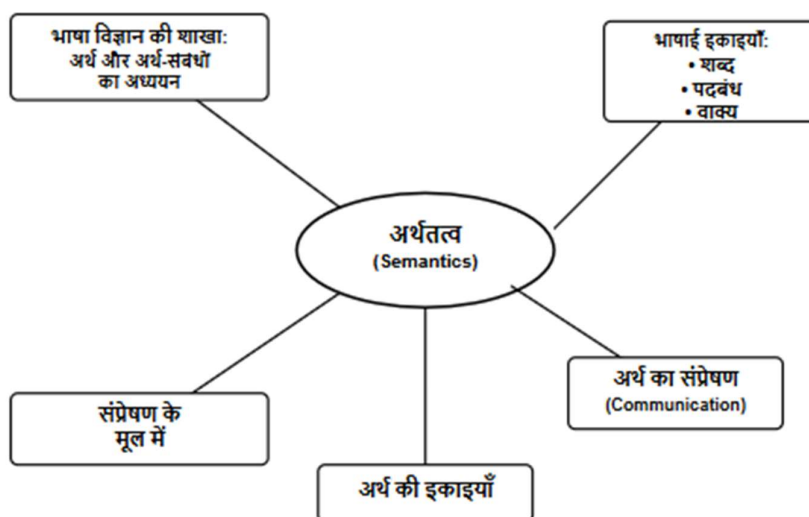


## इकाई 2.2: अर्थतत्व, रूप और संरूप

यह दस्तावेज़ हिंदी भाषा के तीन अंतर्संबंधित भाषाई स्तरों पर केंद्रित है: अर्थ विज्ञान, रूपिम विज्ञान, और संरचना/पैटर्न। यह अध्ययन भाषा की न्यूनतम अर्थवान इकाई से लेकर उसके शब्द-निर्माण की प्रक्रिया और व्याकरणिक पैटर्न तक की व्याख्या करता है।

### 2.2.1 अर्थतत्व: अर्थ की इकाइयाँ

**अर्थतत्व** भाषा विज्ञान की वह शाखा है जो भाषाई इकाइयों (शब्दों, पदबंधों, वाक्यों) के अर्थ और अर्थ-संबंधों का अध्ययन करती है। किसी भी भाषा का अंतिम उद्देश्य अर्थ का संप्रेषण होता है, और अर्थतत्व इस संप्रेषण के मूल में होता है।



चित्र 2.2: अर्थतत्व

### अर्थ की संकल्पना

अर्थ को मुख्यतः दो स्तरों पर देखा जाता है:

1. **शब्दगत अर्थ:** किसी एकल शब्द का निहितार्थ।
2. **व्याकरणिक अर्थ:** वाक्य में शब्दों के परस्पर संबंध से उत्पन्न अर्थ (जैसे: लिंग, वचन, काल का बोध)।

## अर्थ की इकाइयाँ

अर्थ की इकाइयाँ पदानुक्रम में व्यवस्थित होती हैं, जहाँ प्रत्येक बड़ी इकाई अपने से छोटी इकाइयों के संयोजन से बनती है।

### 1. स्वनिम

यह स्वयं अर्थ की इकाई नहीं है, बल्कि **भेदक इकाई** है। इसका कार्य शब्दों के बीच ध्वनि-भेद स्थापित करना है, जिससे अर्थ में अंतर आता है।

- उदाहरण: /क/ और /ख/ के बीच का भेद। 'काम' और 'खाम' का अर्थ-भेद स्वनिमों के कारण है।

### 2. रूपिम/अर्थग्राम

यह **अर्थ की सबसे छोटी इकाई** है। रूपिम वह लघुतम भाषिक इकाई है जिसे विभाजित करने पर उसका कोई अर्थ नहीं रह जाता।

- उदाहरण:
  - 'लड़के' शब्द में दो रूपिम हैं: 'लड़का' (मूल अर्थ, स्वतंत्र रूपिम) और 'ए' (बहुवचन का अर्थ, परतंत्र रूपिम)।
  - 'अन्याय' शब्द में दो रूपिम हैं: 'अ' (निषेध का अर्थ) और 'न्याय' (मूल अर्थ)।
- एक वाक्य का संपूर्ण अर्थ अंततः रूपिमों द्वारा वहन किए गए अर्थ पर निर्भर करता है।

### 3. शब्द

शब्द रूपिमों के संयोजन से बनता है और भाषा में अर्थ का प्राथमिक वाहक होता है। शब्दों के पास अपना विशिष्ट शाब्दिक अर्थ होता है।

- **वाच्यार्थ:** शब्द का मूल या शब्दकोशीय अर्थ।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

- **लक्ष्यार्थ:** शब्द का सांकेतिक या गौण अर्थ जो संदर्भ पर आधारित होता है।
- **व्यंग्यार्थ:** वह छिपा हुआ अर्थ जो न तो वाच्य है और न ही लक्ष्य, बल्कि संदर्भ से व्यंजित होता है।

➤ **उदाहरण:** "राम तो मूर्ख है।" (वाच्यार्थ: राम बुद्धिमान नहीं है। व्यंग्यार्थ: राम ने कोई बेवकूफी वाला काम किया है।)

#### 4. पदबंध

पदबंध दो या दो से अधिक शब्दों का समूह होता है जो वाक्य में एक इकाई के रूप में कार्य करता है, लेकिन उसका अर्थ **रचनात्मक** होता है। पदबंध का अर्थ उसमें शामिल शब्दों के अर्थों का योग मात्र नहीं होता, बल्कि उनका संरचित संयोजन होता है।

- **उदाहरण:** 'बहुत तेज़ दौड़ना' → 'दौड़ना' क्रिया का अर्थ और 'बहुत तेज़' रीति का अर्थ, मिलकर एक मिश्रित अर्थ देते हैं।

#### 5. वाक्य

वाक्य अर्थ की सबसे बड़ी इकाई है जो एक **पूर्ण विचार** को व्यक्त करती है। वाक्य का अर्थ इसकी **प्रस्तावनात्मक सामग्री** और **वाक्य के प्रकार्य** पर निर्भर करता है।

- **प्रकार्य:** एक ही वाक्य-संरचना विभिन्न प्रकार्य कर सकती है (जैसे: "दरवाजा बंद कर दो।" - यह अनुरोध, आज्ञा या चेतावनी हो सकती है)।

#### 6. प्रसंग/संदर्भ

अर्थ की यह इकाई वाक्य से बड़ी होती है और संवाद की संपूर्ण पृष्ठभूमि (सामाजिक, भौतिक, भाषिक) को शामिल करती है।

- **अर्थ-निर्भरता:** किसी वाक्य का अंतिम अर्थ हमेशा उस **संदर्भ** पर निर्भर करता है जिसमें वह बोला गया है।

- **उदाहरण:** यदि कोई व्यक्ति खाली मेज देखकर कहे: "यहाँ पर चाय रखी है।" तो संदर्भ के अनुसार इसका अर्थ 'चाय रखी होनी चाहिए थी' या 'चाय नहीं रखी है' भी हो सकता है। यह अध्ययन **प्रयोजनमूलक अर्थ विज्ञान** के अंतर्गत आता है।

## अर्थ परिवर्तन

समय के साथ शब्दों के अर्थ में बदलाव आना एक स्वाभाविक भाषाई प्रक्रिया है। यह अर्थतत्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

- **अर्थ विस्तार:** जब शब्द का अर्थ संकीर्ण से व्यापक हो जाता है।
  - **उदाहरण:** 'तेल' (मूल अर्थ: तिल का रस) अब सभी प्रकार के तरल चिकनाई वाले पदार्थों के लिए प्रयुक्त होता है।
- **अर्थ संकोच:** जब शब्द का अर्थ व्यापक से संकीर्ण हो जाता है।
  - **उदाहरण:** 'सब्जी' (मूल अर्थ: सभी रसीले खाद्य पदार्थ) अब सिर्फ पकी हुई तरकारी के लिए प्रयुक्त होता है।
- **अर्थोत्कर्ष:** जब शब्द का अर्थ निकृष्ट से उत्कृष्ट हो जाता है।
  - **उदाहरण:** 'मुद्रा' (मूल अर्थ: ठप्पा/छाप) अब 'धन' जैसे महत्वपूर्ण अर्थ में प्रयुक्त होता है।
- **अर्थपकर्ष:** जब शब्द का अर्थ उत्कृष्ट से निकृष्ट हो जाता है।
  - **उदाहरण:** 'दैवज्ञ' (मूल अर्थ: ईश्वर को जानने वाला) अब 'ज्योतिषी' या 'भाग्य बताने वाला' तक सीमित हो गया है।

### 2.2.2 रूप: शब्द का रूप और संरचना

रूपिम विज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है जो शब्दों की आंतरिक संरचना, उनके निर्माण और उनमें होने वाले रूपात्मक परिवर्तनों का अध्ययन करती है। 'रूप' यहाँ शब्द की संरचना को संदर्भित करता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

## रूपिम: रूप की आधारभूत इकाई

जैसा कि 2.2.1 में बताया गया है, रूपिम अर्थ की सबसे छोटी इकाई है और यह रूपिम विज्ञान की आधारभूत इकाई है।

## रूपिम के भेद

रूपिमों को उनकी कार्यक्षमता के आधार पर दो मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है:

**क. स्वतंत्र रूपिम:** वे रूपिम जो वाक्य में अकेले, बिना किसी अन्य रूपिम की सहायता के, प्रयुक्त हो सकते हैं।

1. **मूल शब्द/लेक्सिकल रूपिम:** संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण जो विषय-वस्तु का अर्थ देते हैं। (उदाहरण: घर, पढ़, सुंदर, जल्दी)।
2. **व्याकरणिक रूपिम/फंक्शनल रूपिम:** सर्वनाम, संयोजक, संबंधबोधक आदि जो व्याकरणिक संबंध दर्शाते हैं। (उदाहरण: मैं, और, पर, लेकिन)।

**ख. परतंत्र रूपिम:** वे रूपिम जो अकेले प्रयुक्त नहीं हो सकते और जिन्हें हमेशा किसी स्वतंत्र रूपिम के साथ जुड़कर ही अर्थ देना होता है।

1. **उपसर्ग:** मूल शब्द के आरंभ में जुड़ते हैं। (उदाहरण: 'अ' + ज्ञान → अज्ञान)।
2. **प्रत्यय:** मूल शब्द के अंत में जुड़ते हैं।
  - **व्युत्पत्तिपरक प्रत्यय:** नया शब्द बनाते हैं और शब्द की श्रेणी (Category) बदल सकते हैं। (उदाहरण: 'लिख' (क्रिया) + 'आव' → लिखावट (संज्ञा))।
  - **विभक्तिपरक प्रत्यय:** शब्द की श्रेणी नहीं बदलते, बल्कि व्याकरणिक कार्य (लिंग, वचन, काल, कारक) दर्शाते हैं। (उदाहरण: 'लड़का' + 'ओं' → लड़कों)।
3. **विभक्तियाँ:** संज्ञा/सर्वनाम के बाद जुड़कर उनका संबंध क्रिया या अन्य शब्दों से दर्शाते हैं। (उदाहरण: 'राम' + 'ने', 'पेड़' + 'पर')।

## शब्द निर्माण और संरचना

शब्द की संरचना मुख्य रूप से दो प्रक्रियाओं पर निर्भर करती है: **विकार** और **व्युत्पत्ति**।

### 1. व्युत्पत्ति (नए शब्द बनाना)

यह वह प्रक्रिया है जिससे भाषा में नए शब्द उत्पन्न होते हैं।

- **उपसर्ग द्वारा:** उपसर्ग+मूल शब्द→नया शब्द (उदाहरण: अन्+पढ़→अनपढ़)
- **प्रत्यय द्वारा:** मूल शब्द+प्रत्यय→नया शब्द (उदाहरण: मानव+ता→मानवता)
- **संधि द्वारा:** दो शब्दों या रूपिमों के मेल से ध्वनि परिवर्तन के साथ नए शब्द बनना। (उदाहरण: विद्या+आलय→विद्यालय)
- **समास द्वारा:** दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नया संक्षिप्त शब्द बनाना। (उदाहरण: नीला+कंठ→नीलकंठ)

### 2. विकार/रूपांतरण (Inflection - व्याकरणिक कार्य)

यह वह प्रक्रिया है जिससे शब्द की श्रेणी (जैसे: संज्ञा, क्रिया) अपरिवर्तित रहती है, लेकिन शब्द का रूप व्याकरणिक आवश्यकताओं (लिंग, वचन, काल, कारक) के अनुसार बदल जाता है। हिंदी में यह मुख्यतः क्रिया और कुछ संज्ञाओं में होता है।

- **संज्ञा का विकार:** 'लड़का' (एकवचन) → 'लड़के' (बहुवचन)
- **क्रिया का विकार:** 'जाना' → 'जाता हूँ' (वर्तमान काल, पुल्लिंग), 'जाएँगे' (भविष्य काल, बहुवचन)

### 3. संरचनात्मक वर्गीकरण

शब्द को उसकी आंतरिक संरचना के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है:

- **रूढ़ शब्द:** वे शब्द जिनके खंड करने पर कोई अर्थ न निकले। (उदाहरण: घर, जल)।



- **यौगिक शब्द:** वे शब्द जो दो या दो से अधिक सार्थक शब्दों या रूपिम्ओं के योग से बनते हैं। (उदाहरण: पाठशाला, रसोईघर)।
- **योगरूढ़ शब्द:** वे यौगिक शब्द जिनका अर्थ किसी विशेष रूढ़ अर्थ में स्थिर हो गया हो। (उदाहरण: पंकज - कीचड़ में जन्म लेने वाला, जिसका रूढ़ अर्थ है 'कमल')।

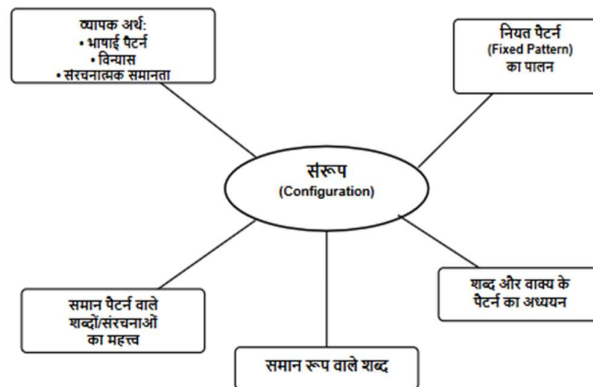
### शब्द का रूप और ध्वनि

शब्द का रूप केवल लिखित संरचना ही नहीं, बल्कि उच्चरित ध्वनि भी होता है। रूपिम विज्ञान और ध्वनि विज्ञान आपस में जुड़े हुए हैं, क्योंकि कई बार रूपिम्ओं के जुड़ने पर ध्वनि परिवर्तन के नियम लागू होते हैं, जिससे शब्द का उच्चारण बदल जाता है।

- उदाहरण: 'जगत्' + 'ईश' → 'जगदीश' (यहाँ त् का द, और इ का ई में परिवर्तन हुआ)।

### 2.2.3 संरूप: समान रूप वाले शब्द

संरूप यहाँ व्यापक अर्थ में प्रयोग होता है, जिसका तात्पर्य भाषाई पैटर्न, विन्यास और संरचनात्मक समानता से है। संरूप यह अध्ययन करता है कि भाषा में शब्द और वाक्य किस प्रकार के नियत पैटर्न का पालन करते हैं, और समान पैटर्न वाले शब्दों या संरचनाओं का क्या महत्त्व है।



चित्र 2.3: संरूप

## क. रूपात्मक संरूप: शब्द संरचना में समानता

यह अध्ययन करता है कि नए शब्द कैसे मौजूदा ढाँचों और प्रत्ययों का अनुसरण करके बनते हैं।

### 1. प्रत्ययीकरण का संरूप

हिंदी में कई प्रत्यय एक विशिष्ट अर्थ के साथ जुड़कर एक संरूप (Pattern) बनाते हैं।

- **कर्तावाचक संरूप:**

- क्रिया मूल+क (लेखक, पाठक, गायक) → **करने वाला**
- संज्ञा+वाला (सब्जीवाला, दूधवाला) → **व्यावसायिक कर्ता**

- **भाववाचक संरूप:**

- विशेषण+ता (सुंदरता, मानवता) → **गुण का भाव**
- क्रिया/संज्ञा+आई (पढ़ाई, लिखाई) → **कार्य का भाव** इस प्रकार, एक नए शब्द के बनने के दौरान, वक्ता या श्रोता अवचेतन रूप से इस **संरचनात्मक पैटर्न** को पहचानते हैं।

### 2. विभक्तियाँ और व्याकरणिक संरूप

विकारी शब्दों में होने वाले विकार भी संरूप का पालन करते हैं।

- **वचन परिवर्तन संरूप:**

- पुल्लिंग आकारान्त संज्ञा (लड़का) → 'ए' (लड़के)
- स्त्रीलिंग अ-आकारान्त संज्ञा (किताब) → 'एँ' (किताबें) यह संरूप भाषा की व्याकरणिक स्थिरता को दर्शाता है।

## ख. समरूपता: समान रूप वाले शब्द

समान रूप वाले शब्द वे होते हैं जिनका रूप (ध्वनि या लेखन) समान हो, लेकिन उनके अर्थ भिन्न हों। यह संरूप अध्ययन अर्थ विज्ञान और रूपिम विज्ञान के बीच के संबंध को जटिल बनाता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

## 1. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

वे शब्द जिनका **उच्चारण (श्रुति) समान** हो, लेकिन वर्तनी (रूप) और अर्थ भिन्न हों।

### • उदाहरण:

- **अन्न** (अनाज) - **अन्य** (दूसरा)
- **दिन** (दिवस) - **दीन** (गरीब)
- **कुल** (वंश) - **कूल** (किनारा) यहाँ ध्वनि संरूप समान है, पर अर्थ भिन्न।

## 2. समनाम् शब्द/अनेकार्थी शब्द

वे शब्द जिनकी **वर्तनी (रूप) समान** हो, और प्रायः उच्चारण भी समान हो, लेकिन उनके अर्थ भिन्न हों।

### • उदाहरण:

- **कनक:** (1) सोना, (2) धतूरा। (यहाँ रूप/नाम समान है, पर अर्थ भिन्न)
- **हार:** (1) पराजय, (2) माला।
- **फल:** (1) नतीजा, (2) खाने वाला फल। इन शब्दों का अर्थ केवल वाक्य के **संदर्भ** के आधार पर ही समझा जा सकता है।

## ग. शब्द-संरूप और वाक्य-संरचना

संरूप केवल शब्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि वाक्य स्तर पर भी लागू होता है। वाक्य-विन्यास भी एक प्रकार का संरूप है।

### 1. कारक संरूप

हिंदी में क्रिया के साथ कारक चिह्नों का जो पैटर्न बनता है, वह संरूप कहलाता है। यह बताता है कि क्रिया को कौन सा कारक चाहिए।

- **उदाहरण:** 'देना' क्रिया को कम से कम तीन कारक चाहिए: कर्ता ('ने'), कर्म ('को/०'), और संप्रदान ('को/के लिए')।

- "राम ने श्याम को पुस्तक दी।" (यह 'देना' क्रिया का नियत संरूप है)।
- "पिता ने बच्चे के लिए खिलौना खरीदा।"

## 2. पदबंध संरूप

पदबंधों का मुखिया और उसके विस्तारक भी एक संरूप का पालन करते हैं।

- **संज्ञा पदबंध (NP) संरूप:** (विस्तारक) + (विशेषण) + **संज्ञा (मुखिया)**
- **क्रिया पदबंध (VP) संरूप:** **क्रिया (मुखिया)** + (कर्म) + (क्रियाविशेषण विस्तारक) इस संरूप के कारण ही वक्ता आसानी से नए और सुगठित पदबंधों का निर्माण कर पाते हैं।

## संरूप का महत्व

संरूप (पैटर्न) का अध्ययन भाषा विज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह निम्नलिखित में सहायक है:

1. **भाषाई उत्पादकता:** यह हमें यह समझने में मदद करता है कि वक्ता कैसे सीमित नियमों (संरूपों) का उपयोग करके अनंत संख्या में सुगठित वाक्यों और नए शब्दों का निर्माण कर सकते हैं।
2. **भाषा अधिग्रहण:** बच्चे भाषा सीखते समय शब्दों को अलग-अलग याद करने के बजाय, उनके पीछे के संरचनात्मक संरूपों (जैसे: बहुवचन बनाने का पैटर्न) को आत्मसात करते हैं।
3. **अर्थ की व्याख्या:** समरूप शब्दों के कारण उत्पन्न होने वाली अस्पष्टता को दूर करने में संरूप और संदर्भ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

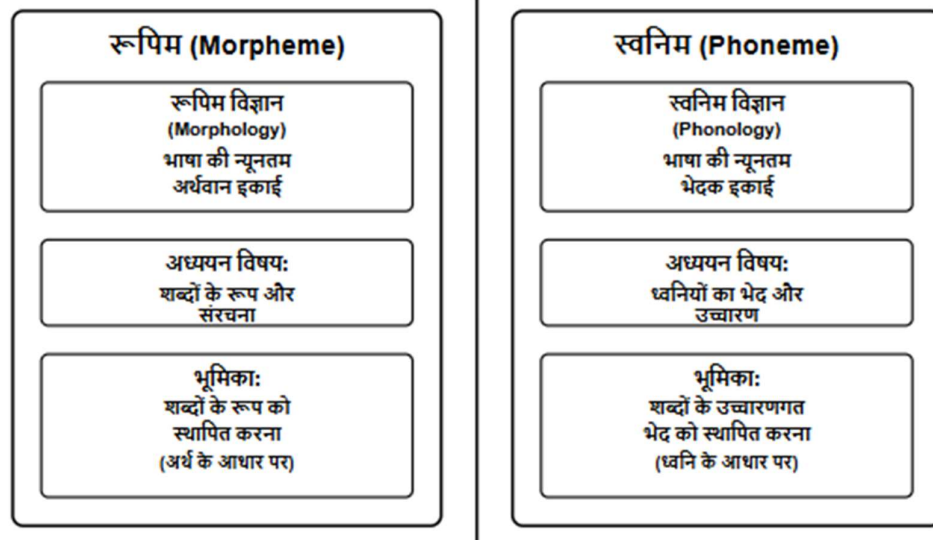
यह विस्तृत विश्लेषण भाषा की संरचना और अर्थ की जटिलताओं को उजागर करता है, यह दर्शाता है कि भाषा एक सुगठित और नियम-आधारित व्यवस्था है।



## इकाई 2.3: रूपिम और स्वनिम

यह दस्तावेज़ भाषा संरचना के दो आधारभूत घटकों, रूपिम और स्वनिम, पर केंद्रित है। रूपिम विज्ञान भाषा की न्यूनतम अर्थवान इकाई का अध्ययन है, जबकि स्वनिम विज्ञान भाषा की न्यूनतम भेदक इकाई का अध्ययन है। ये दोनों मिलकर शब्दों के रूप और उनके उच्चारणगत भेद को स्थापित करते हैं।

### रूपिम (Morpheme) और स्वनिम (Phoneme) का विस्तृत अध्ययन



चित्र 2.4: रूपिम और स्वनिम

### 2.3.1 रूपिम: परिभाषा और उदाहरण

रूपिम विज्ञान शब्द की आंतरिक संरचना का अध्ययन करता है। इस अध्ययन की आधारभूत इकाई रूपिम है।

#### रूपिम की परिभाषा

रूपिम भाषा की वह **सबसे छोटी सार्थक इकाई** है जिसे और छोटे खंडों में विभाजित नहीं किया जा सकता, यदि विभाजित किया जाए तो उन खंडों का कोई स्वतंत्र अर्थ या व्याकरणिक कार्य शेष न रहे।

रूपिम, रूप और अर्थ दोनों का वाहक होता है। रूपिमों के संयोजन से ही शब्दों का निर्माण होता है।

### उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण:

'असुरक्षितताएँ' इस शब्द को देखिए। यदि हम इसे तोड़ें, तो यह निम्नलिखित रूपिमों में खंडित होगा:

1. **अ-** (उपसर्ग): निषेध/नकारात्मकता का अर्थ।
2. **सुरक्षित** (मूल शब्द): मूल शाब्दिक अर्थ (Lexical meaning)।
3. **-इत** (प्रत्यय): किसी क्रिया को विशेषण में बदलने का कार्य (यहाँ मूलतः 'सुरक्षा' से)।
4. **-ता** (प्रत्यय): भाववाचक संज्ञा बनाने का व्याकरणिक कार्य।
5. **-एँ** (प्रत्यय): बहुवचन का व्याकरणिक कार्य।

प्रत्येक खंड ('अ-', 'सुरक्षित', '-ता', '-एँ') एक **रूपिम** है, क्योंकि इसे और विभाजित करने पर इसका विशिष्ट अर्थ या कार्य समाप्त हो जाएगा।

### रूपिम और शब्द में अंतर

यह समझना आवश्यक है कि रूपिम और शब्द समान नहीं हैं:

| मानदंड             | रूपिम                                                                                | शब्द                                                                                |
|--------------------|--------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>स्वतन्त्रता</b> | कुछ रूपिम स्वतंत्र होते हैं (जैसे: 'घर'), कुछ परतंत्र होते हैं (जैसे: '-ता', '-एँ')। | प्रायः स्वतंत्र रूप से प्रयोग होते हैं।                                             |
| <b>सार्थकता</b>    | यह न्यूनतम सार्थक इकाई है, जिसका एक अर्थ (शाब्दिक या व्याकरणिक) होता है।             | यह वाक्य में प्रयुक्त होने वाली स्वतंत्र इकाई है, जो एक या अधिक रूपिमों से बनती है। |
| <b>संरचना</b>      | शब्द का निर्माण रूपिमों के संयोजन से होता है।                                        | शब्द रूपिमों की उच्च इकाई है।                                                       |
| <b>उदाहरण</b>      | 'पढ़', '-ता', 'अ-'                                                                   | पढ़ना, अपठित, पढ़ता                                                                 |



## रूपग्राम और रूपिम

भाषा विश्लेषण की प्रक्रिया में दो और संकल्पनाएँ महत्वपूर्ण हैं:

1. **रूपग्राम:** यह रूपिम की वास्तविक, भौतिक अभिव्यक्ति है। यह वह विशिष्ट ध्वनि या लेखन खंड है जिसे हम उच्चारित या लिखते हैं।
2. **समान रूपिम/विभिन्न रूपग्राम:** जब एक ही रूपिम (एक ही अर्थ या व्याकरणिक कार्य) को व्यक्त करने के लिए भिन्न-भिन्न रूपग्रामों का प्रयोग किया जाता है, तो वे **समान रूपिम या विरूप** कहलाते हैं। ये भिन्नताएँ प्रायः स्वनिम विज्ञान या वातावरणगत होती हैं।
  - उदाहरण: हिंदी में **भूतकाल** को दर्शाने के लिए प्रयोग होने वाले रूपिम के कई रूपग्राम हैं:
    - **पढ़ा** (जैसे: राम ने पढ़ा)
    - **खाया** (जैसे: उसने खाया)
    - **गई** (जैसे: सीता गई)
    - यहाँ '-आ', '-या', '-ई' आदि सभी रूपग्राम मिलकर एक ही 'भूतकाल' रूपिम को व्यक्त करते हैं।

---

### 2.3.2 स्वनिम: ध्वनि की इकाई

---

स्वनिम विज्ञान भाषा की ध्वनि व्यवस्था का अध्ययन करता है। स्वनिम इस अध्ययन की मूलभूत इकाई है।

#### स्वनिम की परिभाषा

स्वनिम भाषा की वह **सबसे छोटी भेदक इकाई** है जिसका अपना कोई अर्थ नहीं होता, लेकिन यह दो शब्दों के बीच अर्थ का अंतर स्थापित करने की क्षमता रखती है।

स्वनिम एक अमूर्त संकल्पना है जो मस्तिष्क में संग्रहीत होता है। जब यह उच्चारित होता है, तो इसे **स्वन** कहा जाता है।

## स्वनिम का कार्य: अर्थ-भेदकत्व

स्वनिमों को पहचानने का सबसे सरल तरीका **न्यूनतम युग्म** विधि का प्रयोग करना है। न्यूनतम युग्म दो ऐसे शब्द होते हैं जो केवल एक ध्वनि के कारण भिन्न होते हैं, और इस भिन्नता के कारण उनका अर्थ भी बदल जाता है।

- **उदाहरण:** हिंदी में:
  - **काल** और **खाल** → यहाँ केवल /क/ और /ख/ ध्वनियों के अंतर से अर्थ बदल गया। अतः, /क/ और /ख/ हिंदी भाषा के पृथक स्वनिम हैं।
  - **चला** और **टला** → यहाँ /च/ और /ट/ स्वनिम हैं।
  - **रात** और **हाथ** → यहाँ /र/ और /ह/ स्वनिम हैं।

## स्वनिम और स्वन

स्वनिम एक 'वर्ग' है, जबकि स्वन उसका 'सदस्य' है।

1. **स्वन:** ध्वनि की वास्तविक, भौतिक अभिव्यक्ति। यह उच्चारण प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाली कोई भी ध्वनि हो सकती है।
2. **विस्वन/समान स्वनिम:** जब एक ही स्वनिम (Abstract unit) को व्यक्त करने के लिए दो या दो से अधिक अलग-अलग ध्वनियों (Phones) का प्रयोग किया जाता है, लेकिन इन ध्वनियों से अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं आता, तो वे विस्वन या समान स्वनिम कहलाते हैं।
  - विस्वन प्रायः वातावरणगत वितरण (Contextual Distribution) के अनुसार आते हैं और वक्ता उन्हें बिना सोचे-समझे उपयोग करता है।
  - **उदाहरण:** हिंदी में /न/ स्वनिम के विस्वन:
    - /न/ (दंत्य नासिक्य): जब यह त, थ, द के पहले आता है (जैसे: नम)।
    - /ञ/ (तालव्य नासिक्य): जब यह च, छ, ज के पहले आता है (जैसे: गञ्गा)।



- /ण/ (मूर्धन्य नासिक्य): जब यह ट, ठ, ड के पहले आता है (जैसे: कण)। ये सभी ध्वनियाँ /न/ स्वनिम के विस्वन हैं, क्योंकि यदि आप इनमें से किसी एक को दूसरे की जगह उपयोग करते हैं, तो हिंदी भाषी के लिए शब्द का अर्थ नहीं बदलेगा (जैसे 'कन' को 'कण' की जगह बोलना)।

## स्वनिमों का वर्गीकरण

स्वनिमों को मुख्यतः उनके उच्चारण स्थान और प्रकृति के आधार पर दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है:

1. **स्वर स्वनिम:** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय वायु बिना किसी अवरोध के मुख विवर से बाहर निकलती है। हिंदी में मूल रूप से 10 स्वर स्वनिम माने जाते हैं (/अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ/)।
2. **व्यंजन स्वनिम:** वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में फेफड़ों से आने वाली वायु को मुख विवर में किसी स्थान पर आंशिक या पूर्ण रूप से अवरुद्ध किया जाता है। हिंदी में लगभग 33 व्यंजन स्वनिम माने जाते हैं, जिन्हें स्पर्श, संघर्षी, नासिक्य आदि वर्गों में विभाजित किया जाता है।

---

### 2.3.3 रूपिमों का स्वरूप: मुक्त और बद्ध रूपिम

---

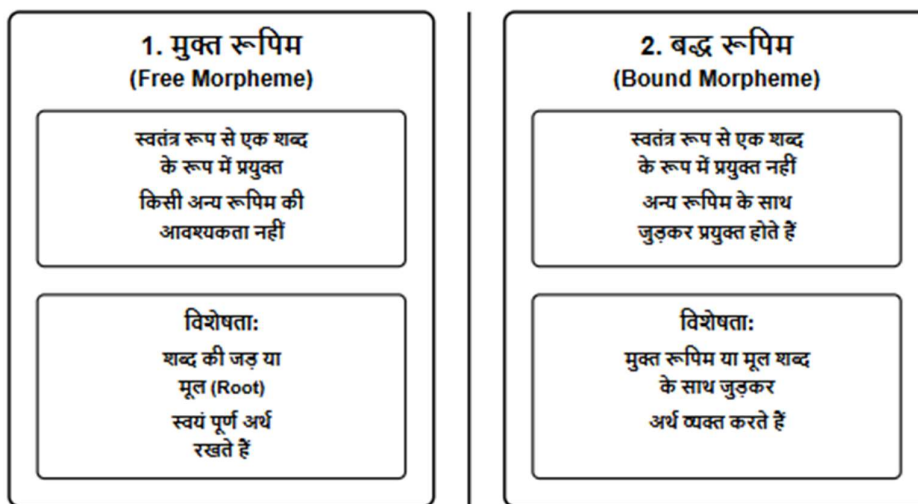
रूपिमों का स्वरूप उनकी वाक्य में प्रयोग की क्षमता पर निर्भर करता है। इस आधार पर रूपिमों को दो मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है: मुक्त रूपिम और बद्ध रूपिम।

#### 1. मुक्त रूपिम

वे रूपिम जो स्वतंत्र रूप से एक शब्द के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं और उन्हें किसी अन्य रूपिम की आवश्यकता नहीं होती। ये प्रायः किसी शब्द की जड़ या मूल होते हैं।

## रूपिमों का स्वरूप मुक्त और बद्ध रूपिम

रूपिमों का स्वरूप उनकी वाक्य में  
प्रयोग की क्षमता पर निर्भर करता है



चित्र 2.5: रूपिमों का स्वरूप

### क. मुक्त लेक्सिकल रूपिम

इन्हें **विषय-वस्तु रूपिम** भी कहा जाता है। ये भाषा के मुख्य अर्थ (अर्थात्, संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण) को वहन करते हैं।

- उदाहरण: घर, आदमी, पढ़ना, बड़ा, सुंदर, तेज़, कल, खाना आदि।

### ख. मुक्त व्याकरणिक रूपिम

इन्हें **कार्य रूपिम** भी कहा जाता है। इनका कार्य व्याकरणिक संबंधों को दर्शाना है, इनका अपना शाब्दिक अर्थ कम होता है।

- उदाहरण:
  - संयोजक: और, या, लेकिन।
  - सर्वनाम: मैं, तुम, वह।
  - संबंधबोधक: पर, में, से।



## 2. बद्ध रूपिम

वे रूपिम जो स्वतंत्र रूप से एक शब्द के रूप में प्रयुक्त नहीं हो सकते। उन्हें हमेशा किसी अन्य रूपिम (प्रायः एक मुक्त रूपिम या मूल शब्द) के साथ जुड़कर ही अर्थ व्यक्त करना होता है।

बद्ध रूपिमों का कार्य मुख्य रूप से व्युत्पत्ति या विभक्ति/विकार करना होता है।

### क. व्युत्पत्तिपरक बद्ध रूपिम

ये रूपिम मूल शब्द के साथ जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, और अक्सर उस शब्द की व्याकरणिक श्रेणी को बदल देते हैं।

- उदाहरण:
  - उपसर्ग:
    - अन-+होना(क्रिया)→अनहोना(विशेषण)
    - प्र-+हार(संज्ञा)→प्रहार(संज्ञा)
  - प्रत्यय:
    - अच्छा(विशेषण)+-ई→अच्छाई(संज्ञा)
    - नाटक(संज्ञा)+-कार→नाटककार(संज्ञा)

### ख. विभक्तिपरक बद्ध रूपिम

ये रूपिम केवल व्याकरणिक कार्य (जैसे: लिंग, वचन, काल, कारक) दर्शाते हैं। ये शब्द की मूल श्रेणी (PoS) नहीं बदलते। हिंदी में इन्हें प्रत्यय या विभक्तियाँ (Postpositions) माना जाता है।

- उदाहरण:
  - वचन: पुस्तक(संज्ञा)+-एँ→पुस्तकें(संज्ञाही), केवल वचन बदलता है।
  - कारक: लड़का(संज्ञा)+-ओं+को(विभक्ति)→लड़कों को
  - काल: पढ़(मूल)+-ता(वर्तमान)+-है(सहायक क्रिया)

### 2.3.4 रूपिमों का वर्गीकरण: विभिन्न प्रकार के रूपिम

रूपिमों को उनकी कार्यक्षमता, स्थान और व्याकरणिक प्रभाव के आधार पर विस्तृत रूप से वर्गीकृत किया जाता है। यहाँ विभिन्न प्रकार के रूपिमों का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत है, जो मुक्त और बद्ध रूपिमों के आधार पर निर्मित है।

#### क. व्युत्पत्तिपरक बनाम विभक्तिपरक रूपिम

यह वर्गीकरण सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह नए शब्द बनाने और व्याकरणिक संबंध दर्शाने की प्रक्रियाओं को अलग करता है।

| विशेषता                 | व्युत्पत्तिपरक रूपिम                                             | विभक्तिपरक रूपिम                                                 |
|-------------------------|------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------|
| <b>कार्य</b>            | भाषा में नए शाब्दिक शब्द बनाना (शब्द-भंडार बढ़ाना)।              | केवल व्याकरणिक संबंध, जैसे: वचन, काल, कारक, पुरुष, लिंग दर्शाना। |
| <b>PoS में परिवर्तन</b> | अक्सर शब्द की श्रेणी (PoS) बदल देता है (जैसे: क्रिया से संज्ञा)। | PoS कभी नहीं बदलता (जैसे: संज्ञा, संज्ञा ही रहेगी)।              |
| <b>स्थान</b>            | मूल शब्द के अधिक निकट जुड़ता है।                                 | यह प्रायः सबसे अंत में जुड़ता है।                                |
| <b>उत्पादकता</b>        | उत्पादकता सीमित होती है (हर प्रत्यय हर शब्द के साथ नहीं जुड़ता)। | उत्पादकता उच्च होती है (प्रायः हर संज्ञा बहुवचन बनेगी)।          |
| <b>उदाहरण</b>           | दया(संज्ञा)+-<br>वान→दयावान(विशेषण)                              | घोड़ा(संज्ञा,एकवचन)+-<br>ओं→घोड़ों(संज्ञा,बहुवचन)                |

#### ख. स्थान के आधार पर बद्ध रूपिम

बद्ध रूपिमों को उनके मूल शब्द से जुड़ने के स्थान के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है:



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

1. **उपसर्ग:** मूल शब्द के आरंभ में जुड़ते हैं।
  - उदाहरण: अ-सत्य, प्र-गति, कु-पुत्र। (ये प्रायः व्युत्पत्तिपरक होते हैं)।
2. **प्रत्यय:** मूल शब्द के अंत में जुड़ते हैं।
  - उदाहरण: लेख-क, बचपन-पन, सुंदर-ता। (ये व्युत्पत्तिपरक और विभक्तिपरक दोनों हो सकते हैं)।
3. **अंतर्प्रत्यय:** ये रूपिम मूल शब्द के बीच में जोड़े जाते हैं।
  - यह प्रक्रिया हिंदी में उत्पादक नहीं है, लेकिन संस्कृत-आधारित धातुओं में कुछ आंतरिक परिवर्तन (जैसे अप्लौट) होते हैं, जिसे कुछ संदर्भों में अंतर्प्रत्यय का अवशेष माना जा सकता है।
4. **परिवर्ती रूपिम:** ये एक ही रूपिम इकाई होते हैं जिसका एक भाग शब्द के आरंभ में और दूसरा भाग अंत में जुड़ता है।
  - हिंदी में यह दुर्लभ है, लेकिन कुछ द्विरुक्ति संरचनाओं में इसके अवशेष देखे जा सकते हैं।

### ग. क्रिया और धातु रूपिम

क्रिया की संरचना रूपिम विज्ञान का केंद्रीय विषय है।

1. **धातु/मूल रूपिम:** क्रिया का वह न्यूनतम हिस्सा जो उसके मूल अर्थ को वहन करता है।
  - उदाहरण: पढ़ (पढ़ना), जा (जाना), लिख (लिखना)।
2. **वक्र रूपिम:** काल, पक्ष, वृत्ति को दर्शाने वाले रूपिम।
  - उदाहरण: 'जा रहा था' में 'रहा' पक्ष (Aspect) का रूपिम है।

### घ. अप्रत्यक्ष और अमूर्त रूपिम

ये वे रूपिम हैं जो भौतिक रूप से उपस्थित नहीं होते, लेकिन व्याकरणिक कार्य करते हैं:

1. **शून्य रूपिम:** जब एक व्याकरणिक संबंध (जैसे: बहुवचन, भूतकाल) को दर्शाने के लिए कोई स्पष्ट रूपग्राम मौजूद नहीं होता, लेकिन संदर्भ के आधार पर उसका अर्थ समझा जाता है।
  - उदाहरण: आजघोड़ाआया → यहाँ 'घोड़ा' एकवचन है, लेकिन इसे दर्शाने के लिए कोई अलग प्रत्यय नहीं लगा है (अर्थात शून्य रूपिम)।
  - कुछ अंग्रेजी शब्दों में 'Sheep' का बहुवचन भी 'Sheep' होता है (शून्य रूपिम)।
2. **खंडित/अखंड रूपिम:** एक ही रूपग्राम जो दो या दो से अधिक रूपिमों के अर्थ को वहन करता है।
  - उदाहरण: संस्कृत या पुरानी हिंदी में संधि-आधारित रूप, जहाँ एक अक्षर दो व्याकरणिक सूचनाएँ देता है। आधुनिक हिंदी में, जटिल क्रियाओं के संयुक्त रूप में यह पाया जा सकता है।
3. **पूरक/परिवर्ती रूपिम:** जब एक ही रूपिम (जैसे: 'जाना') के विभिन्न विकारी रूप पूरी तरह से अलग-अलग मूल शब्दों का उपयोग करते हैं।
  - उदाहरण: हिंदी में 'जाना' क्रिया के भूतकाल में 'गया/गई' का प्रयोग। 'जा' और 'ग' पूरी तरह से अलग मूल रूप हैं, जो एक ही क्रिया के काल रूप को दर्शाते हैं।

## ड. योग की दृष्टि से रूपिम

1. **मूल रूपिम:** किसी भी शब्द का वह केंद्रीय हिस्सा जो उसके लेक्सिकल अर्थ को वहन करता है, और जिसका आगे कोई सार्थक विभाजन संभव न हो। यह सभी उपसर्गों, प्रत्ययों, और विभक्तियों को हटाने के बाद बचा हुआ भाग होता है।
  - उदाहरण: 'अमानवीयता' में मूल रूपिम 'मानव' है।
2. **तने/प्रकांड रूपिम:** वह हिस्सा जिससे विभक्तिपरक रूपिम जुड़ते हैं। इसमें मूल रूपिम के साथ व्युत्पत्तिपरक रूपिम जुड़े हो सकते हैं।
  - उदाहरण: 'अमानवीय' एक तना है, जिससे विभक्तिपरक प्रत्यय (जैसे: 'अमानवीय' + 'ता') जुड़कर 'अमानवीयता' बनाते हैं।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

यह व्यापक वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि रूपिम न केवल भाषा की न्यूनतम अर्थवान इकाई है, बल्कि वह जटिल व्याकरणिक संरचनाओं और शब्द-निर्माण की प्रक्रियाओं का भी केंद्र है। रूपिमों की यह व्यवस्था ही भाषा को उत्पादक और व्यवस्थित बनाती है।

---

## 2.4 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

---

---

### 2.4.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

---

1. रूपिम-विज्ञान का संबंध है:

- क) ध्वनि से
- ख) शब्द की संरचना से
- ग) वाक्य से
- घ) अर्थ से

**उत्तर:** ख) शब्द की संरचना से

2. रूपिम है:

- क) सबसे छोटी ध्वनि इकाई
- ख) सबसे छोटी सार्थक इकाई
- ग) सबसे छोटी वाक्य इकाई
- घ) शब्द का पर्याय

**उत्तर:** ख) सबसे छोटी सार्थक इकाई

3. मुक्त रूपिम का उदाहरण है:

- क) -पन
- ख) लड़का
- ग) -ता
- घ) -इक

**उत्तर:** ख) लड़का

4. बद्ध रूपिम है:

- क) घर
- ख) पुस्तक
- ग) -पन
- घ) मैं

**उत्तर:** ग) -पन



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

**5. स्वनिम है:**

क) सबसे छोटी सार्थक इकाई

ख) सबसे छोटी ध्वनि इकाई

ग) शब्द

घ) वाक्य

**उत्तर:** ख) सबसे छोटी ध्वनि इकाई

**6. 'लड़कपन' शब्द में कितने रूपिम हैं?**

क) एक

ख) दो

ग) तीन

घ) चार

**उत्तर:** ख) दो (लड़क + पन)

**7. व्युत्पत्तिमूलक रूपिम है:**

क) मूल शब्द

ख) प्रत्यय

ग) उपसर्ग

घ) विभक्ति

**उत्तर:** ख) प्रत्यय

**8. रूप-विज्ञान में अध्ययन होता है:**

क) ध्वनियों का

ख) शब्द निर्माण का

ग) वाक्य रचना का

घ) अर्थ परिवर्तन का

**उत्तर:** ख) शब्द निर्माण का

**9. 'पढ़ाई' शब्द में प्रत्यय है:**

क) पढ़

ख) आई

ग) ई

घ) आ

**उत्तर:** ख) आई

**10. संरूप (Allomorph) का अर्थ है:**

क) एक ही रूपिम के विभिन्न रूप

ख) समान अर्थ वाले शब्द

ग) विलोम शब्द

घ) पर्यायवाची शब्द

**उत्तर:** क) एक ही रूपिम के विभिन्न रूप

---

#### 2.4.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

---

1. रूपिम विज्ञान से आप क्या समझते हैं?
2. रूपिम और स्वनिम में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. मुक्त और बद्ध रूपिम को उदाहरण सहित समझाइए।
4. शब्द और रूप (पद) में क्या संबंध है?
5. संरूप की अवधारणा को उदाहरण सहित समझाइए।

---

#### 2.4.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

---

1. रूपिम विज्ञान का परिचय देते हुए शब्द और रूप (पद) के संबंध की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
2. रूपिम की परिभाषा देते हुए इसके स्वरूप और वर्गीकरण का विस्तार से वर्णन कीजिए।
3. रूपिम और स्वनिम में अंतर स्पष्ट करते हुए उदाहरण सहित समझाइए।
4. अर्थतत्त्व, रूप और संरूप की अवधारणाओं का विस्तृत विवेचन कीजिए।
5. हिन्दी भाषा में शब्द निर्माण की प्रक्रिया को रूप विज्ञान के संदर्भ में समझाइए।



---

## मॉड्यूल 3

### वाक्य विज्ञान - वाक्य का परिचय

---

#### संरचना

**इकाई 3.1** वाक्य विज्ञान - वाक्य की परिभाषा

**इकाई 3.2** वाक्य की संरचना और निकटस्थ अवयव

**इकाई 3.3** वाक्य रचना में परिवर्तन

---

#### 3.0 उद्देश्य

---

- वाक्य विज्ञान की अवधारणा, परिभाषा और क्षेत्र को समझना तथा भाषा अध्ययन में इसकी महत्ता को जानना।
- वाक्य की संरचना और उसके प्रमुख घटकों, उद्देश्य और विधेय, का विश्लेषण करना।
- निकटस्थ अवयव विश्लेषण पद्धति के माध्यम से वाक्य के संगठन को समझना।
- वाक्य के प्रकारों का अध्ययन करना और रचना एवं अर्थ के आधार पर उनका वर्गीकरण समझना।
- वाक्य रचना में परिवर्तन की प्रक्रिया, कारण और दिशाओं का अध्ययन कर भाषिक परिवर्तन की प्रकृति को समझना।

---

#### इकाई 3.1: वाक्य विज्ञान - वाक्य की परिभाषा

---

यह खंड हिंदी भाषा के व्याकरण में वाक्य विज्ञान (Syntax) के मूलभूत सिद्धांतों, परिभाषा और क्षेत्र को स्पष्ट करता है, जो भाषा के उच्चतम संगठनात्मक स्तर को समझने के लिए आवश्यक है।

---

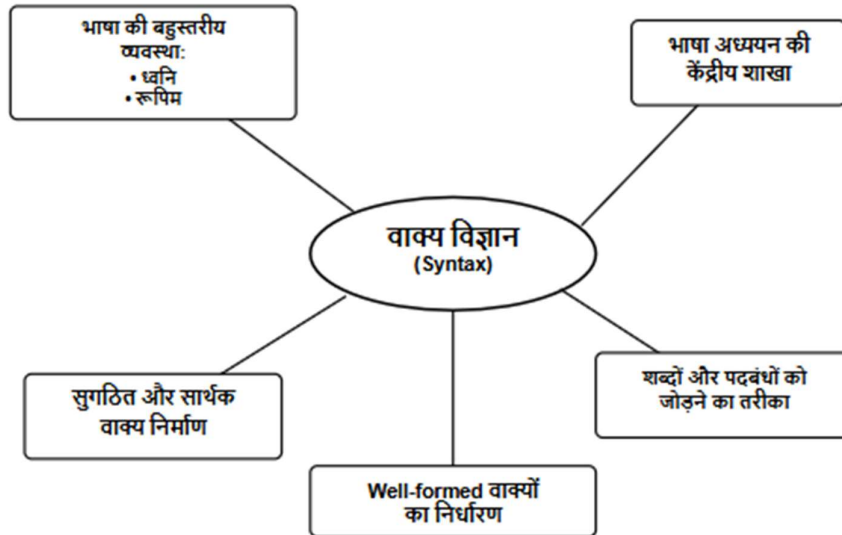
##### 3.1.1 वाक्य विज्ञान का परिचय: परिभाषा और क्षेत्र

---

भाषा एक बहुस्तरीय व्यवस्था है। इसके मुख्य स्तरों में ध्वनि, रूपिम, और वाक्य शामिल हैं। **वाक्य विज्ञान** भाषा के अध्ययन की वह केंद्रीय शाखा है जो यह निर्धारित

करती है कि शब्दों और पदबंधों को एक साथ कैसे जोड़ा जाता है ताकि सुगठित और सार्थक वाक्य बन सकें।

वाक्य विज्ञान -  
वाक्य का  
परिचय



चित्र 3.1: वाक्य विज्ञान

### वाक्य विज्ञान की परिभाषा

'Syntax' शब्द ग्रीक भाषा के *syn* (एक साथ) और *tassein* (व्यवस्था करना) से बना है, जिसका अर्थ है 'एक साथ व्यवस्था करना'। व्याकरण के संदर्भ में, यह शब्दों की वाक्य में व्यवस्थित और नियमबद्ध संरचना का अध्ययन है।

**परिभाषा:** वाक्य विज्ञान व्याकरण की वह शाखा है जिसके अंतर्गत किसी भाषा में शब्दों को जोड़कर पदबंधों, उपवाक्यों, और वाक्यों के निर्माण के नियमों और सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है। यह संरचनात्मकता, क्रमबद्धता, और अंतर्निहित संबंधों पर केंद्रित है।

वाक्य विज्ञान सिर्फ शब्दों के क्रम को ही नहीं देखता, बल्कि यह भी अध्ययन करता है कि ये क्रम अर्थ को कैसे प्रभावित करते हैं, और वक्ता कैसे नियमों के एक सीमित सेट का उपयोग करके अनंत संख्या में नए वाक्यों का निर्माण कर सकता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

## वाक्य विज्ञान का क्षेत्र

वाक्य विज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है और इसमें वे सभी नियम और सिद्धांत शामिल हैं जो शब्दों को सुगठित वाक्यों में बदलने का कार्य करते हैं। इसके प्रमुख अध्ययन क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

### 1. पदक्रम

हिंदी एक **कर्ता-कर्म-क्रिया** क्रम वाली भाषा है। वाक्य विज्ञान इस क्रम के नियमों का अध्ययन करता है और यह भी देखता है कि भावनात्मक या शैलीगत कारणों से इस क्रम में परिवर्तन (जैसे: क्रिया को कर्ता से पहले रखना) होने पर वाक्य की ग्राह्यता और अर्थ पर क्या प्रभाव पड़ता है।

- उदाहरण:
  - सामान्य: रमेश (कर्ता) ने आम (कर्म) खाया (क्रिया)।
  - विचलन: आम खाया रमेश ने। (यह विचलन सूचना के प्रवाह को बदलता है)

### 2. पदबंध संरचना

वाक्य विज्ञान वाक्य को खंडों या पदबंधों (जैसे: संज्ञा पदबंध - NP, क्रिया पदबंध - VP, विशेषण पदबंध - AdjP) में विभाजित करने के नियमों का अध्ययन करता है। यह निर्धारित करता है कि प्रत्येक पदबंध का मुखिया (Head) कौन सा शब्द है और उसके साथ विस्तारक (Modifiers) किस क्रम में जुड़ेंगे।

- उदाहरण:

एक पुरानी, टूटी हुई नाव

→ यह संज्ञा पदबंध (NP) है जिसका मुखिया 'नाव' है, और 'पुरानी, टूटी हुई' उसके विस्तारक हैं।

### 3. उपवाक्य संबंध

वाक्य विज्ञान जटिल वाक्यों (संयुक्त और मिश्रित) में उपवाक्यों के बीच के संबंधों का अध्ययन करता है, जैसे:

- **समानाधिकरण:** स्वतंत्र उपवाक्यों को जोड़ना (जैसे: 'और', 'लेकिन')।
- **व्यधिकरण:** प्रधान और आश्रित उपवाक्यों के संबंध (जैसे: 'कि', 'जब', 'यदि')।

### 4. व्याकरणिक संबंध और प्रकार्य

यह अध्ययन करता है कि वाक्य में शब्द कौन सी व्याकरणिक भूमिका निभा रहे हैं (जैसे: कर्ता, कर्म, पूरक)।

- **उदाहरण:** हिंदी में कारक चिह्नों का उपयोग इन व्याकरणिक संबंधों को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है।

### 5. वाक्य रूपांतरण

यह अध्ययन करता है कि एक वाक्य रूप को नियमबद्ध तरीके से दूसरे वाक्य रूप में कैसे बदला जाता है, जैसे:

- सक्रिय से निष्क्रिय
- कथनात्मक से प्रश्नवाचक या नकारात्मक

### 6. वाक्य की अस्पष्टता

वाक्य विज्ञान उन संरचनाओं का विश्लेषण करता है जहाँ शब्दों का क्रम या उनकी समूहन प्रक्रिया एक से अधिक अर्थ उत्पन्न करती है।



### 3.1.2 वाक्य की परिभाषा: विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ

वाक्य विज्ञान के केंद्र में वाक्य की अवधारणा है, लेकिन 'वाक्य' को परिभाषित करना सरल नहीं है। विभिन्न व्याकरणिक और भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोणों ने वाक्य को अलग-अलग मानदंडों के आधार पर परिभाषित किया है।

#### क. भारतीय पारंपरिक दृष्टिकोण

भारतीय व्याकरण और दर्शन में वाक्य को तीन मूलभूत तत्वों से युक्त माना गया है। आचार्य विश्वनाथ (साहित्य दर्पण) और अन्य दार्शनिकों ने ये तीन गुण आवश्यक बताए हैं:

##### 1. आकांक्षा

- **परिभाषा:** वाक्य के एक पद को सुनकर दूसरे पद को जानने की स्वाभाविक इच्छा। अर्थात्, पद एक दूसरे के बिना अधूरे होते हैं और अर्थ को पूरा करने के लिए एक दूसरे की अपेक्षा करते हैं।
- **उदाहरण:** यदि कोई कहे "खाता है", तो श्रोता तुरंत जानना चाहेगा कि 'कौन' खाता है और 'क्या' खाता है।

##### 2. योग्यता

- **परिभाषा:** वाक्य में प्रयुक्त पदों के अर्थों में परस्पर संगति या अनुकूलता होनी चाहिए।
- **उदाहरण:** "आग से सींचता है" - यह पदक्रम की दृष्टि से सही हो सकता है, लेकिन अर्थ की दृष्टि से असंगत है क्योंकि आग में सींचने की योग्यता नहीं है। सही वाक्य होगा: "पानी से सींचता है।"

##### 3. आसक्ति/सन्निधि

- **परिभाषा:** वाक्य के पदों को उच्चारण या लेखन में बिना अनावश्यक विलंब के एक दूसरे के निकट होना चाहिए, ताकि उनके अर्थों का बोध आसानी से हो सके।

- **उदाहरण:** यदि कर्ता आज बोला जाए और क्रिया कल, तो वह वाक्य नहीं माना जाएगा।

## ख. आधुनिक हिंदी व्याकरणिक दृष्टिकोण

आधुनिक हिंदी व्याकरण में विद्वानों ने वाक्य को उसके पूर्ण अर्थ और अभिव्यक्ति की क्षमता के आधार पर परिभाषित किया है:

### 1. आचार्य कामताप्रसाद गुरु

इन्हें हिंदी व्याकरण का मानक स्रोत माना जाता है।

- **परिभाषा:** "जिस समूह से पूरा अभिप्राय प्रकट हो, उसे वाक्य कहते हैं।"
- **विशेषता:** इन्होंने वाक्य में **समापिका क्रिया** की अनिवार्यता पर जोर दिया, क्योंकि यह पूर्ण अभिप्राय प्रकट करने के लिए आवश्यक है।

### 2. डॉ. भोलानाथ तिवारी

- **परिभाषा:** "पद (शब्द) अपने में निरर्थक होते हैं, पर वाक्य में आकर सार्थक बन जाते हैं। भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है, पर सबसे बड़ी सार्थक इकाई वाक्य है।"
- **विशेषता:** तिवारी जी वाक्य को भाषा की **सबसे बड़ी सार्थक इकाई** मानते हैं, जो वक्ता के सम्पूर्ण विचार को वहन करती है।

## ग. पश्चिमी भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण

पश्चिमी भाषा विज्ञान में, विशेषकर 20वीं शताब्दी में, वाक्य की परिभाषा संरचना और उसके निर्माण की क्षमता के आधार पर दी गई।

### 1. लियोनार्ड ब्लूमफील्ड

संरचनावादी दृष्टिकोण के प्रणेता।



- **परिभाषा:** ब्लूमफील्ड ने वाक्य को "सबसे बड़ा स्वतंत्र भाषिक रूप" माना, जो किसी अन्य भाषिक रूप का घटक नहीं होता। वाक्य को आगे दो निकटस्थ अवयवों में विभाजित किया जाता है।
- **विशेषता:** उनकी परिभाषा वाक्य की **संरचनात्मक सीमा** और **स्वतन्त्रता** पर ज़ोर देती है।

## 2. नोआम चॉम्स्की

रूपांतरणात्मक-जननात्मक व्याकरण के जनक।

### नोम चॉम्स्की और वाक्य की परिभाषा एवं विशेषताएँ

भाषाविज्ञान के क्षेत्र में नोम चॉम्स्की का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और अद्वितीय है। उन्होंने पारंपरिक व्याकरण की सीमाओं को चुनौती दी और भाषा को केवल बाहरी रूप में देखने के बजाय इसे मानसिक संरचना के रूप में समझने का प्रयास किया। चॉम्स्की के लिए वाक्य केवल ध्वनि या लिखित रूप में संप्रेषित होने वाली सूचना नहीं है, बल्कि यह एक मानसिक रचना है। उनका मत है कि प्रत्येक भाषा में व्याकरणिक नियमों का एक परिमित समूह होता है, जो अनंत संख्या में सुगठित वाक्यों का निर्माण करने की क्षमता रखता है। अर्थात् भाषा केवल दोहराव और पूर्व निर्धारित वाक्यों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक उत्पादक और रचनात्मक तंत्र है।

चॉम्स्की के अनुसार, वाक्य की यह विशेषता कि वह अनंत संख्या में नए वाक्यों का निर्माण कर सकता है, इसे पारंपरिक व्याकरण से अलग बनाती है। पारंपरिक व्याकरण मुख्य रूप से पहले से प्रयुक्त वाक्यों के संग्रह और उनके नियमों का वर्णन करता था। जबकि चॉम्स्की ने इसे मानसिक प्रक्रिया के रूप में देखा, जिसमें मानव मस्तिष्क के भीतर एक अंतर्निहित संरचना काम करती है। इस दृष्टिकोण को उन्होंने 'सृजनात्मक व्याकरण' कहा। सृजनात्मक व्याकरण का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार सीमित नियमों से अनंत संभावनाओं वाले वाक्य उत्पन्न हो सकते हैं। चॉम्स्की ने वाक्य को समझने के लिए विशेष रूप से तीन प्रमुख अवधारणाओं का प्रयोग किया: उत्पादकता, गहरी संरचना, और सतही संरचना।

## उत्पादकता

उत्पादकता का अर्थ है कि वाक्य में वह क्षमता मौजूद होती है, जिसके माध्यम से नए और पहले कभी न सुने गए वाक्यों का निर्माण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कोई बच्चा या कोई वयस्क नई कल्पनाओं या घटनाओं के बारे में बिना किसी पूर्व अनुभव के वाक्य बना सकता है। यह केवल शब्दों के संयोजन या पहले सुने गए वाक्यों की नकल नहीं है। चॉम्स्की के अनुसार, यह क्षमता मनुष्य की भाषा में जन्मजात है और इसे 'जन्मजात व्याकरण' (Innate Grammar) कहा जाता है। उत्पादकता के कारण मानव भाषा हमेशा गतिशील रहती है, क्योंकि यह सीमित शब्दावली और नियमों से अनंत संभावनाएँ उत्पन्न कर सकती है।

उत्पादकता की विशेषता यह भी है कि यह भाषा को रचनात्मक बनाती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति कहता है, "गगन ने अपने कुत्ते को लाल रंग का जूता पहनाया," तो यह वाक्य नए है और पहले कभी सुनाया या लिखा नहीं गया। फिर भी, यह व्याकरणिक रूप से सही है और अर्थपूर्ण है। इसका कारण यह है कि मानव मस्तिष्क में व्याकरणिक नियमों का ऐसा नेटवर्क होता है जो नए वाक्यों को समझने और उत्पन्न करने में सक्षम होता है।

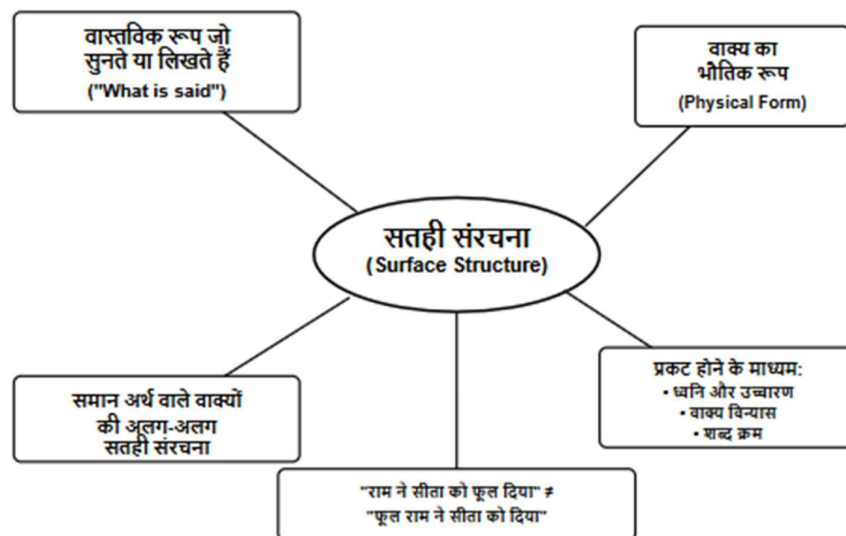
## गहरी संरचना

गहरी संरचना का संबंध वाक्य के अर्थगत और अमूर्त आधार से है। यह वह संरचना है जो वक्ता के मस्तिष्क में होती है और वाक्य के पीछे का मूल संदेश या विचार व्यक्त करती है। इसे समझने के लिए हम इसे वाक्य का 'संपूर्ण अर्थ' कह सकते हैं। गहरी संरचना केवल वाक्य के शब्दों का संयोजन नहीं है, बल्कि यह उस विचार का प्रतिनिधित्व करती है जिसे वक्ता संप्रेषित करना चाहता है। उदाहरण के लिए, वाक्य "राम ने सीता को फूल दिया" में गहरी संरचना वह क्रियात्मक और अर्थगत संबंध है जिसमें राम, सीता और फूल शामिल हैं। यहाँ गहरी संरचना बताती है कि क्रिया "देना" किसके द्वारा, किसे, और क्या वस्तु दी जा रही है। इसे 'What is meant' के रूप में भी देखा जा सकता है। गहरी संरचना भाषा के मस्तिष्कीय और मानसिक पक्ष को दर्शाती है, जो वाक्य के तात्कालिक ध्वनि रूप से अलग होती है।

गहरी संरचना का महत्व यह है कि यह व्याकरणिक नियमों और वाक्य निर्माण की प्रक्रिया का आधार बनती है। किसी भी भाषा में वाक्यों की विविधता इसी गहरी संरचना के कारण संभव होती है। भले ही वाक्य का सतही रूप अलग हो, लेकिन अर्थगत आधार समान रहता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा केवल बाहरी ध्वनि या शब्दों का समूह नहीं है, बल्कि यह मानसिक संरचना और विचार का प्रत्यक्ष रूप है।

### सतही संरचना

सतही संरचना वह वास्तविक रूप है जिसे हम सुनते या लिखते हैं। इसे 'What is said' कहा जाता है। सतही संरचना वाक्य का वह भौतिक रूप है जो ध्वनि, उच्चारण, वाक्य विन्यास और शब्द क्रम के माध्यम से प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, "राम ने सीता को फूल दिया" और "फूल राम ने सीता को दिया" दोनों वाक्यों का अर्थ लगभग समान है, लेकिन सतही संरचना अलग-अलग है।



**चित्र 3.2: सतही संरचना**

सतही संरचना वाक्य को संप्रेषित करने का माध्यम है। यह भाषाव्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह बाहरी दुनिया में अर्थ को पहुँचाती है। गहरी संरचना और सतही संरचना के बीच यह अंतर भाषाविज्ञान के अध्ययन के लिए अहम है।

चॉम्स्की ने यह दिखाया कि विभिन्न सतही रूपों के बावजूद, वाक्यों की गहरी संरचना समान हो सकती है, जिससे भाषा की लचीलापन और रचनात्मकता स्पष्ट होती है।

### गहरी और सतही संरचना के बीच संबंध

चॉम्स्की के अनुसार, गहरी संरचना और सतही संरचना के बीच एक नियमबद्ध संबंध होता है। गहरी संरचना से वाक्य का अर्थ उत्पन्न होता है और उसके माध्यम से विभिन्न सतही रूपों का निर्माण संभव होता है। यह प्रक्रिया मानव मस्तिष्क में स्वतः होती है और भाषाई उत्पादन का मूल तंत्र है। उदाहरण स्वरूप, गहरी संरचना "राम ने सीता को फूल दिया" से विभिन्न सतही रूप जैसे "सीता को राम ने फूल दिया," "फूल राम ने सीता को दिया," आदि उत्पन्न हो सकते हैं। इस प्रकार, सतही संरचना गहरी संरचना का रूपांतर है, और यह भाषाई विविधता की व्याख्या करता है।

### चॉम्स्की का भाषाविज्ञान में योगदान

नोम चॉम्स्की का योगदान पारंपरिक व्याकरण और संरचनात्मक भाषाविज्ञान से काफी भिन्न और गहन है। उन्होंने भाषा को केवल बाहरी रूप में देखने के बजाय इसे मानसिक प्रक्रिया के रूप में समझाया। उनका मत है कि मनुष्य में भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है, जिसे 'यूनिवर्सल ग्रामर' कहा जाता है। यह विचार इस बात को स्पष्ट करता है कि भाषा का अध्ययन केवल शब्द और वाक्य संरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव मस्तिष्क और उसकी मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन से जुड़ा है।

चॉम्स्की के अनुसार, भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह मानव विचार और चेतना की अभिव्यक्ति का साधन भी है। वाक्यों की उत्पादकता, गहरी संरचना और सतही संरचना इस बात को दर्शाती हैं कि मानव भाषा अनंत संभावनाओं वाली, रचनात्मक और अर्थपूर्ण प्रणाली है। यह दृष्टिकोण भाषाविज्ञान में नई सोच और अनुसंधान के लिए आधार बनता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

## भाषा के मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक आयाम

चॉम्स्की का सिद्धांत केवल भाषाविज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक आयाम भी हैं। भाषा की गहरी संरचना और उत्पादकता से यह स्पष्ट होता है कि बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता प्राकृतिक और सहज होती है। शिक्षकों और भाषा प्रशिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे बच्चों को केवल शब्दों और व्याकरणिक नियमों तक सीमित न रखें, बल्कि उन्हें नए वाक्य और विचार उत्पन्न करने की स्वतंत्रता दें। इससे भाषा का वास्तविक विकास होता है और संप्रेषण क्षमता बढ़ती है।

साथ ही, चॉम्स्की की विचारधारा इस बात पर जोर देती है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह मानसिक विकास और तर्कशीलता को भी प्रभावित करती है। बच्चों में भाषा के माध्यम से सोचने की क्षमता, कल्पना और रचनात्मकता का विकास होता है। गहरी संरचना और सतही संरचना के अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि भाषा केवल सामाजिक व्यवहार का साधन नहीं है, बल्कि यह मानसिक संरचना का अभिन्न हिस्सा है।

संक्षेप में, नोम चॉम्स्की ने भाषा और वाक्य की परिभाषा को पूरी तरह से बदल दिया। उनके अनुसार, वाक्य केवल शब्दों का समूह नहीं है, बल्कि यह मानसिक संरचना और रचनात्मक प्रक्रिया का परिणाम है। वाक्य की तीन प्रमुख विशेषताएँ, उत्पादकता, गहरी संरचना और सतही संरचना, भाषा की अनंत संभावनाओं और मानसिक प्रक्रियाओं को स्पष्ट करती हैं। उत्पादकता वाक्य की नवीनता और रचनात्मकता को दर्शाती है, गहरी संरचना वाक्य के अर्थगत आधार और मानसिक विचार को उजागर करती है, और सतही संरचना वाक्य के वास्तविक ध्वनि या लिखित रूप को प्रदर्शित करती है। चॉम्स्की के दृष्टिकोण ने न केवल भाषाविज्ञान के क्षेत्र में क्रांति लाई, बल्कि शिक्षा, मनोविज्ञान और मानव संज्ञान के अध्ययन में भी नई दिशा दी। उनकी यह धारणा कि भाषा जन्मजात और मानसिक संरचना से जुड़ी है, आज भी भाषाविज्ञान और मनोविज्ञान के अध्ययन में मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में प्रयोग की जाती है। भाषा की यह सृजनात्मक और अर्थपूर्ण दृष्टि मानव संज्ञान और संचार की गहरी समझ प्रदान करती है।



वाक्य विज्ञान -  
वाक्य का  
परिचय

इस प्रकार, चॉम्स्की का भाषाविज्ञान केवल व्याकरण का अध्ययन नहीं, बल्कि मानव मस्तिष्क, सोच, संज्ञान और संचार की जटिल प्रक्रियाओं का समग्र अध्ययन है। वाक्य की उत्पादकता, गहरी संरचना और सतही संरचना न केवल भाषा की रचनात्मकता को दर्शाती हैं, बल्कि यह मानव चेतना और मानसिक क्षमता की अद्भुतता को भी उद्घाटित करती हैं।

### **निष्कर्ष: एक संश्लेषित परिभाषा**

विभिन्न दृष्टिकोणों को समाहित करते हुए, हम वाक्य की एक संश्लेषित परिभाषा दे सकते हैं:

वाक्य भाषा की वह सबसे बड़ी और स्वतंत्र व्याकरणिक इकाई है जो वक्ता के एक पूर्ण विचार, भाव या संदेश को व्यक्त करती है। इसका निर्माण नियमों के एक निश्चित समूह के अनुसार होता है, जिसमें आकांक्षा, योग्यता और आसक्ति जैसे तत्व विद्यमान होते हैं, और जो कर्ता, कर्म, क्रिया के व्यवस्थित संयोजन से अर्थ की पूर्णता प्रदान करता है।

यह विस्तृत अध्ययन वाक्य विज्ञान के क्षेत्र और विभिन्न परिभाषकों के विचारों को स्पष्ट करता है।

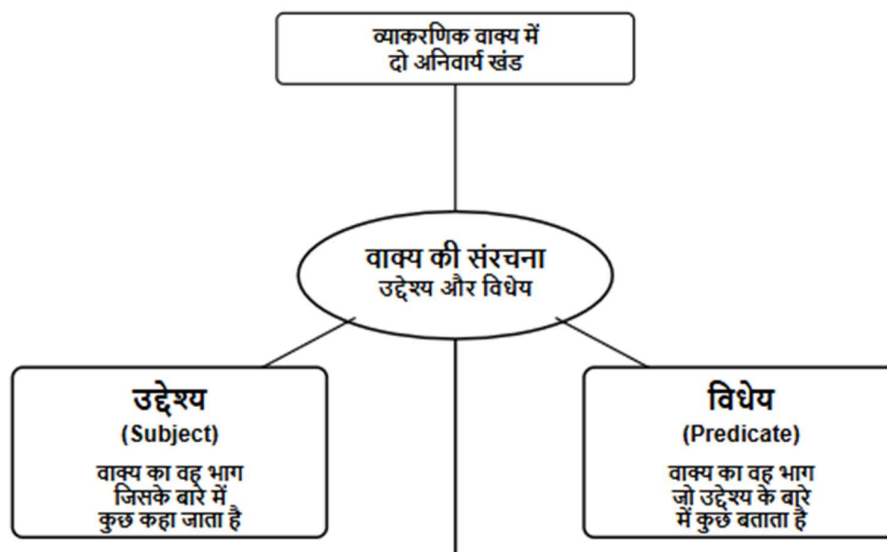


## इकाई 3.2: वाक्य की संरचना और निकटस्थ अवयव

यह दस्तावेज़ हिंदी भाषा के वाक्य-विन्यास (Syntax) के तीन मुख्य घटकों पर गहन प्रकाश डालता है: वाक्य की संरचना (उद्देश्य और विधेय), निकटस्थ अवयव विश्लेषण की विधि, और रचना तथा अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार।

### 3.2.1 वाक्य की संरचना: उद्देश्य और विधेय

प्रत्येक व्याकरणिक वाक्य में दो अनिवार्य खंड होते हैं जिनके बिना वाक्य की संकल्पना अधूरी है। ये खंड हैं उद्देश्य और विधेय।



चित्र 3.3: वाक्य की संरचना

### वाक्य की परिभाषा

वाक्य शब्दों का वह व्यवस्थित और सार्थक समूह है जो वक्ता के विचारों और भावनाओं को पूर्ण रूप से व्यक्त करता है। वाक्य की दो अनिवार्य शर्तें हैं:

1. **सार्थकता:** शब्दों का सही अर्थ होना चाहिए।
2. **क्रमबद्धता/व्यवस्था:** शब्द एक निश्चित व्याकरणिक क्रम में व्यवस्थित होने चाहिए (हिंदी में सामान्यतः कर्ता-कर्म-क्रिया का क्रम)।

## 1. उद्देश्य

वाक्य का वह भाग जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, **उद्देश्य** कहलाता है। यह सामान्यतः कर्ता (कर्ता कारक) या उसका विस्तार होता है।

### क. उद्देश्य के घटक

उद्देश्य के मुख्य रूप से दो घटक होते हैं:

#### 1. कर्ता/मुख्य उद्देश्य:

- यह वह संज्ञा या सर्वनाम होता है जो वाक्य में क्रिया को संपादित करता है या जिसके विषय में सूचना दी जाती है।
- **उदाहरण:** रमेश पत्र लिखता है। (रमेश मुख्य उद्देश्य है)

#### 2. कर्ता का विस्तारक / उद्देश्य विस्तार:

- ये वे शब्द या पदबंध होते हैं जो मुख्य उद्देश्य (कर्ता) के अर्थ को स्पष्ट करते हैं, उसकी विशेषता बताते हैं या उसे सीमित करते हैं। यह अक्सर विशेषण या संबंध कारक के रूप में कार्य करता है।
- **उदाहरण:** तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा जीत गया। ('तेज़ दौड़ने वाला' उद्देश्य विस्तार है)

**उद्देश्य के कुछ विस्तृत उदाहरण:**

| वाक्य                           | उद्देश्य        | मुख्य उद्देश्य | उद्देश्य विस्तार              |
|---------------------------------|-----------------|----------------|-------------------------------|
| ईमानदार लोग हमेशा सफल होते हैं। | ईमानदार लोग     | लोग            | ईमानदार (विशेषण)              |
| घर का मालिक आज शहर गया है।      | घर का मालिक     | मालिक          | घर का (संबंध कारक)            |
| वह जो कल आया था मेरा भाई है।    | वह जो कल आया था | वह             | जो कल आया था (विशेषण उपवाक्य) |



## 2. विधेय

वाक्य का वह भाग जो उद्देश्य के विषय में कुछ कहता है या बताता है, **विधेय** कहलाता है। विधेय में मुख्य रूप से क्रिया (Verb) और उससे संबंधित अन्य पद जैसे कर्म, पूरक और क्रिया-विशेषण विस्तारक शामिल होते हैं।

### ख. विधेय के घटक

विधेय के कई घटक हो सकते हैं, जो वाक्य की जटिलता पर निर्भर करते हैं:

#### 1. क्रिया (Kriya) / मुख्य विधेय:

- यह वह शब्द है जो उद्देश्य द्वारा किए गए कार्य या उसकी स्थिति को दर्शाता है। यह विधेय का अनिवार्य अंग है।
- उदाहरण: रमेश पत्र लिखता है।

#### 2. कर्म (Karm) / वस्तु (Object):

- वह जिस पर क्रिया का फल (प्रभाव) पड़ता है। यह सकर्मक क्रियाओं में आवश्यक होता है।
- उदाहरण: रमेश पत्र लिखता है।

#### 3. कर्म का विस्तारक (Karm ka Vistarak):

- वे शब्द जो कर्म की विशेषता बताते हैं या उसके अर्थ को स्पष्ट करते हैं।
- उदाहरण: वह एक मीठा आम खा रहा है। (एक मीठा - कर्म विस्तार)

#### 4. क्रिया का विस्तारक (Kriya ka Vistarak):

- वे शब्द या पदबंध जो क्रिया के होने के ढंग, समय, स्थान या कारण को बताते हैं। इन्हें क्रियाविशेषण या क्रियाविशेषण पदबंध भी कहा जाता है।
- उदाहरण: वह धीरे-धीरे बोलता है। (धीरे-धीरे - क्रिया विस्तार)

#### 5. पूरक (Purak) / Complement:

- यह वह पद या पदबंध होता है जो उद्देश्य या कर्म के अर्थ को पूर्ण करने के लिए आवश्यक होता है, खासकर अपूर्ण क्रियाओं (जैसे होना, बनना, रहना) के साथ।
- उदाहरण: राम ईमानदार है। (ईमानदार - उद्देश्य पूरक)
- लोगों ने मोहन को शिक्षक बनाया। (शिक्षक - कर्म पूरक)

## विधेय के कुछ विस्तृत उदाहरण:

वाक्य विज्ञान -  
वाक्य का  
परिचय



| वाक्य                                | विधेय                        | क्रिया    | कर्म | क्रिया विस्तार                      |
|--------------------------------------|------------------------------|-----------|------|-------------------------------------|
| बच्चा तेज़ी से गेंद फेंकता है।       | तेज़ी से गेंद फेंकता है      | फेंकता है | गेंद | तेज़ी से                            |
| हमारी टीम ने कल एक रोमांचक मैच जीता। | कल एक रोमांचक मैच जीता       | जीता      | मैच  | कल (समय)                            |
| किसान सुबह-सुबह अपने खेत पर पहुँचा।  | सुबह-सुबह अपने खेत पर पहुँचा | पहुँचा    | -    | सुबह-सुबह, अपने खेत पर (समय, स्थान) |

## उद्देश्य और विधेय का महत्व

उद्देश्य और विधेय का विभाजन वाक्य संरचना के अध्ययन की नींव है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि वाक्य में *किसके बारे में* बात हो रही है (उद्देश्य) और *क्या* बात हो रही है (विधेय)। यह विभाजन वाक्य विश्लेषण की पहली और सबसे बड़ी काट (कट) होती है।

### 3.2.2 निकटस्थ अवयव वाक्य विश्लेषण की विधि

निकटस्थ अवयव विश्लेषण एक संरचनात्मक भाषावैज्ञानिक विधि है जिसका उपयोग किसी वाक्य की आंतरिक, पदानुक्रमित संरचना को प्रकट करने के लिए किया जाता है। इसकी शुरुआत अमेरिकी भाषाविद् लियोनार्ड ब्लूमफील्ड ने की थी और यह मुख्य रूप से पदबंध संरचना व्याकरण का आधार है।

## निकटस्थ अवयव की परिभाषा

निकटस्थ अवयव किसी बड़ी व्याकरणिक इकाई (जैसे वाक्य) के वे दो सबसे बड़े और तात्कालिक घटक होते हैं, जिनमें उस इकाई को विभाजित किया जा सकता है। यह विभाजन तब तक जारी रहता है जब तक कि वाक्य के सबसे छोटे अर्थपूर्ण घटक, यानी रूपिम, तक न पहुँचा जाए।



## विश्लेषण की विधि

विश्लेषण को **दोहरी काट की विधि** भी कहा जाता है। यह विधि वाक्य को क्रमिक रूप से दो-दो घटकों में विभाजित करती है, जो निम्नलिखित चरणों का पालन करती है:

### चरण 1: उद्देश्य-विधेय विभाजन

वाक्य को सबसे पहले उसके दो मुख्य, यानी उद्देश्य खंड और विधेय खंड, में विभाजित किया जाता है।

- उदाहरण: (मेरी छोटी बहन) (धीरे-धीरे एक कविता लिख रही थी)।

### चरण 2: पदबंध विभाजन

पहले चरण में प्राप्त प्रत्येक खंड (उद्देश्य खंड और विधेय खंड) को उनके निकटस्थ अवयवों में विभाजित किया जाता है।

- उद्देश्य खंड: (मेरी छोटी बहन) → (मेरी छोटी) (बहन)।
- विधेय खंड: (धीरे-धीरे एक कविता लिख रही थी) → (धीरे-धीरे) (एक कविता लिख रही थी)।
  - अगली काट: (एक कविता लिख रही थी) → (एक कविता) (लिख रही थी)।

### चरण 3: शब्द विभाजन

यह विभाजन पदबंधों को उनके व्यक्तिगत शब्दों में अलग करता है।

- (एक कविता) → (एक) (कविता)।
- (लिख रही थी) → (लिख रही) (थी)।

## चरण 4: रूपिम विभाजन

सबसे अंतिम स्तर पर, शब्दों को उनके रूपिमों (जैसे: मूल शब्द, प्रत्यय, उपसर्ग, विभक्ति) में विभाजित किया जाता है।

- (लिख रही) → (लिख) (रही)।
- (रही) → (रह) (ई)।

## विश्लेषण का आरेखीय प्रदर्शन

इस विश्लेषण को **कोष्टक विधि** या **ट्री डायग्राम** से दर्शाया जाता है, जो वाक्य की संरचनात्मक पदानुक्रम को स्पष्ट करता है।

- उदाहरण वाक्य: बुद्धिमान छात्र अपनी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं।

### कोष्टक विधि:

[[बुद्धिमान][छात्र]][[अपनी][परीक्षा]][[की तैयारी][कर रहे हैं]]

### पदानुक्रम:

#### 1. वाक्य:

बुद्धिमान छात्र अपनी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं

बुद्धिमान छात्र

(उद्देश्य) +

अपनी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं

(विधेय)



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

बुद्धिमान (विस्तार)

छात्र (मुख्य उद्देश्य)

अपनी परीक्षा की तैयारी (कर्म खंड) + कर रहे हैं (क्रिया खंड)

### विश्लेषण का महत्व

1. **पदानुक्रम का ज्ञान:** यह स्पष्ट करता है कि व्याकरणिक संबंध शब्दों के बीच रैखिक नहीं, बल्कि पदानुक्रमिक होते हैं।
2. **अस्पष्टता का निराकरण:** विश्लेषण वाक्य में संरचनात्मक अस्पष्टता को दूर करने में सहायक है।
  - उदाहरण: "पुराने जूतों वाला आदमी" → क्या "पुराने जूते" हैं या "जूतों वाला आदमी पुराना" है? विश्लेषण काट के स्थान को स्पष्ट करके अर्थ की प्राथमिकता तय करता है।
3. **पदबंधों की पहचान:** यह विभिन्न प्रकार के पदबंधों (संज्ञा पदबंध, क्रिया पदबंध, विशेषण पदबंध) की सीमा और उनके आंतरिक मुखिया (Head) की पहचान करने में मदद करता है।
4. **रूपांतरणात्मक व्याकरण का आधार:** नोआम चॉम्स्की के रूपांतरणात्मक व्याकरण के लिए यह विधि आधार बनी, हालाँकि बाद में चॉम्स्की ने इसकी कमियों को दूर करने के लिए गहरी और सतही संरचना का सिद्धांत दिया।

वाक्य विज्ञान -  
वाक्य का  
परिचय

### विश्लेषण की सीमाएँ

1. **अखंड पदबंध:** यह विधि उन वाक्यों का विश्लेषण नहीं कर पाती जहाँ एक पदबंध के घटक वाक्य में अलग-अलग स्थानों पर बिखरे होते हैं।
  - उदाहरण: "उसने अपनी कहानी को जोर से बताया।" यहाँ क्रिया का विस्तारक ('जोर से') क्रिया से दूर है।
2. **समान स्तर के घटक:** "राम और श्याम" जैसे समन्वयित घटकों में एक स्पष्ट बाइनरी काट देना मुश्किल होता है।

3. **सिर्फ सतही संरचना:** यह केवल वाक्य की दिखाई देने वाली सतही संरचना का विश्लेषण करता है, जबकि दो अलग-अलग सतही संरचनाओं का एक ही गहरा अर्थ हो सकता है।

### 3.2.3 वाक्य के प्रकार: रचना और अर्थ के आधार पर वर्गीकरण

हिंदी व्याकरण में वाक्यों का वर्गीकरण दो मुख्य आधारों पर किया जाता है: **रचना के आधार पर** और **अर्थ के आधार पर**।

#### क. रचना के आधार पर वाक्य भेद

रचना के आधार पर वाक्य के तीन प्रमुख भेद होते हैं: **सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, और मिश्रित वाक्य**।

#### 1. सरल वाक्य

- **परिभाषा:** सरल वाक्य में एक ही उद्देश्य (कर्ता या कर्ता विस्तार) और एक ही विधेय (एक ही मुख्य क्रिया) होता है। इसमें कोई उपवाक्य (Clause) नहीं होता।
- **पहचान:** एक कर्ता और एक समापिका क्रिया (Finite Verb)।
- **उदाहरण:**

भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

- बच्चा खेल रहा है।
- मेहनती और ईमानदार छात्र समय पर आते हैं। (उद्देश्य विस्तार है, पर क्रिया एक ही है)
- वह दौड़कर बाजार गया। (एक क्रिया समापिका है: 'गया'; दूसरी असमापिका है: 'दौड़कर')

#### 2. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

- **परिभाषा:** संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र (समान स्तर के) उपवाक्य होते हैं, जो किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं। ये उपवाक्य अपने आप में पूर्ण अर्थ रखते हैं।



- **योजक शब्द:** और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, अतः, फिर भी, किंतु, परंतु, लेकिन, मगर।
- **उदाहरण:**
  - राम आया, **और** वह चला गया। (दो स्वतंत्र उपवाक्य)
  - तुम पढ़ लो, **या** टेलीविजन देख लो। (दो स्वतंत्र विकल्प)
  - मैंने बहुत प्रयास किया, **लेकिन** सफलता नहीं मिली। (दो स्वतंत्र विरोध दर्शाते हुए)

### 3. मिश्रित वाक्य

- **परिभाषा:** मिश्रित वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और एक या एक से अधिक आश्रित या गौण उपवाक्य होते हैं। आश्रित उपवाक्य अपने अर्थ की पूर्णता के लिए प्रधान उपवाक्य पर निर्भर करता है।
- **योजक शब्द:** यदि...तो, जब...तब, जैसा...वैसा, जो, कि, क्योंकि, ताकि, यद्यपि...तथापि।

#### आश्रित उपवाक्य के प्रकार:

आश्रित उपवाक्य अपने कार्य के आधार पर तीन प्रकार के होते हैं:

### क. संज्ञा आश्रित उपवाक्य:

- ये उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया के कर्ता, कर्म या पूरक के रूप में कार्य करते हैं।
- पहचान: ये अक्सर 'कि' (That) योजक से शुरू होते हैं।
- उदाहरण: मैं जानता हूँ कि वह ईमानदार है। ('कि वह ईमानदार है' क्रिया 'जानता हूँ' का कर्म है।)

### ख. विशेषण आश्रित उपवाक्य:

- ये उपवाक्य प्रधान उपवाक्य में आए किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं।
- पहचान: ये अक्सर संबंधवाचक सर्वनामों जैसे 'जो', 'जिसने', 'जिसे', 'जिसका' से शुरू होते हैं।
- उदाहरण: उस आदमी को बुलाओ जो बाहर खड़ा है। ('जो बाहर खड़ा है' 'आदमी' की विशेषता बता रहा है।)

### ग. क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य:

- ये उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया के समय, स्थान, रीति, परिणाम, कारण या शर्त को बताते हैं।
- पहचान: ये 'जब', 'जहाँ', 'जैसा', 'यद्यपि', 'यदि', 'चूँकि' जैसे अव्ययों से शुरू होते हैं।
- उदाहरण: जब बारिश हो रही थी, तब हम घर में थे। (समयवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य)

### ख. अर्थ के आधार पर वाक्य भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य के पारंपरिक रूप से आठ भेद माने जाते हैं।



### 1. विधानार्थक/कथनात्मक वाक्य (Assertive/Declarative Sentence)

- **परिभाषा:** वे वाक्य जिनसे किसी बात या घटना के होने या होने की सामान्य सूचना मिलती है।
- **उदाहरण:** सूर्य पूर्व में उदय होता है। उसने खाना खा लिया।

### 2. निषेधार्थक/नकारात्मक वाक्य (Negative Sentence)

- **परिभाषा:** वे वाक्य जिनसे किसी बात के न होने या न करने का बोध होता है।
- **पहचान:** 'नहीं', 'न', 'मत' जैसे नकारात्मक शब्द।
- **उदाहरण:** आज मैं स्कूल नहीं जाऊँगा। तुम वहाँ मत बैठो।

### 3. प्रश्नार्थक/प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative Sentence)

- **परिभाषा:** वे वाक्य जिनसे कोई प्रश्न पूछा जाता है या किसी जानकारी की अपेक्षा की जाती है।
- **पहचान:** 'क्या', 'कब', 'कौन', 'कहाँ', 'कैसे' जैसे प्रश्नवाचक शब्द और अंत में प्रश्न चिह्न (?)।
- **उदाहरण:** क्या तुमने अपना गृहकार्य कर लिया है? तुम कल कहाँ गए थे?

### 4. आज्ञार्थक/आज्ञावाचक वाक्य (Imperative Sentence)

- **परिभाषा:** वे वाक्य जिनसे किसी प्रकार की आज्ञा, आदेश, निर्देश, प्रार्थना या उपदेश का भाव प्रकट होता है।
- **उदाहरण:** कृपया शांत बैठिए। (प्रार्थना)। तुम तुरंत यहाँ से जाओ। (आज्ञा)।

### 5. विस्मयादिबोधक/आश्चर्यवाचक वाक्य (Exclamatory Sentence)

- **परिभाषा:** वे वाक्य जिनसे आश्चर्य, हर्ष (खुशी), शोक (दुःख), घृणा, भय, या विस्मय आदि के तीव्र भाव प्रकट होते हैं।
- **पहचान:** विस्मयादिबोधक चिह्न (!)।

- **उदाहरण:** अरे! यह क्या हो गया? वाह! कितना सुंदर दृश्य है!

## 6. इच्छावाचक वाक्य

- **परिभाषा:** वे वाक्य जिनसे वक्ता की इच्छा, आशीर्वाद, कामना या अभिशाप का भाव प्रकट होता है।
- **उदाहरण:** ईश्वर तुम्हें दीर्घायु दे। काश! मैं भी वहाँ जा पाता।

## 7. संदेहवाचक/संभावनावाचक वाक्य

- **परिभाषा:** वे वाक्य जिनसे क्रिया के होने या न होने के संबंध में संदेह या संभावना का बोध होता है।
- **पहचान:** 'शायद', 'संभवतः', 'हो सकता है' जैसे शब्द।
- **उदाहरण:** शायद वह कल आए। **हो सकता है** कि उसने काम पूरा कर लिया हो।

## 8. संकेतवाचक/शर्तवाचक वाक्य

- **परिभाषा:** वे वाक्य जिनमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करता है। ये वाक्य शर्त या संकेत का बोध कराते हैं।
- **पहचान:** 'यदि...तो', 'अगर...तो' जैसे योजक।
- **उदाहरण:** **यदि** तुम मेहनत करते, **तो** सफल हो जाते। **अगर** बारिश होगी, **तो** फसल अच्छी होगी।

वाक्य संरचना का यह विस्तृत अध्ययन दर्शाता है कि हिंदी भाषा एक सुव्यवस्थित व्याकरणिक प्रणाली पर आधारित है।

1. **उद्देश्य और विधेय** वाक्य की मूलभूत द्वि-भागीय संरचना को परिभाषित करते हैं, जहाँ उद्देश्य 'कर्ता खंड' और विधेय 'क्रिया खंड' का प्रतिनिधित्व करता है। इन घटकों का सही विभाजन ही वाक्य-विन्यास विश्लेषण का प्रारंभिक चरण है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

2. **निकटस्थ अवयव विश्लेषण** एक वैज्ञानिक विधि है जो वाक्य की रैखिक प्रकृति से परे जाकर, उसकी गहरी पदानुक्रमिक संरचना को प्रकट करती है। यह भाषा के संगठन को समझने, अस्पष्टता को दूर करने और पदबंधों के मुखिया की पहचान करने में अत्यंत उपयोगी है।
3. **वाक्य के प्रकारों** का वर्गीकरण (रचना और अर्थ दोनों के आधार पर) हमें न केवल वाक्यों को व्यवस्थित करने का फ्रेमवर्क देता है, बल्कि यह भी बताता है कि एक ही विचार को व्यक्त करने के लिए भाषा में कितनी विविधता और लचीलापन मौजूद है। जहाँ **सरल, संयुक्त और मिश्रित** वाक्य संरचना की जटिलता दिखाते हैं, वहीं **आठ अर्थाधारित** भेद वक्ता के इरादे और मनोभावों को स्पष्ट करते हैं।

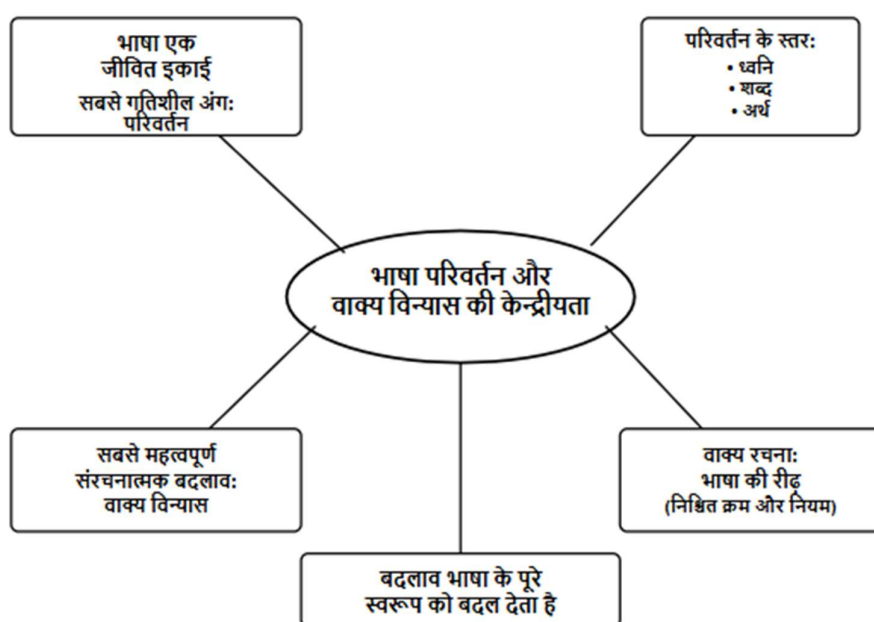
यह दस्तावेज़ संरचनात्मक भाषाविज्ञान और पारंपरिक व्याकरण दोनों के दृष्टिकोण से वाक्य के व्यापक अध्ययन की नींव रखता है।

### इकाई 3.3: वाक्य रचना में परिवर्तन

वाक्य विज्ञान -  
वाक्य का  
परिचय



भाषा एक जीवित इकाई है और इसका सबसे गतिशील अंग है परिवर्तन। यह परिवर्तन ध्वनि, शब्द और अर्थ के स्तर पर तो होता ही है, किंतु सबसे महत्वपूर्ण और संरचनात्मक बदलाव **वाक्य रचना** या **वाक्य विन्यास** के स्तर पर होते हैं। वाक्य रचना किसी भी भाषा की वह रीढ़ होती है जो शब्दों को अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए निश्चित क्रम और नियम प्रदान करती है। इसमें होने वाला कोई भी बदलाव भाषा के पूरे स्वरूप को बदल देता है।



#### चित्र 3.4: भाषा परिवर्तन और वाक्य विन्यास की केन्द्रीयता

वाक्य रचना में परिवर्तन का अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि समय के साथ भाषाएं कैसे विकसित होती हैं, विभिन्न भाषाई समूह एक-दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं, और बोलने वालों के सामूहिक प्रयास एक व्याकरणिक संरचना को किस प्रकार नया रूप देते हैं। यह परिवर्तन न तो आकस्मिक होता है और न ही पूर्णतः यादृच्छिक; यह सामाजिक, ऐतिहासिक और विशुद्ध रूप से भाषिक कारणों से प्रेरित होता है, और यह कुछ निश्चित दिशाओं में आगे बढ़ता है।



इस विस्तृत आलेख में, हम वाक्य रचना में परिवर्तन के मूल कारणों (सामाजिक, ऐतिहासिक, भाषिक) का गहन विश्लेषण करेंगे, जिसके बाद हम इन परिवर्तनों की मुख्य दिशाओं (शब्द क्रम, संरचना और जटिलता में परिवर्तन) का विस्तृत अवलोकन करेंगे।

---

### 3.3.1 वाक्य रचना में परिवर्तन के कारण

---

वाक्य रचना में परिवर्तन के कारण बहुआयामी होते हैं। इन कारणों को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: सामाजिक, ऐतिहासिक और भाषिक। ये श्रेणियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं और प्रायः एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

#### A. सामाजिक कारण

सामाजिक कारण वे हैं जो भाषा के प्रयोगकर्ताओं, यानी समाज और समुदाय की गतिविधियों, संपर्क और आवश्यकताओं से उत्पन्न होते हैं। सामाजिक परिवर्तन हमेशा भाषाई परिवर्तन को उत्प्रेरित करते हैं, और वाक्य रचना इसका अपवाद नहीं है।

#### 1. भाषा संपर्क

वाक्य रचना में परिवर्तन का सबसे प्रबल सामाजिक कारण **भाषा संपर्क** है। जब दो या दो से अधिक भाषाएं बोलने वाले समूह लंबे समय तक एक-दूसरे के निकट आते हैं, जैसे कि व्यापार, उपनिवेशीकरण, प्रवास या वैश्वीकरण के माध्यम से, तो वे एक-दूसरे की वाक्य संरचनाओं को अपनाना शुरू कर देते हैं।

- **संरचनात्मक उधार:** संपर्क के कारण, एक भाषा दूसरी भाषा से न केवल शब्द बल्कि वाक्य बनाने के तरीके भी उधार ले लेती है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के प्रभाव के कारण आधुनिक भारतीय भाषाओं (जैसे हिंदी) में जटिल और लंबी उपवाक्य श्रृंखलाओं का प्रयोग बढ़ा है।
- **द्विभाषिकता का प्रभाव:** द्विभाषिक समुदायों में, वक्ता अनजाने में एक भाषा के वाक्य विन्यास के नियमों को दूसरी भाषा में लागू कर देते हैं, जिससे एक नई या संकरित वाक्य संरचना का जन्म होता है। हिंदी-अंग्रेजी संपर्क से **"Hinglish"** जैसी

संकर भाषाओं में क्रियापद और सहायक क्रियाओं के क्रम में लचीलापन इसी का परिणाम है।

## 2. सामाजिक प्रतिष्ठा और वर्ग भेद

समाज में कुछ वर्गों या समूहों की भाषा को उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त होती है (जैसे उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की भाषा, या शासक वर्ग की भाषा)। निम्न वर्ग या समूह के वक्ता अक्सर उच्च वर्ग की भाषाई विशेषताओं, जिसमें वाक्य रचना भी शामिल है, को अपनाकर सामाजिक स्वीकृति या उन्नति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

- **आदर्श का अनुकरण:** मीडिया, साहित्य और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रचारित **मानक भाषा** की वाक्य संरचना को अन्य बोलियों और रूपों के वक्ता अनुकरण करते हैं। यदि मानक भाषा में निष्क्रिय वाक्य या कुछ विशिष्ट समासीकरण संरचनाएं अधिक प्रयुक्त होती हैं, तो वे आम बोलचाल में भी फैलने लगती हैं।

## 3. तकनीकी विकास और मीडिया

आधुनिक युग में, संचार प्रौद्योगिकियों (इंटरनेट, सोशल मीडिया, मैसेजिंग ऐप्स) ने वाक्य रचना को अभूतपूर्व तरीके से प्रभावित किया है।

- **संक्षिप्तता की माँग:** सोशल मीडिया और मैसेजिंग के कारण, वाक्य रचना में संक्षिप्तता और मितव्ययिता की प्रवृत्ति बढ़ी है। लंबे, औपचारिक वाक्यों के बजाय छोटे, खंडित और सरल वाक्यों का चलन बढ़ा है।
- **इमोजी और विराम चिह्नों का प्रतिस्थापन:** पारंपरिक व्याकरणिक संबंधों को दर्शाने वाले शब्दों या संरचनाओं को इमोजी या गैर-पारंपरिक विराम चिह्नों (जैसे अतिशयोक्तिपूर्ण प्रश्न चिह्न या विस्मयादिबोधक चिह्न) द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है, जिससे वाक्य की औपचारिक संरचना कमजोर हो रही है।



#### 4. भौगोलिक गतिशीलता और नगरीकरण

प्रवास और नगरीकरण के कारण विभिन्न बोली-भाषी एक ही शहरी केंद्र में मिलते हैं। इस मिश्रण के परिणामस्वरूप **बोली मिश्रण** होता है, जहाँ विभिन्न बोलियों की वाक्यगत विशेषताएं एक-दूसरे में घुलमिल जाती हैं, जिससे एक नई, सरल और साझा वाक्य विन्यास वाली **शहरी भाषा** का विकास होता है। इस प्रक्रिया में अक्सर व्याकरणिक संरचनाओं का सरलीकरण होता है ताकि भाषाई संप्रेषण आसान हो सके।

#### B. ऐतिहासिक कारण

ऐतिहासिक कारण वे व्यापक, दीर्घकालिक घटनाएँ हैं जो किसी भाषा के इतिहास को निर्णायक रूप से बदल देती हैं, जैसे कि राजनीतिक उथल-पुथल, साम्राज्यों का उत्थान-पतन, और सांस्कृतिक क्रांतियाँ।

##### 1. राजनीतिक और प्रशासनिक परिवर्तन

किसी क्षेत्र पर एक नई शक्ति का नियंत्रण स्थापित होने पर उस शक्ति की भाषा प्रशासनिक और न्यायिक भाषा बन जाती है। इस कारण अधीनस्थ भाषा पर शासक भाषा की वाक्य संरचना का गहरा प्रभाव पड़ता है।

- **उदाहरण (भारत):** भारत में मुस्लिम शासन के दौरान **फ़ारसी** का प्रभाव पड़ा, जिसने हिंदी-उर्दू की वाक्य रचना में **संबंध कारक** को पहले रखने और कुछ निश्चित मुहावरों के प्रयोग को प्रभावित किया। ब्रिटिश शासन के दौरान **अंग्रेजी** के प्रभाव ने हिंदी में मुद्रण, पत्रकारिता और कानून की भाषा में जटिल संयोजक शब्दों और क्लॉज़ संरचनाओं के प्रयोग को बढ़ाया।
- **राज्य आश्रय:** जब कोई शासक वर्ग किसी विशेष बोली को मानक भाषा के रूप में अपनाता है, तो उस मानक भाषा का वाक्य विन्यास अन्य क्षेत्रीय बोलियों की तुलना में अधिक तेजी से फैलता है।

## 2. भाषाई मानकीकरण और साहित्य

मानकीकरण की प्रक्रिया, जो प्रायः 18वीं और 19वीं शताब्दी में शुरू हुई, भाषा में स्थिरता लाने का प्रयास करती है, किंतु यह स्वयं भी परिवर्तन का कारण बनती है।

- **अति-शुद्धतावाद:** जब वक्ता या लेखक किसी व्याकरणिक नियम को अत्यधिक कठोरता से लागू करने का प्रयास करते हैं, तो वे कभी-कभी ऐसे वाक्य बनाते हैं जो ऐतिहासिक रूप से गलत होते हैं लेकिन समय के साथ मानक बन जाते हैं।
- **साहित्यिक मॉडलों का विकास:** किसी युग के प्रभावशाली साहित्यकार (जैसे हिंदी में भारतेन्दु युग के लेखक) जिस वाक्य संरचना का प्रयोग करते हैं, वह समय के साथ साहित्यिक और औपचारिक भाषा का मानदंड बन जाता है, और फिर धीरे-धीरे बोलचाल की भाषा में भी उतरने लगता है।

## 3. कालानुक्रमिक भाषाई विकास

भाषाओं का विकास एक रैखिक प्रक्रिया में होता है, जिसे कालानुक्रमिक विकास कहते हैं। वाक्य रचना में होने वाले सबसे बड़े परिवर्तन इसी कारण से उत्पन्न होते हैं।

- **संश्लेषणात्मक से विश्लेषणात्मक की ओर:** यह इंडो-आर्यन भाषाओं (जैसे संस्कृत से आधुनिक हिंदी तक) के इतिहास का एक केंद्रीय परिवर्तन है।
  - **संस्कृत:** इसमें विभक्तियाँ शब्दों के साथ जुड़ी होती थीं, जिससे शब्द क्रम (Word Order) अत्यंत लचीला था (उदाहरण: **SOV, SVO, OSV** सभी संभव थे)।
  - **आधुनिक हिंदी (Analytic):** इसमें विभक्तियाँ लगभग समाप्त हो गई हैं और उनके स्थान पर **परसर्गो** (ने, को, से, में) का प्रयोग होता है, जिससे शब्द क्रम **SOV** (कर्ता-कर्म-क्रिया) अधिक निश्चित हो गया है। परसर्गो का उदय, जो मूल रूप से संज्ञाएं या क्रिया विशेषण थे, वाक्य रचना में एक ऐतिहासिक संरचनात्मक परिवर्तन है।



## C. भाषिक कारण

भाषिक कारण भाषा प्रणाली के आंतरिक तनाव और वक्ताओं के संप्रेषण के अंतर्निहित सिद्धांतों से संबंधित होते हैं। ये परिवर्तन व्याकरण के नियमों के बीच सामंजस्य स्थापित करने या संप्रेषण को अधिक कुशल बनाने के लिए होते हैं।

### 1. सादृश्य या समरूपता

सादृश्य वह प्रक्रिया है जिसमें एक व्याकरणिक पैटर्न को दूसरे, कम नियमित पैटर्न पर लागू करके अनियमितताओं को समाप्त करने का प्रयास किया जाता है। यह व्याकरण को अधिक व्यवस्थित और सीखने में आसान बनाता है।

- **नियमितीकरण:** यदि किसी भाषा में अधिकांश क्रियाएं एक निश्चित तरीके से निष्क्रिय वाक्य बनाती हैं, तो अपवाद वाली क्रियाएं भी समय के साथ उस सामान्य पैटर्न को अपना सकती हैं, जिससे निष्क्रिय वाक्य की संरचना में एकरूपता आती है। उदाहरण के लिए, हिंदी में 'जाना' सहायक क्रिया का व्यापक प्रयोग इसी सादृश्य के कारण बढ़ा है।
- **कारक व्यवस्था में बदलाव:** जब दो अलग-अलग व्याकरणिक कारक (जैसे कर्ता कारक और कर्म कारक) के चिह्न किसी संदर्भ में समान हो जाते हैं, तो वक्ता अस्पष्टता से बचने के लिए एक नए कारक चिह्न या शब्द क्रम का उपयोग करना शुरू कर देते हैं।

### 2. मितव्ययिता या अर्थव्यवस्था

वक्ता सहज रूप से कम प्रयास में अधिक जानकारी संप्रेषित करने का प्रयास करते हैं। यह प्रवृत्ति वाक्य रचना में अनावश्यक तत्वों के लोप या संक्षिप्तीकरण को जन्म देती है।

- **लोप और संक्षिप्तीकरण:** अक्सर औपचारिक लेखन में प्रयुक्त होने वाले लंबे वाक्यांश या उपवाक्य बोलचाल की भाषा में छोटे हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, "वह व्यक्ति जो कल यहाँ आया था" के स्थान पर "कल आया हुआ

व्यक्ति" या केवल "कल का व्यक्ति" का प्रयोग मितव्ययिता को दर्शाता है, जिससे सापेक्ष उपवाक्य की संरचना प्रभावित होती है।

वाक्य विज्ञान -  
वाक्य का  
परिचय



- **व्याकरणिकीकरण:** यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ एक पूर्ण अर्थ वाला शब्द (जैसे संज्ञा या क्रिया) समय के साथ एक व्याकरणिक प्रकार्य वाला शब्द (जैसे सहायक क्रिया, परसर्ग, या संयोजक) बन जाता है।
  - **उदाहरण:** हिंदी में 'कर' प्रत्यय का उपयोग। यह मूलतः 'करना' क्रिया का एक रूप था, लेकिन अब यह एक साथ घटित होने वाली क्रियाओं को जोड़ने वाला एक सरल संयोजक बन गया है (जैसे: "वह **खाकर** गया")। यह नई समानांतर क्रिया संरचना वाक्य विन्यास को मौलिक रूप से बदलती है।

### 3. स्पष्टता और बोधगम्यता

यदि कोई वाक्य संरचना किसी भी कारण से अस्पष्ट हो जाती है या समझने में कठिन होती है, तो वक्ता संप्रेषण को स्पष्ट करने के लिए उसे बदलते हैं।

- **अस्पष्ट शब्द क्रम का स्थिरीकरण:** यदि किसी भाषा में विभक्तियों के कमजोर होने के कारण कर्ता और कर्म के बीच भेद करना कठिन हो जाता है, तो वक्ता निश्चित रूप से एक स्थिर शब्द क्रम (जैसे **SOV** या **SVO**) को प्राथमिकता देना शुरू कर देते हैं। यह ऐतिहासिक इंडो-आर्यन भाषाओं में हुए वाक्यगत परिवर्तन का एक प्रमुख चालक था।
- **दोहरी मार्किंग:** कभी-कभी वक्ता स्पष्टता सुनिश्चित करने के लिए एक ही व्याकरणिक संबंध को दो बार चिह्नित करते हैं (जैसे 'उस **को**' के बजाय 'उस **को को**' या एक ही क्रिया को दो बार दोहराना)। यद्यपि यह मितव्ययिता के विरुद्ध है, यह भ्रम को दूर करने के लिए होता है और बाद में मानक वाक्य विन्यास का हिस्सा बन सकता है।



### 3.3.2 परिवर्तन की दिशाएँ

वाक्य रचना में परिवर्तन किसी भी दिशा में हो सकता है, लेकिन भाषाई विकास के इतिहास को देखते हुए, कुछ प्रमुख रुझान और दिशाएँ स्पष्ट रूप से पहचानी जा सकती हैं। ये दिशाएँ परिवर्तन के **कारणों** का अंतिम परिणाम होती हैं।

#### A. शब्द क्रम में परिवर्तन

शब्द क्रम वाक्य रचना का सबसे बुनियादी पहलू है। दुनिया की भाषाओं को मुख्य रूप से **SOV (कर्ता-कर्म-क्रिया)**, **SVO (कर्ता-क्रिया-कर्म)**, **VSO (क्रिया-कर्ता-कर्म)** आदि क्रमों में वर्गीकृत किया जाता है। शब्द क्रम में परिवर्तन एक मौलिक परिवर्तन होता है जो अक्सर भाषा के पूरे टायपोलॉजी (Typology) को बदल देता है।

#### 1. ऐतिहासिक परिवर्तन: SOV से SVO की ओर (या विपरीत)

कई इंडो-यूरोपीय भाषाओं में ऐतिहासिक रूप से **SOV (जैसे लैटिन, प्राचीन ग्रीक)** से **SVO (जैसे अंग्रेजी, फ्रेंच)** की ओर बदलाव देखा गया है। वहीं, इंडो-आर्यन भाषाएँ (जैसे हिंदी) दृढ़ता से **SOV** को बनाए रखती हैं। यह परिवर्तन कारक (Case) व्यवस्था के कमजोर होने से जुड़ा है।

- **कारक का हास और शब्द क्रम का स्थिरीकरण:** जब प्राचीन भाषाओं में संज्ञाओं पर कारक विभक्तियाँ मजबूत थीं (जैसे संस्कृत में), तो यह स्पष्ट था कि कर्ता कौन है और कर्म कौन। इसलिए शब्द क्रम लचीला रह सकता था। जैसे ही विभक्तियाँ कमजोर हुईं (अपभ्रंश और प्राकृत में), शब्द क्रम को अर्थ स्पष्ट करने का प्राथमिक साधन बनना पड़ा, जिससे एक निश्चित क्रम (जैसे **SOV**) स्थापित हो गया।
- **उदाहरण (संस्कृत से हिंदी):**
  - **संस्कृत (लचीला क्रम):** रामः फलम् खादति (राम फल खाता है) - *राम-फल-खाता है* (SOV)
  - **आधुनिक हिंदी (स्थिर क्रम):** राम फल खाता है। (SOV)

- **निष्कर्ष:** हिंदी ने **SOV** को बनाए रखा, लेकिन इसका क्रम **अनिवार्य** हो गया, जबकि संस्कृत में यह **वैकल्पिक** हो सकता था।

## 2. पद-समूहों का क्रम

न केवल मुख्य घटकों (कर्ता, कर्म, क्रिया) का क्रम बदलता है, बल्कि पद-समूहों (Phrases) का आंतरिक क्रम भी बदलता है, जैसे:

- **विशेषण-संज्ञा क्रम:** कुछ भाषाएँ ऐतिहासिक रूप से **संज्ञा-विशेषण** क्रम (जैसे स्पेनिश) से **विशेषण-संज्ञा** क्रम (जैसे अंग्रेजी) में बदल गई हैं। आधुनिक हिंदी में भी अंग्रेजी के प्रभाव से कभी-कभी विशेषणों को संज्ञा के बाद रखने की प्रवृत्ति देखी जाती है (कम औपचारिक प्रयोग में)।
- **संबंध कारक का क्रम:** हिंदी में संबंध कारक हमेशा संज्ञा से पहले आता है (राम की किताब), जबकि कई अन्य भाषाओं में यह बाद में आता है। इस क्रम में भी ऐतिहासिक रूप से परिवर्तन हो सकता है।

## 3. वाक्यगत उधार

भाषा संपर्क के कारण, एक भाषा दूसरी भाषा के विशिष्ट शब्द क्रम को अपना लेती है, खासकर जटिल वाक्यों में। उदाहरण के लिए, हिंदी में अंग्रेजी के प्रभाव से **Subject-Auxiliary Verb Inversion** (प्रश्न बनाने का तरीका) भले ही न आया हो, लेकिन संयोजक क्रियाविशेषणों का क्रम अंग्रेजी जैसा होने लगा है।

### B. संरचना में परिवर्तन

संरचनात्मक परिवर्तन भाषा के मूलभूत व्याकरणिक तंत्रों को प्रभावित करते हैं, विशेष रूप से वह तरीका जिससे शब्दों को उनके व्याकरणिक कार्य के लिए चिह्नित किया जाता है।

#### 1. संश्लेषणात्मक से विश्लेषणात्मक संरचना की ओर

यह वाक्य रचना में होने वाले सबसे बड़े और सबसे आम परिवर्तनों में से एक है, खासकर इंडो-यूरोपीय और इंडो-आर्यन भाषाओं में:



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

- **संश्लेषणात्मक संरचनाएँ:** व्याकरणिक संबंध (कारक, काल, वचन) को दिखाने के लिए शब्द के अंत में विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं (जैसे संस्कृत में 'खादति' - क्रिया + काल/पुरुष/वचन)। वाक्य छोटे, अर्थ सघन और शब्द क्रम में लचीले होते हैं।
- **विश्लेषणात्मक संरचनाएँ:** विभक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं, और उनके स्थान पर अलग-अलग शब्द या **व्याकरणिक कण** (जैसे सहायक क्रियाएँ, परसर्ग, उपवाक्य मार्कर) प्रयोग किए जाते हैं।
  - **उदाहरण:** संस्कृत → हिंदी
    - **संस्कृत:** अपश्यत् (उसने देखा - एक शब्द)
    - **हिंदी:** उसने देख **लिया होगा** (कर्ता + परसर्ग + क्रिया + सहायक क्रिया + सहायक क्रिया)।
  - **परिणाम:** इस परिवर्तन से वाक्य अधिक लंबा हो जाता है, क्रिया वाक्यांश अधिक जटिल हो जाता है, और वाक्य में सहायक क्रियाओं और परसर्गों का महत्व बढ़ जाता है।

## 2. सहायक क्रियाओं और क्रिया वाक्यांशों का विकास

कई भाषाओं में, क्रिया के काल, पक्ष और वृत्ति को दर्शाने के लिए नई सहायक क्रियाओं का विकास होता है।

- **उदाहरण (हिंदी):** हिंदी क्रिया वाक्यांश का विकास। 'था' (भूतकाल) और 'है' (वर्तमान) का प्रयोग मूल क्रिया से अलग होकर सहायक क्रिया के रूप में शुरू हुआ, जिससे हिंदी में संयुक्त क्रिया संरचनाओं का विस्तार हुआ (जैसे: **खा रहा होगा, कर चुका था**)। यह परिवर्तन वाक्य रचना को अधिक सूक्ष्म और अभिव्यंजक बनाता है।

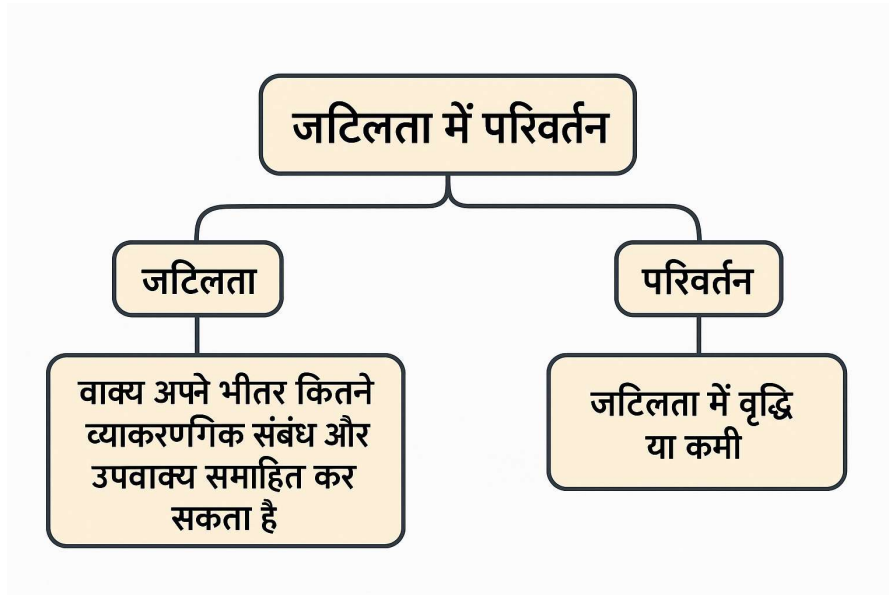
## 3. निष्क्रिय वाक्य संरचनाओं में बदलाव

निष्क्रिय वाक्य संरचना में भी समय के साथ परिवर्तन आता है। कुछ भाषाओं में, निष्क्रिय वाक्य बनाने के तरीके में सरलीकरण होता है, जबकि अन्य में, इसका उपयोग कम हो जाता है।

- **उदाहरण (हिंदी):** संस्कृत में 'य' प्रत्यय का उपयोग होता था (क्रियते)। आधुनिक हिंदी में, 'जाना' क्रिया का प्रयोग निष्क्रियता दर्शाने के लिए सहायक क्रिया के रूप में होता है (जैसे: "काम किया गया")। यह एक संरचनात्मक बदलाव है जिसने निष्क्रिय वाक्य के रूप को पूरी तरह से बदल दिया है।

### c. जटिलता में परिवर्तन

जटिलता से तात्पर्य है कि वाक्य अपने भीतर कितने व्याकरणिक संबंध और उपवाक्य समाहित कर सकता है। परिवर्तन की दिशाएँ जटिलता में वृद्धि या कमी दोनों की ओर हो सकती हैं।



चित्र 3.5: जटिलता में परिवर्तन

#### 1. जटिलता में कमी: सरलीकरण और समानवाक्यीकरण

बोलचाल की भाषा में अक्सर जटिलता कम करने की प्रवृत्ति होती है ताकि तत्काल संप्रेषण आसान हो सके।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

- **उपवाक्य लोप:** लंबे गौण उपवाक्यों को छोटे वाक्यांशों या कृदंतों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है।
- **समानवाक्यीकरण:** जटिल वाक्य (Hypotaxis - जिसमें एक उपवाक्य दूसरे पर निर्भर करता है) के बजाय, सरल वाक्यों को संयोजक शब्दों (जैसे 'और', 'या', 'तो') से जोड़कर समानवाक्य बनाने की प्रवृत्ति बढ़ती है।
  - **उदाहरण:** "चूँकि बारिश हो रही थी, इसलिए मैं बाहर नहीं गया।" (जटिल) की तुलना में "बारिश हो रही थी **और** मैं बाहर नहीं गया।" (समानवाक्यीय)।
  - **कारण:** यह प्रवृत्ति अनौपचारिक और त्वरित संप्रेषण (जैसे मैसेजिंग) में प्रबल होती है।

## 2. जटिलता में वृद्धि: अधीनस्थीकरण और औपचारिक वाक्य विन्यास का विकास

औपचारिक लेखन, अकादमिक (Discourse) और कानूनी दस्तावेजों में, जटिलता अक्सर बढ़ती है। यह मुख्य रूप से लंबी विचार श्रृंखलाओं को एक ही वाक्य में समाहित करने की आवश्यकता के कारण होता है।

- **अधीनस्थ संयोजक शब्दों का विकास:** जैसे-जैसे भाषा विकसित होती है, कारण, परिणाम, उद्देश्य और शर्त को दर्शाने के लिए नए और विशिष्ट अधीनस्थ संयोजक (जैसे 'यद्यपि', 'तथापि', 'फलस्वरूप') विकसित होते हैं। ये शब्द जटिल वाक्यों के निर्माण की क्षमता को बढ़ाते हैं।
- **गैर-परिमित उपवाक्यों का उदय:** कुछ भाषाएं ऐसी संरचनाएं विकसित करती हैं जहाँ क्रिया अपने काल या पुरुष को नहीं दर्शाती है, जिससे वाक्य को संक्षिप्त रूप से जटिल बनाने की अनुमति मिलती है (जैसे अंग्रेजी में Gerunds और Infinitives)।
- **विदेशी भाषाओं का प्रभाव:** अंग्रेजी जैसी **Hypotactic** (जटिल अधीनस्थता वाली) भाषाओं के प्रभाव से हिंदी में भी लंबे, जड़े हुए (Embedded) उपवाक्यों का प्रयोग अकादमिक और पत्रकारिता लेखन में बढ़ा है, जिससे

वाक्य रचना की जटिलता बढ़ी है। यह एक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कारण से प्रेरित भाषिक दिशा है।

वाक्य विज्ञान -  
वाक्य का  
परिचय

### 3. रिलेटिवाइजेशन संरचनाएँ

सापेक्ष उपवाक्य वह संरचना है जिसका उपयोग किसी संज्ञा को संशोधित करने के लिए किया जाता है। परिवर्तन की एक दिशा रिलेटिवाइजेशन की संरचना में बदलाव है:

- **उदाहरण (हिंदी):** हिंदी में सापेक्षीकरण 'जो...सो' या 'जो...वह' संरचना का उपयोग करता है, जिसमें सापेक्ष सर्वनाम और correlative (सहसंबंधी) दोनों का प्रयोग होता है (जैसे: "जो" मेहनत करता है, "वह" सफल होता है)। यह प्राचीन इंडो-आर्यन भाषाओं से विकसित एक विशिष्ट संरचना है। यदि संपर्क के कारण यह संरचना **Wh-Clause** (केवल सापेक्ष सर्वनाम) संरचना से बदल जाती है, तो यह जटिलता की दिशा में एक बड़ा बदलाव होगा।

### निष्कर्ष: वाक्य विन्यास परिवर्तन की अंतरक्रियाशीलता

वाक्य रचना में परिवर्तन एक गतिशील और बहु-कारक प्रक्रिया है। हमने देखा कि **सामाजिक कारण** (भाषा संपर्क, वर्ग का प्रभाव) बाह्य दबाव डालते हैं, **ऐतिहासिक कारण** (राजनीतिक बदलाव, कालानुक्रमिक विकास) दीर्घकालिक ढाँचे को आकार देते हैं, और **भाषिक कारण** (सादृश्य, मितव्ययिता) आंतरिक प्रणाली को सुव्यवस्थित करते हैं।

इन कारणों का अंतिम परिणाम परिवर्तन की तीन प्रमुख दिशाओं में दिखाई देता है:

1. **शब्द क्रम** का लचीलेपन से स्थिरीकरण की ओर या एक क्रम से दूसरे क्रम में बदलना।
2. **संरचना** का संश्लेषणात्मक से विश्लेषणात्मक रूप में विकसित होना (परसर्गों और सहायक क्रियाओं का उदय)।
3. **जटिलता** का आवश्यकतानुसार सरलीकरण (बोलचाल) या अधीनस्थीकरण के माध्यम से वृद्धि (औपचारिक लेखन) होना।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

आधुनिक संदर्भ में, वैश्वीकरण और डिजिटल मीडिया के कारण सामाजिक और भाषिक कारण एक साथ कार्य कर रहे हैं, जिससे हिंदी जैसी भाषाओं में **विश्लेषणात्मकता** और **जटिलता** दोनों में तीव्र वृद्धि हो रही है, खासकर संयोजक शब्दों और विदेशी संरचनाओं के प्रयोग के माध्यम से। वाक्य विन्यास में होने वाले ये परिवर्तन भाषा के भविष्य को परिभाषित करते हैं और यह दर्शाते हैं कि मानवीय संप्रेषण की आवश्यकताएँ ही व्याकरण के नियमों की अंतिम निर्णायक होती हैं।

---

### 3.4 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

---

---

#### 3.4.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

---

1. वाक्य-विज्ञान का संबंध है:

- क) ध्वनि से
- ख) शब्द से
- ग) वाक्य संरचना से
- घ) अर्थ से

**उत्तर:** ग) वाक्य संरचना से

2. वाक्य की सबसे उपयुक्त परिभाषा है:

- क) शब्दों का समूह
- ख) पूर्ण अर्थ प्रकट करने वाली शब्द रचना
- ग) व्याकरण की इकाई
- घ) लिखित भाषा

**उत्तर:** ख) पूर्ण अर्थ प्रकट करने वाली शब्द रचना

3. वाक्य के मुख्य अंग हैं:

- क) केवल उद्देश्य
- ख) केवल विधेय
- ग) उद्देश्य और विधेय
- घ) कर्म

**उत्तर:** ग) उद्देश्य और विधेय

4. निकटस्थ अवयव विश्लेषण (IC Analysis) का संबंध है:

- क) ध्वनि विश्लेषण से
- ख) वाक्य विश्लेषण से
- ग) अर्थ विश्लेषण से
- घ) शब्द विश्लेषण से

**उत्तर:** ख) वाक्य विश्लेषण से



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

5. रचना के आधार पर वाक्य के कितने प्रकार हैं?

- क) दो
- ख) तीन
- ग) चार
- घ) पाँच

**उत्तर:** ख) तीन (सरल, संयुक्त, मिश्र)

6. 'राम खाना खाता है।' इस वाक्य में उद्देश्य है:

- क) राम
- ख) खाना
- ग) खाता है
- घ) है

**उत्तर:** क) राम

7. अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

- क) चार
- ख) छह
- ग) आठ
- घ) दस

**उत्तर:** ग) आठ

8. वाक्य रचना में परिवर्तन का कारण नहीं है:

- क) सामाजिक संपर्क
- ख) समय
- ग) व्याकरण की पुस्तकें
- घ) भाषा संपर्क

**उत्तर:** ग) व्याकरण की पुस्तकें

9. संयुक्त वाक्य में होते हैं:

- क) एक उपवाक्य
- ख) दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य

ग) एक मुख्य और एक आश्रित उपवाक्य

घ) कोई उपवाक्य नहीं

**उत्तर:** ख) दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य

**10.** 'यदि वर्षा होगी तो फसल अच्छी होगी।' यह वाक्य है:

क) सरल वाक्य

ख) संयुक्त वाक्य

ग) मिश्र वाक्य

घ) इनमें से कोई नहीं

**उत्तर:** ग) मिश्र वाक्य

---

### 3.4.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

---

1. वाक्य विज्ञान से आप क्या समझते हैं?
2. वाक्य के मुख्य अंग कौन से हैं? संक्षेप में समझाइए।
3. निकटस्थ अवयव विश्लेषण क्या है?
4. रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार बताइए।
5. वाक्य रचना में परिवर्तन के कोई तीन कारण लिखिए।

---

### 3.4.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

---

1. वाक्य विज्ञान का परिचय देते हुए वाक्य की परिभाषा और संरचना का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. निकटस्थ अवयव विश्लेषण की विधि को उदाहरण सहित समझाइए।
3. वाक्य के विभिन्न प्रकारों (रचना और अर्थ के आधार पर) का विस्तृत परिचय दीजिए।
4. वाक्य रचना में परिवर्तन के कारणों और दिशाओं की विस्तृत विवेचना कीजिए।
5. हिन्दी भाषा में वाक्य संरचना की विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।



---

## मॉड्यूल 4

### अर्थ विज्ञान - शब्दार्थ का परिचय

---

#### संरचना

इकाई 4.1 अर्थ विज्ञान - शब्दार्थ का संबंध विवेचन

इकाई 4.2 अर्थ परिवर्तन

---

#### 4.0 उद्देश्य

---

- अर्थ विज्ञान की अवधारणा, परिभाषा और क्षेत्र को समझना तथा भाषा अध्ययन में इसकी भूमिका को पहचानना।
- शब्द और अर्थ के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण कर भाषा के अर्थ-निर्माण तंत्र को समझना।
- अर्थ के विभिन्न प्रकारों, वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ, का अध्ययन करना।
- अर्थ परिवर्तन की प्रक्रिया, कारणों और दिशाओं का विश्लेषण करना।
- सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अर्थ के विकास और परिवर्तन की समझ विकसित करना।

---

#### इकाई 4.1: अर्थ विज्ञान - शब्दार्थ का संबंध विवेचन

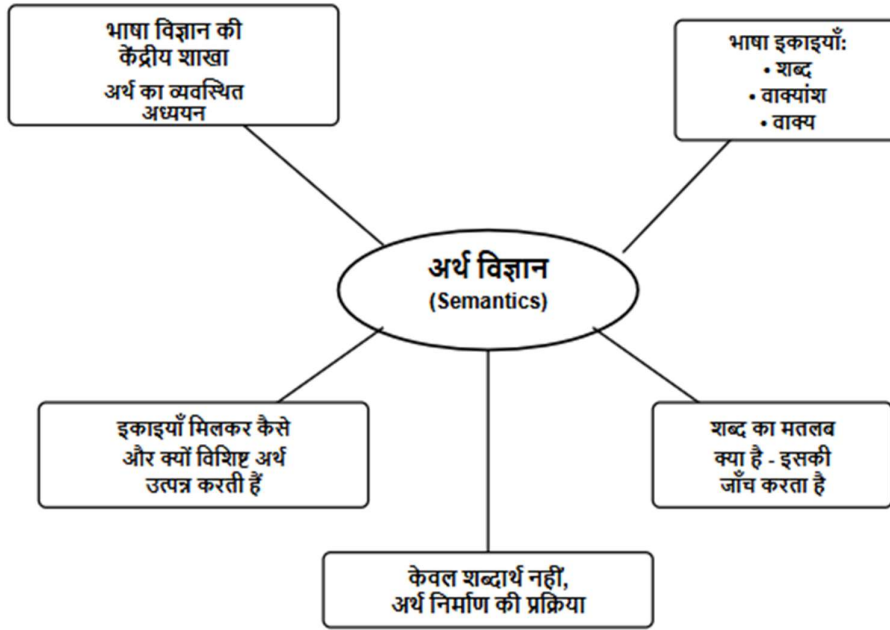
---

---

##### 4.1.1 अर्थ विज्ञान का परिचय

---

अर्थ विज्ञान, जिसे इंग्लिश में **Semantics** कहा जाता है, भाषा विज्ञान की वह केंद्रीय शाखा है जो भाषा इकाइयों, शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों, के अर्थ का व्यवस्थित अध्ययन करती है। यह केवल इस बात की जाँच नहीं करता कि किसी शब्द का क्या मतलब है, बल्कि यह भी अध्ययन करता है कि ये इकाइयाँ मिलकर कैसे और क्यों एक विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करती हैं।



**चित्र 4.1: अर्थ विज्ञान**

भाषा केवल ध्वनि या लेखन का माध्यम नहीं है; यह मानव विचारों, भावनाओं और अनुभवों को कूटबद्ध और विकूटबद्ध करने का सबसे शक्तिशाली उपकरण है। इस संदर्भ में, अर्थ विज्ञान का महत्व भाषाई संरचनाओं से परे जाकर **ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान, और समाजशास्त्र** के क्षेत्रों को स्पर्श करता है।

### अर्थ विज्ञान का विषय-क्षेत्र और केंद्रीय प्रश्न

अर्थ विज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है, जिसे मुख्यतः दो दृष्टिकोणों से देखा जाता है:

1. **भाषाई अर्थ विज्ञान:** यह भाषा की आंतरिक संरचनाओं में अर्थ की अभिव्यक्ति पर केंद्रित है। इसका अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि किसी भाषा के वक्ता अपने शब्दों और वाक्यों के अर्थ को कैसे समझते हैं और उनमें निहितार्थों को कैसे पहचानते हैं।
2. **दार्शनिक अर्थ विज्ञान:** यह मुख्य रूप से सत्य और वास्तविकता के संदर्भ में अर्थ के संबंध की जाँच करता है। इसमें यह प्रश्न शामिल होते हैं कि "अर्थ क्या है?" और "कोई वाक्य कब सत्य होता है?"



अर्थ विज्ञान के अध्ययन में दो मूलभूत अवधारणाएँ केंद्रीय भूमिका निभाती हैं:

## 1. सेन्स और रेफरेंस

अर्थ विज्ञान में किसी भी अभिव्यक्ति के अर्थ को दो भागों में विभाजित किया जाता है:

- **रेफरेंस (Referent/Reference) या वाच्य:** यह उस वास्तविक वस्तु, व्यक्ति, स्थान, या विचार को संदर्भित करता है जो दुनिया में मौजूद है और जिसे शब्द इंगित करता है। उदाहरण के लिए, "भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री" का रेफरेंस एक विशिष्ट व्यक्ति है, जिसका अस्तित्व दुनिया में है।
- **सेन्स (Sense) या भावार्थ:** यह शब्द या अभिव्यक्ति का वह आंतरिक, भाषाई अर्थ है जो वक्ता और श्रोता के मन में बनता है, भले ही कोई वास्तविक रेफरेंस मौजूद न हो। यह रेफरेंस को निर्धारित करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, "सुबह का तारा" और "शाम का तारा" का रेफरेंस एक ही खगोलीय पिंड (शुक्र ग्रह) है, लेकिन उनके सेन्स (यानी उन्हें परिभाषित करने का तरीका) अलग-अलग हैं।

## 2. रचनाधर्मिता का सिद्धांत

यह सिद्धांत बताता है कि एक जटिल भाषाई अभिव्यक्ति (जैसे एक वाक्य) का अर्थ उसके घटकों (शब्दों) के अर्थों और उन घटकों को संयोजित करने के व्याकरणिक नियमों द्वारा निर्धारित होता है। इस सिद्धांत के कारण ही हम अनंत नए वाक्य बना और समझ पाते हैं।

### भारतीय चिंतन में अर्थ विज्ञान की परंपरा

भारतीय दर्शन और व्याकरण, विशेष रूप से पाणिनि के अष्टाध्यायी और भर्तृहरि के वाक्यपदीयम् में, अर्थ विज्ञान पर अत्यंत गहरा काम हुआ है। यहाँ अर्थ को शब्दशक्ति के रूप में समझा गया है। भारतीय परम्परा में मुख्यतः तीन शब्द-शक्तियाँ स्वीकार की गई हैं, जो सीधे तौर पर अर्थ के प्रकारों से जुड़ी हैं:

1. **अभिधा:** वाच्यार्थ का सीधा संबंध।
2. **लक्षणा:** लक्ष्यार्थ का आधार।
3. **व्यंजना:** व्यंग्यार्थ का मूल स्रोत।

यह प्राचीन दृष्टिकोण आधुनिक अर्थ विज्ञान के कई जटिल विचारों को सदियों पहले ही संबोधित कर चुका था।

---

#### 4.1.2 शब्दार्थ का संबंध

---

शब्द और अर्थ का संबंध भाषाई अध्ययन का सबसे जटिल और मूलभूत विषय है। यह संबंध केवल एक शब्दकोशीय परिभाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संस्कृति, समाज और अनुभव से निर्मित होता है।

#### 1. सॉसूर का भाषायी चिन्ह

स्विस भाषाविद् फर्डिनेंड डी सॉसूर ने 'भाषायी चिन्ह' (Sign) के माध्यम से शब्द और अर्थ के संबंध को स्पष्ट किया। उनके अनुसार, भाषायी चिन्ह दो अनिवार्य घटकों से मिलकर बनता है:

- **संकेतक - शब्द/ध्वनि रूप:** यह शब्द का भौतिक रूप है (जैसे, हिंदी में 'मेज' शब्द की ध्वनि या अक्षर विन्यास)।
- **संकेतित - अर्थ/अवधारणा:** यह वह मानसिक अवधारणा या विचार है जो उस ध्वनि रूप से जुड़ी होती है (जैसे, 'चार पायों वाला एक फर्नीचर जिस पर वस्तुएँ रखी जाती हैं' की अवधारणा)।

सॉसूर ने इस संबंध को **यादृच्छिक** बताया। इसका अर्थ है कि किसी विशेष ध्वनि रूप ('मेज') का किसी विशेष अवधारणा से जुड़ना किसी प्राकृतिक नियम पर आधारित नहीं है। यह संबंध केवल भाषायी समुदाय की सहमति पर निर्भर करता है। यही कारण है कि एक ही वस्तु के लिए अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग शब्द होते हैं (जैसे: मेज, Table, Tafel, Mesa)।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

## 2. ओगडेन और रिचर्ड्स का अर्थ त्रिकोण

सी.के. ओगडेन और आई.ए. रिचर्ड्स ने अपने 'अर्थ का त्रिकोण' सिद्धांत में शब्द और वस्तु के बीच सीधे संबंध को नकार दिया। उनके अनुसार, अर्थ की प्रक्रिया में तीन तत्व शामिल होते हैं:

1. **प्रतीक - शब्द**: यह ध्वनि या लिखित रूप है।
2. **विचार - सेन्स**: यह वक्ता के मन में बनने वाली अवधारणा है।
3. **संदर्भित वस्तु - वास्तविक वस्तु**: यह दुनिया में मौजूद वह चीज़ है जिसे शब्द इंगित करता है।

यह त्रिकोण दर्शाता है कि **प्रतीक और संदर्भित वस्तु के बीच कोई सीधा संबंध नहीं होता है (अर्थात्, एक टूटी हुई रेखा)**। शब्द (प्रतीक) केवल विचार (सेन्स) के माध्यम से ही वास्तविक वस्तु (रेफरेंट) से जुड़ता है। यह सिद्धांत स्थापित करता है कि अर्थ एक मानसिक प्रक्रिया है, न कि केवल एक भौतिक संबंध।

## 3. शब्दार्थ में परिवर्तन

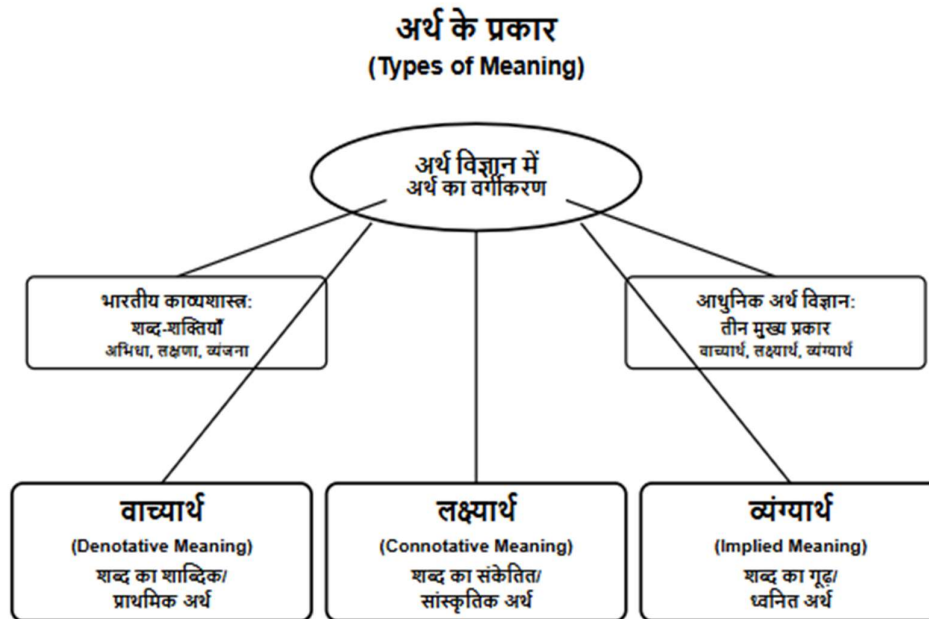
शब्द और अर्थ का संबंध स्थिर नहीं होता, बल्कि यह समय, संस्कृति और समाज के विकास के साथ बदलता रहता है। शब्दार्थ का अध्ययन यह भी बताता है कि किसी शब्द का वर्तमान अर्थ उसके ऐतिहासिक अर्थ से कैसे विकसित हुआ। इसे **डायक्रोनिक अर्थ विज्ञान** कहा जाता है।

उदाहरण के लिए:

- हिंदी शब्द '**दूरभाष**' का मूल अर्थ 'दूर से की गई बात' था, जो अब केवल 'टेलीफोन' नामक उपकरण के लिए संकुचित हो गया है।
- अंग्रेजी में, शब्द '**gay**' का मूल अर्थ 'खुश' या 'प्रसन्न' था, लेकिन अब इसका अर्थ विशेष रूप से 'समलैंगिक' के संदर्भ में परिवर्तित और संकुचित हो गया है।

### 4.1.3 अर्थ के प्रकार

अर्थ विज्ञान में शब्दों और वाक्यों के अर्थ को समझने के लिए, भाषा विज्ञानियों ने अर्थ को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया है। भारतीय काव्यशास्त्र में शब्द-शक्तियों (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना) के समानांतर, आधुनिक अर्थ विज्ञान में अर्थ के तीन मुख्य प्रकार माने जाते हैं:



चित्र 4.2: अर्थ के प्रकार

#### 1. वाच्यार्थ

**वाच्यार्थ** वह मूलभूत, स्थिर और वस्तुनिष्ठ अर्थ है जो किसी शब्द की परिभाषा में निहित होता है। यह अर्थ किसी भी संदर्भ या भावना से प्रभावित नहीं होता और सभी वक्ताओं के लिए समान होता है।

- **आधार:** अभिधा शब्दशक्ति।
- **उदाहरण:** 'घोड़ा' का वाच्यार्थ है 'एक तेज़ दौड़ने वाला चौपाया जानवर'। वाक्य "मेज़ पर एक पेन रखा है" का वाच्यार्थ यही है कि पेन भौतिक रूप से मेज़ के ऊपर स्थित है।



वाच्यार्थ का अध्ययन किसी भी भाषा को सीखने का प्रारंभिक चरण है और इसका प्रयोग वैज्ञानिक, तकनीकी और कानूनी दस्तावेजों में स्पष्टता सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है।

## 2. लक्ष्यार्थ

**लक्ष्यार्थ** वह अर्थ है जो वाच्यार्थ से अलग होता है और संदर्भ, प्रयोग या सांस्कृतिक जुड़ाव के कारण उत्पन्न होता है। यह अर्थ भावनात्मक, सामाजिक या सांस्कृतिक हो सकता है।

- **आधार:** लक्षणा शब्दशक्ति।
- **उत्पत्ति:** जब वाच्यार्थ से वक्ता का अभिप्राय स्पष्ट नहीं होता या वह बाधित हो जाता है, तब लक्ष्यार्थ की आवश्यकता पड़ती है।
- **उदाहरण:** यदि किसी आलसी व्यक्ति को कहा जाए: "तुम तो बिल्कुल गधे हो।"
  - **वाच्यार्थ:** 'वह व्यक्ति एक जानवर (गधा) है।' (असंगत)
  - **लक्ष्यार्थ:** 'वह व्यक्ति मूर्ख या अत्यधिक परिश्रम न करने वाला है।' (गधे से जुड़ी मूर्खता की अवधारणा)।

लक्ष्यार्थ भाषा को लचीलापन और अभिव्यक्ति की गहराई प्रदान करता है।

## 3. व्यंग्यार्थ

**व्यंग्यार्थ** वह अर्थ है जो वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ दोनों से भिन्न होता है, और यह वक्ता के अभिप्राय पर आधारित होता है। यह अर्थ अक्सर हास्य, व्यंग्य, तंज या गहरे भावनात्मक अर्थ को व्यक्त करता है।

- **आधार:** व्यंजना शब्दशक्ति।
- **विशेषता:** व्यंग्यार्थ को समझने के लिए श्रोता को वक्ता के लहजे, संदर्भ और सामाजिक ज्ञान की आवश्यकता होती है।
- **उदाहरण:** मान लीजिए एक छात्र परीक्षा में फेल हो गया और शिक्षक ने उससे कहा: "वाह! तुमने तो कमाल कर दिया!"

- **वाच्यार्थ:** छात्र ने अद्भुत कार्य किया।
- **लक्ष्यार्थ:** छात्र ने बहुत अच्छा नहीं किया।
- **व्यंग्यार्थ:** शिक्षक छात्र की विफलता पर व्यंग्य कर रहा है, यह दर्शाता है कि उसका प्रदर्शन निराशाजनक है।

व्यंग्यार्थ का प्रयोग साहित्य और दैनिक बातचीत में भावनाओं और आलोचनाओं को सूक्ष्म और प्रभावशाली तरीके से संप्रेषित करने के लिए किया जाता है।

---

#### 4.1.4 वाक्यार्थ विज्ञान और सत्यता की शर्तें

---

अर्थ विज्ञान केवल शब्दों के अर्थ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अध्ययन करता है कि वाक्य किस प्रकार अर्थ की सबसे बड़ी और पूर्ण इकाई बनाते हैं। इसे **वाक्यार्थ विज्ञान** कहते हैं।

#### वाक्यार्थ का सिद्धांत

वाक्य के अर्थ को समझने का सबसे प्रचलित तरीका **सत्यता-शर्तों का सिद्धांत** है। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी वाक्य के अर्थ को जानने का अर्थ है यह जानना कि किन परिस्थितियों में वह वाक्य सत्य होगा।

उदाहरण:

- **वाक्य:** "सूर्य पूर्व से उगता है।"
- **सत्यता शर्त:** यदि वास्तविक दुनिया में, सूर्य वास्तव में पूर्व दिशा से उदय होता है, तो यह वाक्य सत्य है।
- **वाक्य:** "सभी कुत्ते उड़ सकते हैं।"
- **सत्यता शर्त:** यदि वास्तविक दुनिया में एक भी कुत्ता उड़ नहीं सकता, तो यह वाक्य असत्य है।

यह सिद्धांत अर्थ को वस्तुनिष्ठ और तार्किक रूप से परिभाषित करने का प्रयास करता है, जिसका उपयोग विशेष रूप से दार्शनिक और औपचारिक अर्थ विज्ञान में किया जाता है।



#### 4.1.5 अर्थ संबंधी संबंध

अर्थ विज्ञान इस बात की भी जाँच करता है कि एक शब्द का अर्थ अन्य शब्दों के अर्थ से कैसे संबंधित है। ये संबंध भाषाई संरचनाओं को समझने और शब्दकोशों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं। प्रमुख अर्थ संबंधी संबंध निम्नलिखित हैं:

##### 1. पर्यायवाची

दो या दो से अधिक शब्द जिनका अर्थ समान हो, पर्यायवाची कहलाते हैं।

- **उदाहरण:** 'सूर्य', 'रवि', 'दिनकर' (हालांकि पूर्ण पर्याय कोई नहीं होता, क्योंकि प्रत्येक शब्द का सूक्ष्म लक्ष्यार्थ भिन्न होता है)।

##### 2. विलोमार्थी

दो शब्द जो एक दूसरे के विपरीत अर्थ व्यक्त करते हैं।

- **उदाहरण:** 'गरम' और 'ठंडा', 'अमीर' और 'गरीब'।

##### 3. अनेकार्थकता

जब एक ही शब्द के कई संबंधित अर्थ होते हैं, तो यह अनेकार्थकता कहलाती है। ये अर्थ एक ही मूल अवधारणा से विकसित होते हैं।

- **उदाहरण:** 'पत्र' शब्द का अर्थ 'पत्ता', 'चिट्ठी', या 'समाचार पत्र' हो सकता है। ये सभी अर्थ किसी चीज़ को ढकने या जानकारी देने से जुड़े हैं।

##### 4. समरूपता

जब दो अलग-अलग शब्दों का उच्चारण या लेखन समान हो, लेकिन उनके अर्थ पूरी तरह से भिन्न और असंबंधित हों।

- **उदाहरण:** 'कल' (बीता हुआ/आने वाला दिन) और 'कल' (मशीन का पुर्जा)।

## 5. अधोनाम/पदानुक्रम

एक शब्द का अर्थ जब दूसरे शब्द के अर्थ में समाहित होता है। 'हाइपोनिम' अधिक विशिष्ट शब्द है और 'हाइपरनिम' अधिक सामान्य शब्द है।

- **उदाहरण:** 'गुलाब', 'कमल', और 'चमेली' **अधोनाम** हैं, और उनका **अधिनाम** 'फूल' है।

### 4.1.6 संदर्भ अर्थ विज्ञान: अर्थ का प्रयोग

अर्थ विज्ञान 'क्या कहा गया' के शाब्दिक अर्थ पर केंद्रित है, जबकि **संदर्भ अर्थ विज्ञान** 'कहाँ, कब और क्यों कहा गया' के माध्यम से वक्ता के वास्तविक अभिप्राय का अध्ययन करता है। यह अर्थ के उस हिस्से से संबंधित है जो संदर्भ, पृष्ठभूमि ज्ञान और पारस्परिक क्रिया पर निर्भर करता है।

### अर्थ विज्ञान और संदर्भ अर्थ विज्ञान में अंतर

| विशेषता                 | अर्थ विज्ञान                          | संदर्भ अर्थ विज्ञान                                                           |
|-------------------------|---------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------|
| <b>अध्ययन का केंद्र</b> | भाषा की आंतरिक संरचना में निहित अर्थ। | भाषा के प्रयोग से उत्पन्न अर्थ (वक्ता का अभिप्राय)।                           |
| <b>स्वतंत्रता</b>       | संदर्भ-निरपेक्ष                       | संदर्भ-सापेक्ष                                                                |
| <b>उदाहरण</b>           | "कमरा गर्म है।"<br>(तात्विक तथ्य)     | "कमरा गर्म है।"<br>(इसका मतलब हो सकता है: 'खिड़की खोल दो' या 'तापमान कम करो') |



## केंद्रीय अवधारणाएँ

### 1. निहितार्थ

दार्शनिक **एच.पी. ग्राइस (H.P. Grice)** ने **सहयोग के सिद्धांत** की अवधारणा दी, जिसके अनुसार संचार सफल होता है क्योंकि वक्ता और श्रोता एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। निहितार्थ वह अर्थ है जो वक्ता जानबूझकर कहता नहीं है, लेकिन श्रोता उसे संदर्भ के आधार पर निकाल लेता है।

- **उदाहरण:**

- **A:** "तुमने रमेश को कैसा पाया?"
- **B:** "वह समय पर आता है और उसकी लिखावट बहुत अच्छी है।"
- **निहितार्थ:** B रमेश के पेशेवर कौशल के बारे में कुछ भी अच्छा नहीं सोचता है, क्योंकि उसने केवल मामूली चीज़ों का उल्लेख किया।

### 2. भाषण कार्य

यह सिद्धांत (ऑस्टिन और सरेल द्वारा विकसित) मानता है कि भाषा केवल सूचना देने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह कार्य करने का भी माध्यम है।

- **उदाहरण:** "मैं तुम्हें इस कार्य के लिए नियुक्त करता हूँ।" (यह एक घोषणा का कार्य है)

---

#### 4.1.7 अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएँ

---

जैसा कि पहले चर्चा की गई, शब्दार्थ समय के साथ विकसित होते हैं। ये परिवर्तन यादृच्छिक नहीं होते, बल्कि निश्चित सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई कारणों से प्रेरित होते हैं।

### अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

1. **अर्थ-विस्तार:** जब किसी शब्द का अर्थ संकीर्ण से व्यापक हो जाता है।

- **उदाहरण:** हिंदी शब्द 'तेल' मूल रूप से केवल 'तिल' के बीज से निकाले गए पदार्थ के लिए इस्तेमाल होता था। आज यह किसी भी बीज (जैसे सरसों, नारियल) या खनिज से निकाले गए तरल चिकने पदार्थ (जैसे पेट्रोलियम) के लिए इस्तेमाल होता है।
- 2. **अर्थ-संकोच:** जब किसी शब्द का अर्थ व्यापक से संकीर्ण हो जाता है।
  - **उदाहरण:** हिंदी शब्द 'मृग' का प्राचीन अर्थ 'कोई भी जंगली जानवर' (जंगल में घूमने वाला) था। अब इसका अर्थ संकुचित होकर केवल 'हिरण' तक सीमित हो गया है।
- 3. **अर्थोत्कर्ष:** जब किसी शब्द का अर्थ नकारात्मक या तटस्थ से सकारात्मक या अधिक सम्मानजनक हो जाता है।
  - **उदाहरण:** हिंदी शब्द 'साहस' का पुराना अर्थ केवल 'जोरदार बल प्रयोग' था, जबकि अब इसका अर्थ 'वीरता' या 'हिम्मत' (सकारात्मक भाव) है।
- 4. **अर्थापकर्ष:** जब किसी शब्द का अर्थ सकारात्मक या तटस्थ से नकारात्मक या अपमानजनक हो जाता है।
  - **उदाहरण:** संस्कृत शब्द 'दक्ष' का मूल अर्थ 'कुशल' या 'योग्य' था। हिंदी में, शब्द 'दिखावा' (जो कभी तटस्थ था) अब नकारात्मक अर्थ रखता है (केवल बाहरी प्रदर्शन)।

### अर्थ परिवर्तन के कारण

- **सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताएँ:** नए आविष्कार या सामाजिक परिवर्तन नए अर्थों को जन्म देते हैं। (जैसे 'इंटरनेट' और 'डिजिटल' शब्दों का विकास)।
- **भाषाई अर्थ की बचत:** लोग छोटे और परिचित शब्दों का उपयोग करना पसंद करते हैं, जिससे उनके अर्थ का विस्तार या संकोच होता है।
- **मनोवैज्ञानिक कारण:** रूपक और उपलक्षण के प्रयोग से अर्थ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरित होता है। (जैसे 'जला-भुना' व्यक्ति - रूपक)।

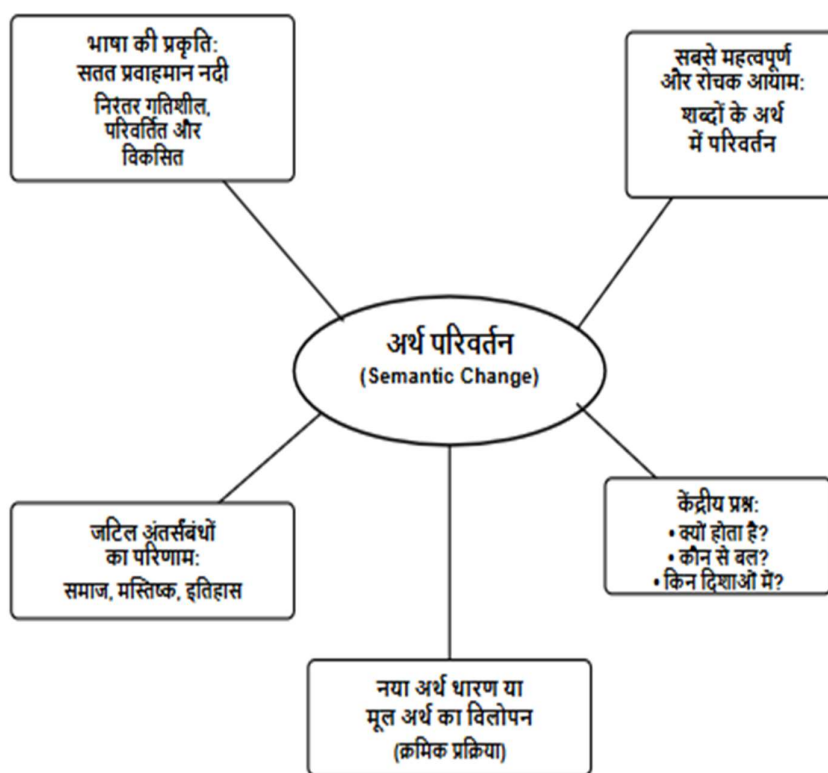


भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

अर्थ विज्ञान भाषा विज्ञान का आधार स्तंभ है, जो हमें यह समझने में मदद करता है कि मानव मस्तिष्क अमूर्त विचारों को ध्वनियों या प्रतीकों के माध्यम से कैसे साझा करता है। यह अध्ययन केवल शब्दकोशीय परिभाषाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह **अर्थ के निर्माण, उसके प्रयोग, और उसके ऐतिहासिक विकास** की जटिल प्रक्रिया को खोलता है। हमने देखा कि अर्थ केवल वाच्यार्थ नहीं है, बल्कि यह लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ के सांस्कृतिक और संदर्भ-आधारित परतों से भी निर्मित होता है। वाक्यार्थ विज्ञान हमें सिखाता है कि बड़े भाषाई ढांचे कैसे काम करते हैं, जबकि संदर्भ अर्थ विज्ञान हमें भाषा के सामाजिक 'कार्य' और 'अभिप्राय' को समझने की क्षमता देता है। अर्थ विज्ञान का यह गहन अध्ययन स्पष्ट करता है कि भाषा एक जीवंत, निरंतर विकसित होने वाली प्रणाली है, जिसका अध्ययन करने का अर्थ स्वयं मानव चेतना और संस्कृति का अध्ययन करना है।

## इकाई 4.2: अर्थ परिवर्तन

भाषा एक सतत प्रवाहमान नदी की तरह होती है। यह किसी स्थिर तालाब की भाँति नहीं, बल्कि निरंतर गतिशील, परिवर्तित और विकसित होती रहती है। भाषा विज्ञान में यह परिवर्तन न केवल ध्वनि और रूप के स्तर पर देखा जाता है, बल्कि इसका सबसे महत्वपूर्ण और रोचक आयाम शब्दों के **अर्थ** में आने वाला परिवर्तन होता है। एक ही शब्द समय के साथ एक नया अर्थ धारण कर लेता है, या अपने मूल अर्थ को पूरी तरह से खो देता है। यह अर्थ परिवर्तन क्यों होता है, इसके पीछे कौन से बल काम करते हैं, और यह किन दिशाओं में घटित होता है, यही भाषाई विकास की केंद्रीय समझ है। यह परिवर्तन अचानक नहीं होता, बल्कि यह समाज, मनुष्य के मस्तिष्क और इतिहास के जटिल अंतर्संबंधों का परिणाम होता है।



चित्र 4.3: अर्थ परिवर्तन



#### 4.2.1 अर्थ परिवर्तन के कारण

शब्दों के अर्थ में परिवर्तन के मूल में तीन प्रमुख कारक होते हैं: सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, और ऐतिहासिक। ये कारक एक साथ या अलग-अलग कार्य करते हुए किसी शब्द के अर्थ को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बदलते रहते हैं। इन कारणों की गहराई में जाने से हमें भाषा की लचीली प्रकृति का ज्ञान होता है।

#### सामाजिक कारण

सामाजिक कारण वे होते हैं जो किसी भाषा समुदाय के सामूहिक जीवन, उसकी संस्कृति, भूगोल, और बाहरी संपर्कों से उपजे होते हैं।

**1. भौतिक वातावरण एवं भौगोलिक परिवर्तन:** जब कोई भाषा-भाषी समूह अपने मूल निवास स्थान से नए भौगोलिक वातावरण में जाता है, तो वहाँ की नई वस्तुओं, पौधों और जानवरों के लिए पुराने शब्दों का प्रयोग करने लगता है। उदाहरण के लिए, "चावल" शब्द का मूल अर्थ संस्कृत में किसी भी अनाज से था, लेकिन भारतीय उपमहाद्वीप में धान की खेती प्रमुख होने के कारण इसका अर्थ संकुचित होकर केवल एक विशेष अनाज के लिए रह गया। इसके विपरीत, यदि किसी वस्तु का भौतिक स्वरूप बदल जाता है, जैसे किसी विशेष प्रकार की कुर्सी का निर्माण बंद हो जाए, तो 'कुर्सी' शब्द का अर्थ नई डिज़ाइन वाली सभी बैठने की वस्तुओं तक विस्तृत हो जाता है।

**2. संस्कृति और नई संस्थाओं का विकास:** समाज में नई संस्थाएँ, रीति-रिवाज, या प्रौद्योगिकी आने पर पुराने शब्द नए अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। 'ट्रेन' शब्द मूलतः एक साधारण 'यात्रा' या 'कतार' के लिए प्रयोग होता था, लेकिन औद्योगिक क्रांति के बाद इसका अर्थ संकुचित होकर भाप या डीजल इंजन से चलने वाले विशेष रेल के डिब्बों के समूह तक सीमित हो गया। इसी प्रकार, 'कोठी' शब्द पहले मिट्टी या पत्थरों से बनी साधारण 'भंडार गृह' या 'कमरे' को दर्शाता था, लेकिन औपनिवेशिक काल में यह शब्द बड़े, शानदार, और यूरोपीय शैली के मकानों के लिए प्रयुक्त होने लगा।

**3. अन्य भाषाओं का संपर्क (भाषा-मिश्रण):** जब दो भिन्न भाषा-भाषी समुदाय एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, तो एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में प्रवेश करते हैं। इस प्रक्रिया में अक्सर शब्दों का अर्थ बदल जाता है। अंग्रेजी का शब्द '**Officer**' हिंदी में आकर जब प्रयोग होता है, तो वह केवल 'अधिकारी' (एक पद) का अर्थ देता है, जबकि मूल अंग्रेजी में इसका अर्थ 'कर्तव्य निभाने वाला' व्यापक होता है। इसी तरह, हिंदी के शब्द जैसे '**जंगल**' और '**गुरु**' अंग्रेजी में प्रवेश करके अपना कुछ सांस्कृतिक भार खोकर विशिष्ट अर्थों में स्थिर हो गए हैं।

**4. ज्ञान या वस्तु का अप्रचलन:** जब कोई वस्तु या अवधारणा समाज से लुप्त हो जाती है, तो उसके लिए प्रयुक्त शब्द या तो लुप्त हो जाता है, या किसी नई मिलती-जुलती वस्तु के लिए प्रयुक्त होने लगता है। प्राचीन भारत में प्रचलित 'यव' (जौ) शब्द, जो अब उतना प्रचलित नहीं है, अब अनेक बोलियों में 'गेहूँ' के लिए या साधारण 'अनाज' के लिए प्रयुक्त होने लगा है।

**5. सामाजिक स्तर का परिवर्तन:** शब्दों के अर्थ का उत्कर्ष या अपकर्ष अक्सर सामाजिक समूहों के बदलते रुतबे को दर्शाता है। एक समय पर '**पंडित**' शब्द का प्रयोग किसी भी प्रकार के 'शिक्षक' या 'ज्ञानी' व्यक्ति के लिए होता था, लेकिन आज यह संकुचित होकर एक विशिष्ट धार्मिक/सामाजिक समूह से जुड़े व्यक्ति को दर्शाने लगा है। वहीं, कभी-कभी निम्न समझी जाने वाली बोली के शब्द मुख्यधारा में आकर सम्मानित अर्थ ग्रहण कर लेते हैं।

### मनोवैज्ञानिक कारण

मनोवैज्ञानिक कारण वे होते हैं जो मनुष्य के सोचने, महसूस करने और संवाद करने के तरीके से उत्पन्न होते हैं। ये कारण मुख्य रूप से लाक्षणिकता, भावनात्मकता और शिष्टता पर आधारित होते हैं।

**1. रूपक एवं लाक्षणिक प्रयोग:** यह अर्थ परिवर्तन का सबसे सामान्य मनोवैज्ञानिक कारण है। वक्ता अपनी बात को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए शब्दों का प्रयोग उनके वास्तविक अर्थ के बजाय किसी अन्य वस्तु या भावना के लिए करने लगता है।



- **रूपक:** जब किसी शब्द का प्रयोग उसके गुणों के कारण किसी दूसरी वस्तु के लिए किया जाता है। जैसे, किसी मूर्ख व्यक्ति को 'गधा' कहना। 'गधा' का मूल अर्थ पशु है, लेकिन मानसिक आलस्य के कारण इसका अर्थ 'मूर्ख' हो गया है (अर्थ-संक्रमण)। इसी प्रकार, किसी वीर व्यक्ति को 'शेर' कहना।
- **लाक्षणिकता:** जब किसी शब्द का प्रयोग उससे जुड़ी हुई किसी अन्य वस्तु के लिए किया जाता है। जैसे, 'पूरा गाँव सो रहा था' में 'गाँव' का अर्थ गाँव के निवासी हैं (अर्थ-संक्रमण)। 'थाली' शब्द का अर्थ मूलतः बर्तन है, लेकिन 'थाली' से तात्पर्य अक्सर 'भोजन' से लिया जाता है।

**२. शिष्टता और भावुकता:** समाज में कुछ ऐसे विषय होते हैं (जैसे मृत्यु, रोग, शारीरिक आवश्यकताएँ) जिन्हें सीधे कहना अशिष्ट माना जाता है। ऐसे में वक्ता अप्रिय सत्य को छिपाने के लिए या कोमल बनाने के लिए अन्य शब्दों का सहारा लेता है। इसे **शिष्ट प्रयोग** कहते हैं।

- मृत्यु के लिए 'स्वर्गवास होना', 'परलोक सिधार जाना' जैसे शब्दों का प्रयोग। 'स्वर्गवास' का मूल अर्थ है स्वर्ग में निवास करना, लेकिन अब यह मृत्यु का पर्याय बन गया है (अर्थ-संक्रमण/उत्कर्ष)।
- 'शौचालय' के लिए 'वॉशरूम' या 'रेस्ट रूम' (आराम कक्ष) जैसे शब्दों का प्रयोग करना, जबकि वहाँ जाने का उद्देश्य आराम करना नहीं होता।

**३. अस्पष्टता और अज्ञानता:** कभी-कभी लोग किसी शब्द के सटीक मूल अर्थ को नहीं जानते और उसका प्रयोग व्यापक या गलत संदर्भ में करने लगते हैं। यह त्रुटि धीरे-धीरे भाषा समुदाय में फैल जाती है और नया अर्थ स्थापित हो जाता है। उदाहरण के लिए, 'अनेक' शब्द का अर्थ है 'एक से अधिक', किंतु कई बार लोग 'विभिन्न' या 'तरह-तरह के' के अर्थ में इसका प्रयोग करते हैं। 'दुर्घटना' का अर्थ केवल बुरी घटना है, लेकिन व्यवहार में यह मुख्य रूप से 'वाहन दुर्घटना' के लिए प्रयुक्त होता है (अर्थ-संकोच)।

**४. भावनाओं की अभिव्यक्ति:** अत्यधिक जोर देने या अपनी भावनाओं को सशक्त रूप से व्यक्त करने के लिए भी अर्थ बदल जाता है। जैसे, 'कितना भयानक खाना था!' में 'भयानक' शब्द का प्रयोग डरावने अर्थ में न होकर 'बहुत अधिक स्वादिष्ट/अच्छा' के

अर्थ में किया जाता है (अर्थ-उत्कर्ष/संक्रमण)। हालांकि यह प्रयोग मानक नहीं है, पर युवाओं की बोलचाल में यह पाया जाता है।

## ऐतिहासिक कारण

ऐतिहासिक कारण वे हैं जो शब्द के मूल संदर्भ, राजनीतिक, धार्मिक या साहित्यिक पृष्ठभूमि में आए मूलभूत परिवर्तनों से उत्पन्न होते हैं।

**१. मूल संदर्भ का लोप या परिवर्तन:** जब शब्द के मूल में स्थित वस्तु या संदर्भ पूरी तरह बदल जाता है। प्राचीन काल में, 'गृह' (गृह) शब्द का अर्थ केवल 'कमरे' या 'भीतरी स्थान' था, लेकिन समय के साथ-साथ यह पूरी 'रिहाइशी इमारत' को दर्शाने लगा (अर्थ-विस्तार)। या इसका विपरीत संकोच भी हो सकता है।

**२. धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव:** धर्म और धार्मिक आंदोलन अक्सर शब्दों को नया और विशिष्ट अर्थ प्रदान करते हैं।

- 'प्रसाद' शब्द का मूल अर्थ था 'कृपा' या 'खुशी', लेकिन हिंदू धर्म में यह शब्द अब 'देवता को चढ़ाया गया और फिर भक्तों में बाँटा गया खाद्य पदार्थ' के लिए संकुचित हो गया है (अर्थ-संकोच)।
- 'सेवा' शब्द का मूल अर्थ 'पीछा करना' या 'उपस्थित होना' था, लेकिन अब यह भक्ति और समर्पण के अर्थ में या नौकरी/ऊँट्टी के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है (अर्थ-संक्रमण)।

**३. भाषाई आवश्यकता और अर्थव्यवस्था:** मनुष्य हमेशा कम शब्दों में अधिक बात कहने की प्रवृत्ति रखता है (भाषाई अर्थव्यवस्था)। इस प्रवृत्ति के कारण, शब्द समूह के स्थान पर एक ही शब्द का प्रयोग होने लगता है और उस शब्द का अर्थ विस्तृत हो जाता है। उदाहरण के लिए, 'पेट्रोलियम से निकाला गया तेल' के स्थान पर केवल 'तेल' (जब संदर्भ स्पष्ट हो) का प्रयोग (अर्थ-संकोच से पहले अर्थ-संक्रमण)।

**४. लेखन या उच्चारण की त्रुटियाँ:** कभी-कभी गलत उच्चारण या गलत वर्तनी के कारण भी अर्थ परिवर्तन हो जाता है, हालाँकि यह अधिक दुर्लभ है। 'तुलसी' शब्द का प्रयोग मूलतः एक पौधे के लिए होता था, लेकिन विभिन्न क्षेत्रीय उच्चारणों के कारण



इसके अर्थ में मामूली बदलाव आ सकता है, हालांकि यह कारण कम महत्वपूर्ण माना जाता है।

#### 4.2.2 अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ

अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ हमें यह बताती हैं कि शब्द का अर्थ किस प्रकार बदला, क्या वह व्यापक हुआ, संकुचित हुआ, या उसका मूल्य (उत्कर्ष/अपकर्ष) बदल गया। अर्थ परिवर्तन की ये पाँच प्रमुख दिशाएँ हैं:

##### 1. अर्थ विस्तार

जब किसी शब्द का अर्थ उसके **मूल अर्थ की अपेक्षा अधिक व्यापक** हो जाता है। यानी, शब्द पहले किसी एक वस्तु या अवधारणा के लिए प्रयुक्त होता था, लेकिन अब वह कई मिलती-जुलती वस्तुओं या पूरे समूह के लिए प्रयुक्त होने लगता है।

##### उदाहरण:

- **तेल (Tail):** संस्कृत में 'तिल' से बना 'तेल' शब्द मूलतः **तिल से निकले हुए रस/स्नेह** के लिए प्रयुक्त होता था। आज 'तेल' शब्द का प्रयोग व्यापक रूप से किया जाता है, जिसमें सरसों का तेल, नारियल का तेल, पेट्रोल (पेट्रोलियम से बना तेल), डीजल, आदि सभी प्रकार के तैलीय पदार्थ शामिल हैं। (यहाँ तिल का अर्थ विस्तारित होकर किसी भी चिकने द्रव तक पहुँच गया)।
- **स्याही (Syahi):** यह शब्द मूलतः **काला रंग** ('स्याह' से बना) दर्शाता था। आज यह शब्द किसी भी रंग की 'लिखने वाली सामग्री' (इंक) के लिए प्रयुक्त होता है, चाहे वह लाल हो, नीला हो या हरा।
- **पत्र (Patra):** इसका मूल अर्थ था 'पत्ता' या 'पंख'। अब इसका अर्थ बढ़कर 'कागज़' (चिट्ठी), 'अखबार' (न्यूजपेपर), 'पंख' या 'बरतन' (पात्र) तक पहुँच गया है।

## 2. अर्थ संकोच

जब किसी शब्द का अर्थ अपने **मूल अर्थ की अपेक्षा अधिक सीमित या संकुचित** हो जाता है। यानी, शब्द पहले किसी बड़े समूह या व्यापक अवधारणा के लिए प्रयुक्त होता था, लेकिन अब वह उस समूह के केवल एक विशिष्ट सदस्य या एक विशेष अवधारणा के लिए ही प्रयुक्त होता है। यह अर्थ विस्तार की विपरीत प्रक्रिया है।

### उदाहरण:

- **मृग (Mriga):** संस्कृत में 'मृग' का अर्थ था **कोई भी जंगली पशु** (जो 'मृगया' यानी शिकार का विषय हो)। आज हिंदी में 'मृग' शब्द संकुचित होकर केवल **एक विशेष पशु 'हिरण'** के लिए प्रयुक्त होता है।
- **सब्जी (Sabji):** यह फारसी शब्द मूलतः 'हरा' या 'हरी वस्तु' को दर्शाता था। हिंदी में इसका अर्थ संकुचित होकर केवल **'खाए जाने वाले हरे पौधे के भाग'** तक सीमित हो गया है।
- **भवन (Bhavan):** संस्कृत में 'भवन' का अर्थ 'होने की क्रिया' या 'सामान्य अस्तित्व' था, लेकिन आज यह केवल **'मकान'** या 'इमारत' (Building) के लिए प्रयुक्त होता है।

## 3. अर्थ-संक्रमण/अर्थान्तरण

जब किसी शब्द का अर्थ अपने **मूल अर्थ को छोड़कर किसी अन्य पूर्णतः भिन्न अर्थ को ग्रहण** कर लेता है, जिसमें मूल अर्थ का संबंध टूट जाता है या बहुत क्षीण हो जाता है। यहाँ न तो विस्तार होता है और न ही संकोच, बल्कि एक प्रकार का स्थानांतरण होता है। यह अक्सर लाक्षणिक या रूपकात्मक प्रयोगों के कारण होता है।

### उदाहरण:

- **असुर (Asur):** वैदिक संस्कृत में 'असुर' (अ+सुर) का अर्थ था **'शक्तिमान'** या 'प्राणवान', और यह शब्द देवताओं (जैसे इंद्र) के लिए भी प्रयुक्त होता था। उत्तर वैदिक काल और पौराणिक आख्यानों के प्रभाव से, इसका अर्थ पूरी तरह से **'देवताओं का विरोधी'** यानी राक्षस या दानव में स्थानांतरित हो गया।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

- **चेला (Chela):** यह मूलतः 'एक प्रकार का गुलाम' या 'सेवक' (दासों की एक जाति) को दर्शाता था। आज इसका अर्थ पूरी तरह से 'गुरु का शिष्य' या 'अनुयायी' में स्थानांतरित हो गया है।
- **पत्र (Patra - The Medium):** 'पत्र' का मूल अर्थ 'पत्ता' था। जब लिखने के लिए कागज़ का उपयोग होने लगा, तो 'पत्ते' पर लिखने की क्रिया के कारण अर्थ स्थानांतरित होकर 'कागज़ पर लिखी गई चिट्ठी' में बदल गया।

#### 4. अर्थ-उत्कर्ष

जब किसी शब्द का अर्थ निम्न या साधारण स्थिति से ऊपर उठकर श्रेष्ठ, सम्मानजनक या उन्नत हो जाता है। यहाँ शब्द के अर्थ की गुणवत्ता में सकारात्मक वृद्धि होती है।

उदाहरण:

- **साहस (Sahasa):** संस्कृत में 'साहस' शब्द मूलतः 'बल प्रयोग' या 'हिंसा' (जैसे किसी को लूट लेना) जैसे नकारात्मक अर्थ में प्रयुक्त होता था। आधुनिक हिंदी में इसका अर्थ उन्नत होकर 'वीरता', 'निर्भीकता' जैसे अत्यंत सकारात्मक गुणों के लिए प्रयुक्त होता है।
- **मुद्रा (Mudra):** यह शब्द मूलतः 'किसी प्रकार की मोहर' या 'आकृति' को दर्शाता था (जैसे हाथों की मुद्रा)। आज इसका अर्थ उत्कृष्ट होकर 'धन', 'रूपया' जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक अवधारणा के लिए प्रयुक्त होता है।
- **कर्मठ (Karmath):** संस्कृत में यह शब्द 'कर्म करने में लगा हुआ' (busy in work) एक साधारण अर्थ रखता था, लेकिन आज यह 'मेहनती', 'लगनशील' जैसे गुणवाचक और प्रशंसनीय अर्थ में प्रयुक्त होता है।

#### 5. अर्थ-अपकर्ष

जब किसी शब्द का अर्थ श्रेष्ठ या साधारण स्थिति से नीचे गिरकर निम्न, अपमानजनक या हीन हो जाता है। यहाँ शब्द के अर्थ की गुणवत्ता में नकारात्मक गिरावट आती है। यह अर्थ-उत्कर्ष की विपरीत प्रक्रिया है।

### उदाहरण:

- **वेश्या (Veśyā):** संस्कृत में 'वेश्या' शब्द का मूल अर्थ था 'घर में प्रवेश करने योग्य स्त्री' (वेश+या) या 'सुंदर स्त्री'। समय के साथ-साथ इसका अर्थ गिरकर 'धन के बदले देह व्यापार करने वाली स्त्री' के लिए प्रयुक्त होने लगा, जो कि एक सामाजिक रूप से हीन अर्थ है।
- **जासूस (Jāsūs):** फारसी में 'जासूस' का अर्थ 'खोज करने वाला', 'समाचार लाने वाला' एक साधारण अर्थ था। आज यह शब्द अक्सर नकारात्मक संदर्भ में 'गुप्तचर', 'भेदिया' के लिए प्रयुक्त होता है, जिसे नैतिक रूप से संदिग्ध माना जाता है।
- **भोंदू (Bhōṇḍū):** यह एक ठेठ शब्द था जिसका मूल अर्थ 'भोला' या 'सीधा-साधा' था, जो एक साधारण स्थिति को दर्शाता था। लेकिन वर्तमान प्रयोग में यह 'मूर्ख', 'निहायत बेवकूफ' जैसे अपमानजनक अर्थ में प्रयुक्त होता है।

अर्थ परिवर्तन भाषा के जीवंत होने का प्रमाण है। शब्द और उनके अर्थ एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं; जैसे-जैसे समाज का दर्पण बदलता है, वैसे-वैसे शब्दों के अर्थों का प्रतिबिंब भी बदल जाता है। यह परिवर्तन सामाजिक आवश्यकताओं, मनुष्य की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति की इच्छा और इतिहास के घटनाक्रमों से प्रेरित होता है। हमने देखा कि कैसे शब्द विस्तार (तेल), संकोच (मृग), संक्रमण (असुर), उत्कर्ष (साहस), और अपकर्ष (वेश्या) जैसी विभिन्न दिशाओं में अपनी यात्रा जारी रखते हैं। इन प्रक्रियाओं का ज्ञान हमें न केवल भाषा विज्ञान को समझने में मदद करता है, बल्कि यह भी बताता है कि हम, भाषा समुदाय के सदस्य के रूप में, शब्दों को कितनी शक्ति प्रदान करते हैं, उन्हें पूजते हैं या उन्हें पतित करते हैं। यह निरंतर गतिशीलता ही यह सुनिश्चित करती है कि भाषा हमेशा समकालीन बनी रहे।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

---

## 4.3 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

---

### 4.3.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

---

1. अर्थ-विज्ञान का संबंध है:

- क) ध्वनि से
- ख) शब्द से
- ग) अर्थ से
- घ) वाक्य से

**उत्तर:** ग) अर्थ से

2. शब्द और अर्थ का संबंध है:

- क) स्वाभाविक
- ख) रूढ़िगत
- ग) आवश्यक
- घ) अनिवार्य

**उत्तर:** ख) रूढ़िगत

3. 'गौ' शब्द का वर्तमान अर्थ है:

- क) पृथ्वी
- ख) गाय
- ग) इंद्रियाँ
- घ) वाणी

**उत्तर:** ख) गाय (अर्थ-संकोच का उदाहरण)

4. अर्थ-विस्तार का उदाहरण है:

- क) गौ (गाय)
- ख) पानी (जल, चमक, सम्मान आदि)
- ग) वृक्ष (पेड़)
- घ) सब सही हैं

**उत्तर:** ख) पानी (जल, चमक, सम्मान आदि)

5. अर्थ-संकोच का उदाहरण है:

- क) गौ
- ख) पानी
- ग) पत्र
- घ) मृग

**उत्तर:** क) गौ (पहले कई अर्थ, अब केवल गाय)

6. अर्थ-उत्कर्ष का उदाहरण है:

- क) मंत्री (पहले सलाहकार, अब उच्च पदाधिकारी)
- ख) गवाह (पहले साक्षी, अब सामान्य अर्थ)
- ग) चमार
- घ) दलित

**उत्तर:** क) मंत्री

7. अर्थ-अपकर्ष का उदाहरण है:

- क) मंत्री
- ख) गवाह (पहले साक्षी का सम्मानजनक अर्थ)
- ग) प्रधानमंत्री
- घ) गुरु

**उत्तर:** ख) गवाह

8. अर्थ-परिवर्तन का कारण नहीं है:

- क) सामाजिक परिवर्तन
- ख) भाषा संपर्क
- ग) व्याकरण के नियम
- घ) मनोवैज्ञानिक कारण

**उत्तर:** ग) व्याकरण के नियम

9. पर्यायवाची शब्दों का अध्ययन किस विज्ञान में होता है?

- क) ध्वनि-विज्ञान
- ख) रूप-विज्ञान



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

ग) अर्थ-विज्ञान

घ) वाक्य-विज्ञान

**उत्तर:** ग) अर्थ-विज्ञान

**10. अर्थ-संक्रमण का अर्थ है:**

क) अर्थ का विस्तार

ख) अर्थ का संकोच

ग) एक अर्थ से दूसरे अर्थ में परिवर्तन

घ) अर्थ का उत्कर्ष

**उत्तर:** ग) एक अर्थ से दूसरे अर्थ में परिवर्तन

---

#### 4.3.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

---

1. अर्थ विज्ञान से आप क्या समझते हैं?
2. शब्द और अर्थ के संबंध को संक्षेप में समझाइए।
3. अर्थ परिवर्तन के कोई तीन कारण लिखिए।
4. अर्थ विस्तार और अर्थ संकोच में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. अर्थ-उत्कर्ष और अर्थ-अपकर्ष को उदाहरण सहित समझाइए।

---

#### 4.3.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

---

1. अर्थ विज्ञान का परिचय देते हुए शब्दार्थ के संबंध की विस्तृत विवेचना कीजिए।
2. अर्थ परिवर्तन के विभिन्न कारणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
3. अर्थ परिवर्तन की विभिन्न दिशाओं (अर्थ विस्तार, अर्थ संकोच, अर्थ-संक्रमण, अर्थ-उत्कर्ष, अर्थ-अपकर्ष) को उदाहरण सहित समझाइए।
4. शब्द और अर्थ के संबंध की प्रकृति पर विस्तृत निबंध लिखिए।
5. हिन्दी भाषा में अर्थ परिवर्तन के उदाहरणों को देते हुए इसकी प्रक्रिया को समझाइए।

---

## मॉड्यूल 5

### भाषा विज्ञान की प्रमुख शाखाएँ

---

#### संरचना

- इकाई 5.1 समाज भाषा विज्ञान
- इकाई 5.2 शैली विज्ञान और कोश विज्ञान
- इकाई 5.3 संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी
- इकाई 5.4 नागरी लिपि का मानकीकरण
- इकाई 5.5 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

---

#### 5.0 उद्देश्य

- समाज भाषा विज्ञान की अवधारणा को समझना तथा भाषा और समाज के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण करना।
- शैली विज्ञान और कोश विज्ञान की मूल अवधारणाओं को जानना तथा भाषा की शैलियों और शब्दकोश निर्माण की प्रक्रिया को समझना।
- संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका, संवैधानिक स्थिति और महत्व को समझना।
- नागरी लिपि के मानकीकरण की प्रक्रिया, इतिहास और मानक वर्तनी के नियमों का अध्ययन करना।
- देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताओं और वैज्ञानिकता को पहचानना तथा उसकी व्यावहारिक श्रेष्ठता को समझना।

---

#### इकाई 5.1: समाज भाषा विज्ञान

---

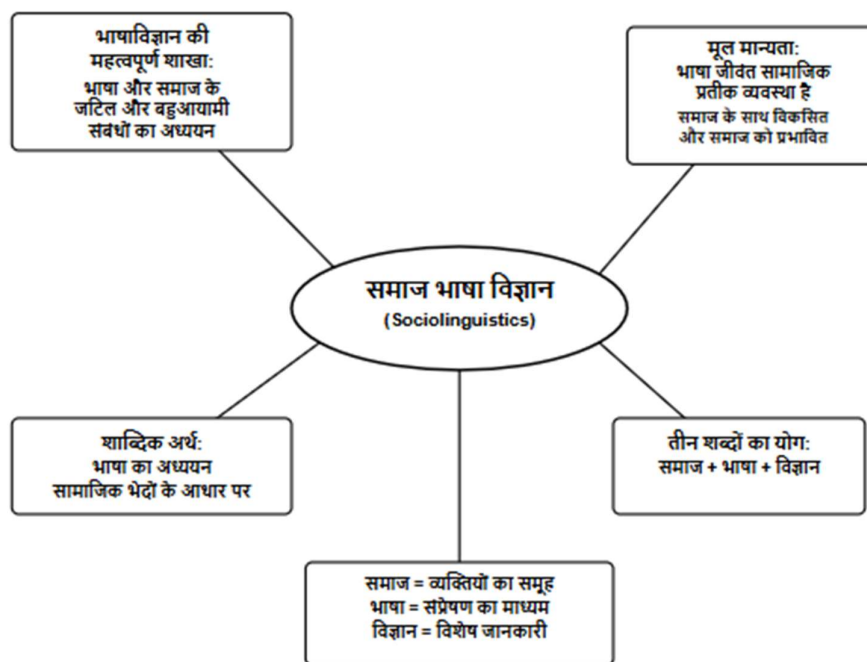
##### 5.1.1 समाज भाषा विज्ञान का परिचय

समाज भाषा विज्ञान भाषाविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है जो भाषा और समाज के बीच पाए जाने वाले जटिल और बहुआयामी संबंधों का अध्ययन करती है। यह विज्ञान इस मूल मान्यता पर आधारित है कि भाषा केवल शब्दों और व्याकरणिक नियमों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत सामाजिक प्रतीक व्यवस्था है जो समाज के साथ-



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

साथ विकसित होती है और समाज को प्रभावित करती है। समाज भाषा विज्ञान तीन शब्दों के योग से बना है - समाज, भाषा और विज्ञान। समाज का अर्थ है व्यक्तियों का समूह या समुदाय, भाषा का अर्थ है संप्रेषण का माध्यम, और विज्ञान का अर्थ है किसी विषय की विशेष जानकारी। इस प्रकार समाज भाषा विज्ञान का शाब्दिक अर्थ हुआ भाषा की ऐसी विशिष्ट जानकारी जिसमें भाषा का अध्ययन उसके सामाजिक भेदों के आधार पर किया जाता है।



चित्र 5.1: समाज भाषा विज्ञान

समाज भाषा विज्ञान के अंतर्गत समाज का भाषा पर एवं भाषा के समाज पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। यह भाषावैज्ञानिक अध्ययन का वह क्षेत्र है जो भाषा और समाज के बीच पाये जानेवाले हर प्रकार के सम्बंधों का अध्ययन और विश्लेषण करता है। आज जिस सामाजिकभाषाविज्ञान की चर्चा की जाती है, वह समाजशास्त्र और भाषाविज्ञान के मात्र अवमिश्रण का न तो परिणाम है और न ही वह सामाजिक-व्यवस्था और भाषिक व्यवस्था की कोई सह-संकल्पना है। यह एक स्वतंत्र और वैज्ञानिक अनुशासन है जो भाषा को सामाजिक संदर्भ में समझने का प्रयास करता है।



भाषा विज्ञान  
की प्रमुख  
शाखाएँ

समाज भाषा विज्ञान की यह मान्यता है कि भाषा समाज सापेक्ष प्रतीक व्यवस्था है और इस प्रतीक-व्यवस्था के मूल में ही सामाजिक तत्व निहित रहते हैं। भाषा को इस सामाजिक बोध अथवा उसके सामाजिक प्रयोजन से अलग कर देखना असंगत है। इसलिए समाज भाषा विज्ञान भाषा को शुद्ध भाषिक प्रतीकों की व्यवस्था नहीं मानता, जैसा कि सैद्धांतिक भाषावैज्ञानिकों का एक वर्ग स्वीकार करता है। वह तो भाषा को सामाजिक प्रतीकों की एक उपव्यवस्था के रूप में परिभाषित करता है। यह विज्ञान इस बात को स्वीकार करता है कि भाषा का प्रयोग सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में होता है और सामाजिक परिवेश में वक्ता की स्थिति के अनुसार भाषा का रूप बदलता रहता है।

### परिभाषा और क्षेत्र

समाज भाषा विज्ञान को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है। रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने फिशमैन, गिगलिओली, हडसन, हाइम्स, प्राइड और होम्स, शुई, टुडगिल जैसे प्रमुख विद्वानों के विचारों को ध्यान में रखते हुए समाज भाषाविज्ञान की जो परिभाषा दी है, वह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार समाज भाषाविज्ञान भाषावैज्ञानिक अध्ययन का वह क्षेत्र है जो भाषा और समाज के बीच पाए जाने वाले हर प्रकार के संबंधों का अध्ययन विश्लेषण करता है। यह भाषा की संरचना और प्रयोग के उन सभी पक्षों एवं संदर्भों का अध्ययन करता है जो सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक होते हैं।

समाजभाषाविज्ञान एक वर्णनात्मक, वैज्ञानिक अध्ययन है कि किसी भी समाज में भाषा किस प्रकार आकार लेती है और किस प्रकार भिन्न-भिन्न रूप से प्रयुक्त होती है। यह क्षेत्र मुख्यतः इस बात पर विचार करता है कि विभिन्न सामाजिक समूहों के भाषा व्यवहार में क्या अंतर होते हैं और इन अंतरों के पीछे कौन-कौन से सामाजिक कारक कार्य करते हैं। समाजभाषाविज्ञान के व्यापक क्षेत्र में अध्ययन की यह शाखा इस बात से संबंधित है कि समाज में भाषा कैसे कार्य करती है। समाजभाषाविद् अध्ययन करते हैं कि सामाजिक कारक लोगों के भाषा प्रयोग को कैसे प्रभावित करते हैं और भाषा प्रयोग किस प्रकार लोगों की समाज में स्थिति को निर्धारित करता है और उनसे प्रभावित होता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

समाजभाषाविज्ञान इस बात का अध्ययन है कि भाषा किस प्रकार मानव की सामाजिक प्रकृति की सेवा करती है और उससे कैसे प्रभावित होती है। अपनी व्यापकतम अवधारणा में, समाजभाषाविज्ञान उन विविध और विविध तरीकों का विश्लेषण करता है जिनसे भाषा समाज में कार्य करती है, विकसित होती है और सामाजिक पहचान का निर्माण करती है। समाजभाषाविज्ञान भाषा और समाज के बीच संबंधों का अध्ययन है, जिसमें यह भी शामिल है कि विभिन्न सामाजिक संदर्भों में भाषा किस प्रकार बदलती और परिवर्तित होती है। यह विज्ञान समाज में उन सभी सामाजिक कारकों पर ध्यान देता है जो भाषा को प्रभावित करते हैं और भाषा द्वारा प्रभावित होते हैं। समाज भाषा विज्ञान का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत और बहुआयामी है। समाजभाषाविज्ञान के प्रमुख क्षेत्रों में भाषा की विविधता और परिवर्तन, बोलीविज्ञान, भाषा और लिंग, नस्लीय भाषाविज्ञान और भाषा संबंधी विचारधाराएँ शामिल हैं, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं हैं। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र भाषा और समाज के विशिष्ट पहलुओं का गहन अध्ययन करता है। समाजभाषाविज्ञान का केंद्रबिंदु भाषा पर समाज के प्रभाव पर है, जबकि भाषा के समाजशास्त्र का केंद्रबिंदु समाज पर भाषा के प्रभाव पर है। दोनों दृष्टिकोण समाज भाषा विज्ञान के अंतर्गत महत्वपूर्ण हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं।

समाज भाषा विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में भाषा क्षेत्र की तथा भाषा और बोलियों के अंतःसंबंध की व्याख्या, भाषिक विविधता का अध्ययन, भाषा परिवर्तन के कारणों और प्रक्रियाओं का विश्लेषण, भाषा और सामाजिक पहचान का संबंध, और भाषा नियोजन जैसे विषय सम्मिलित हैं। यह विज्ञान भाषा के औपचारिक गुणों के साथ-साथ उसके कार्यात्मक पहलुओं को भी समझने का प्रयास करता है। भाषा के औपचारिक गुणों को समझने से हम उपयुक्त उच्चारण कर पाते हैं और भाषा के कार्यात्मक पहलुओं को समझने से हम उनका अर्थ समझ पाते हैं। भाषा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में अर्थ का निर्माण करती है और हमारे विश्व के साथ संबंधों को परिभाषित करती है। समाज भाषा विज्ञान का अध्ययन क्षेत्र भाषिक समाज के समाज सांस्कृतिक कारकों के संबंध में भाषा की स्थिति को जानना और सामाजिक कारकों का भाषा के स्वरूप पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना है। यह विज्ञान भाषा में सामाजिक वर्गों के अनुसार होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करता है। विभिन्न सामाजिक वर्गों में धर्म, सामाजिक स्तर, लिंग, शैक्षिक स्तर आदि पर भाषा भेद पैदा होता है और इन भेदों का वैज्ञानिक अध्ययन



भाषा विज्ञान  
की प्रमुख  
शाखाएँ

समाज भाषा विज्ञान का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। समाजभाषाविज्ञान और भाषा विविधता में इस बात का अध्ययन शामिल है कि विभिन्न वक्ता समूहों के बीच भाषा कैसे भिन्न होती है और इस विविधता का सामाजिक कारकों से क्या संबंध है। भाषा के प्रयोग पर सामाजिक संगठन और सामाजिक संदर्भों के पारस्परिक प्रभावों की जांच भी इसके अध्ययन क्षेत्र में आती है।

समाज भाषा विज्ञान का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह भाषा को केवल एक संचार माध्यम के रूप में नहीं देखता, बल्कि सामाजिक पहचान, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और सामाजिक शक्ति संरचनाओं के निर्माण में भाषा की भूमिका को भी समझने का प्रयास करता है। भाषा सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत अर्थ से भरी होती है और भाषिक संकेतकों के प्रयोग के माध्यम से वक्ता प्रतीकात्मक रूप से स्वयं और समाज को परिभाषित करते हैं। इस प्रकार समाज भाषा विज्ञान केवल भाषा के बाहरी रूपों का अध्ययन नहीं करता, बल्कि भाषा के गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक निहितार्थों को भी उजागर करता है। समाज भाषा विज्ञान के अध्ययन में भाषा संपर्क का क्षेत्र भी महत्वपूर्ण है। जब विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले समुदाय एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, तो भाषाओं में परस्पर प्रभाव होता है और नए भाषिक रूपों का विकास होता है। द्विभाषिकता, बहुभाषिकता, कोड-मिश्रण और कोड-स्विचिंग जैसी घटनाओं का अध्ययन भी समाज भाषा विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है। यह अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि लोग विभिन्न सामाजिक संदर्भों में एक ही आदान-प्रदान में दो अलग-अलग व्याकरणिक प्रणालियों या उप-प्रणालियों का उपयोग कैसे करते हैं।

समाज भाषा विज्ञान का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र भाषा नियोजन और भाषा नीति का अध्ययन है। यह अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि समाज या राष्ट्र किस प्रकार सचेत रूप से भाषा के विकास, मानकीकरण और प्रसार को नियंत्रित करते हैं। भाषा नियोजन के अंतर्गत आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण का भाषा परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। भारत में हिंदी के राजभाषा घोषित होने के बाद हिंदी के विकास की जो प्रक्रिया आरंभ हुई, वह भाषा के आधुनिकीकरण और मानकीकरण की प्रक्रियाओं से जुड़ी है और उसके फलस्वरूप हमें हिंदी के शब्द भंडार में अभूतपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है।



समाज भाषा विज्ञान के अध्ययन में सामाजिक संदर्भ और अर्थगत विशेषता का विश्लेषण भी महत्वपूर्ण है। सर्वनाम और लोगों का भाषाई निर्माण, सामाजिक और व्यक्तिगत पहचान का भाषाई निर्माण, और समाज में भाषा की भूमिका जैसे विषय इसके अंतर्गत आते हैं। यह अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि भाषा किस प्रकार सामाजिक संबंधों को आकार देती है और सामाजिक संबंधों से आकार लेती है। समाज भाषा विज्ञान यह भी अध्ययन करता है कि किस प्रकार भाषा सामाजिक असमानता, शक्ति संरचनाओं और सामाजिक न्याय से संबंधित है। समाज भाषा विज्ञान का क्षेत्र भाषा शिक्षण से भी गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। भाषा के सामाजिक संदर्भ को समझना भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाता है। जब भाषा सीखी जाती है तब उसे सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश को भी ध्यान में रखना चाहिए जिसमें वह सीखी जा रही है और ज्ञान को भी उसी से जोड़ना चाहिए। उदाहरण के लिए, अधिगमकर्ता जब विज्ञापनों को देखते हैं तो वह विज्ञापन तभी प्रभावी बनते हैं जब उस संस्कृति से संबंधित क्रिया को उचित भाषा के प्रयोग द्वारा प्रस्तुत किया जाए। एक कक्षा में सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ से संबंधित क्रियाएं की जा सकती हैं, जैसे कहानियां, अखबार या पत्रिका की खबरों का विश्लेषण करना, खिचड़ी भाषा और अलंकारिक भाषा का विश्लेषण करना।

समाज भाषा विज्ञान के अध्ययन में भाषिक विविधता का संरक्षण और संवर्धन भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। भाषाई विविधता को जानना और प्रोत्साहित करना क्यों जरूरी है, इस पर और सामाजिक न्याय की लड़ाई पर इसके प्रभाव की चर्चा समाज भाषा विज्ञान में की जाती है। भिन्नताओं के प्रति सहिष्णुता सामाजिक न्याय और समानता की प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो अंततः सामाजिक सद्भाव की ओर ले जाता है। बहुभाषावाद भाषाई विविधता को संरक्षित करने की कुंजी है। हालांकि, जैसे-जैसे आर्थिक अवसरों और सामाजिक कारकों के कारण अंतर-राज्यीय गतिशीलता बढ़ती है, अतिरिक्त भाषा सीखना आवश्यक हो जाता है।

---

### 5.1.2 भाषा और समाज का संबंध

---

भाषा और समाज का संबंध अत्यंत गहरा, जटिल और अविभाज्य है। मनुष्य के पास भाषा सीखने की क्षमता होती है, किंतु वह भाषा को तभी सीख पाता है जब उसे एक भाषाई समाज का परिवेश प्राप्त होता है। एक ओर समाज के माध्यम से ही भाषा एक



पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है, तो दूसरी ओर भाषा के माध्यम से समाज संगठित और संचालित होता है। यदि मनुष्य से भाषा छीन ली जाए तो उसकी सामाजिक संरचना भी ध्वस्त हो जाएगी। इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति को समाज के बाहर, जैसे जंगल में, छोड़ दिया जाए, जहां वह दूसरे व्यक्तियों से नहीं मिल सकता तो भाषा उसके साथ ही मृत हो जाएगी। यह संबंध इतना मजबूत है कि भाषा को समाज से अलग करके देखना या समझना संभव नहीं है। भाषा मनुष्य के सामाजिक जीवन का आधार है। इसी के कारण मनुष्य एक सामाजिक प्राणी के रूप में परिभाषित हो गया है। भाषा के अभाव में विचारों की अभिव्यक्ति और बातचीत संभव नहीं है। अतः भाषा नहीं होने पर हम भी अन्य प्राणियों की तरह सामाजिक संगठन से वंचित रह जाते। भाषा ही मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने का सबसे बड़ा प्रमाण है और यह भी सत्य है कि भाषा के सहयोग से ही समाज का निर्माण होता है। भाषा चाहे जो भी हो उसका सदैव एक दुहरा चरित्र होता है - वह व्यक्तिगत भी है और सामाजिक भी। व्यक्ति भाषा का उपयोग करता है, लेकिन भाषा का स्वरूप समाज द्वारा निर्धारित होता है।

भाषा एक सामाजिक यथार्थ है, इसलिए सामाजिक व्यवहार के संदर्भ में ही इसकी सही व्याख्या संभव है। भाषा और समाज का परस्पर संबंध होता है। सामाजिक परिवर्तन के कारण सामाजिक मूल्यों तथा भाषिक मूल्यों में परिवर्तन होने शुरू हो जाते हैं। अपेक्षाकृत स्थिर समाजों में पारंपरिक मूल्यों के प्रति अगाध निष्ठा होती है, कोई इनके प्रति संदेह नहीं करता। सामाजिक परिवर्तन की स्थिति में सामाजिक मूल्यों को लेकर प्रश्न उठने लगते हैं, उन्हें चुनौती दी जाने लगती है। समाज भाषा को प्रभावित करता है तथा भाषा भी समाज को प्रभावित करती है। यह द्विपक्षीय संबंध भाषा और समाज के बीच की जटिलता को दर्शाता है। भाषा और समाज के संबंध को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक पहचान, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और सामाजिक संबंधों के निर्माण का भी माध्यम है। भाषा हमारी संस्कृति और समाज की अभिव्यक्ति है। संस्कृति और समाज पहले आते हैं, भाषा दोनों का परिणाम है। यह उनकी पहचान की भावना और संचार में योगदान देती है। इस प्रकार भाषा समाज की दर्पण है - वह समाज के मूल्यों, विश्वासों, परंपराओं और सामाजिक संरचना को प्रतिबिंबित करती है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

भाषा अध्ययन के संदर्भ में मनोवादी और व्यवहारवादी विचारधाराएँ प्रचलित हैं। व्यवहारवादियों द्वारा भाषा को सामाजिक वस्तु माना गया है। उनके अनुसार भाषा समाज में होती है और मानव शिशु इसे अपने समाज से ही ग्रहण करता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, भाषा एक सामाजिक व्यवहार या सामाजिक वस्तु के रूप में देखी जा सकती है। यह दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि भाषा का अधिग्रहण और विकास सामाजिक संपर्क के बिना संभव नहीं है। मनुष्य जन्म से भाषा के साथ नहीं आता, बल्कि समाज में रहकर भाषा सीखता है और समाज की भाषा को अपनाता है। भाषा मानव समाज की अविच्छिन्न इकाई है। प्रत्येक समाज में भाषा-व्यवहार के भिन्न प्रतिमान होते हैं। ये भाषाई प्रतिमान सतत परिवर्तनशील होते हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण भाषा-व्यवहार में भी परिवर्तन आता रहता है। यह निरंतर परिवर्तनशीलता भाषा और समाज के गतिशील संबंध को दर्शाती है। भाषा कभी स्थिर नहीं रहती, वह समाज के साथ-साथ विकसित होती है, बदलती है और नए रूप धारण करती है। भाषा का मानव संस्कृति और समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। भाषा की उत्पत्ति, मनुष्यों के विकास में इसकी भूमिका, और इस प्रभाव के परिणाम कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो अनेक अध्ययनों और शोधों के विषय रहे हैं। भाषाई विकास और समाज पर इसका प्रभाव एक ऐसा विषय है जिसने विद्वानों को सदियों से आकर्षित किया है। इस मिश्रण और परिवर्तन के प्रभाव ने और अधिक समकालीन भाषाओं के विकास में भी मदद की है। यह विकास प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है और समाज के साथ-साथ भाषा भी विकसित होती रहती है।

### सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग

सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग का अध्ययन समाज भाषा विज्ञान का केंद्रीय विषय है। भाषा का प्रयोग करने का तरीका, शब्दों और वाक्यांशों से जुड़े अर्थ, और संचार के मानदंड, सभी सामाजिक कारकों से प्रभावित होते हैं। जब हम भाषा का प्रयोग करते हैं, तो हम केवल शब्दों का चयन नहीं करते, बल्कि सामाजिक संदर्भ के अनुसार उपयुक्त भाषिक रूप का चयन भी करते हैं। यह चयन हमारे सामाजिक बोध से निर्देशित होता है। सामाजिक संदर्भ यह निर्धारित करता है कि हम किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करेंगे, किन शब्दों का चयन करेंगे, और किस प्रकार की भाषिक शैली अपनाएंगे।

सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग का एक स्पष्ट उदाहरण सर्वनामों के प्रयोग में देखा जा सकता है। हम किसी एक व्यक्ति के लिए कहते हैं "आप इधर आइए", तो दूसरे व्यक्ति से बोलते हैं "तू इधर आ"। जब हम प्रतिष्ठा प्राप्त डॉक्टर या प्रोफेसर से कहते हैं "कृपया बताइए कि...", जबकि किसी धोबी या मोची से बात करते हुए बोलते हैं "तू यह बता कि..."। इसी प्रकार अपने माता-पिता या दादा नाना से बहुवचन का प्रयोग करते हुए बोलते हैं "आप यहाँ बैठें", जबकि छोटे बेटे-बेटी या नाती-पोतों से बातचीत करते समय एकवचन का प्रयोग करते हुए कहते हैं "तू यहाँ बैठ", या फिर "तुम यहाँ बैठो"। तू, तुम, या आप में किसी एक के प्रयोग अथवा एकवचन या बहुवचन में एक के स्थान पर दूसरे के चयन के पीछे का निर्धारक तत्व भाषा-प्रयोग का सामाजिक बोध ही होता है। ये उदाहरण स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि सामाजिक संबंध, सामाजिक स्थिति, आयु, और सम्मान जैसे कारक हमारे भाषा प्रयोग को कैसे प्रभावित करते हैं। हम अपने से बड़े या सम्मानित व्यक्तियों से बात करते समय आदरसूचक भाषा का प्रयोग करते हैं, जबकि अपने से छोटे या कम प्रतिष्ठा वाले व्यक्तियों से बात करते समय सामान्य या अनौपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं। यह भाषा प्रयोग का सामाजिक पहलू है जो भाषा को केवल संचार का माध्यम नहीं बनाता, बल्कि सामाजिक संबंधों को व्यक्त करने और स्थापित करने का भी माध्यम बनाता है।

सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग को प्रभावित करने वाले अनेक सामाजिक कारक हैं। मानव समाज की संरचना जटिल है और इसमें अनेक तत्वों के आधार पर भेद किया जा सकता है। मानव समाज का वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है - आयु के आधार पर (शिशु, बालक, युवा, प्रौढ़, वृद्ध), लिंग के आधार पर (पुरुष, महिला, तृतीय लिंग), क्षेत्र के आधार पर (ग्रामीण, शहरी), शिक्षा के आधार पर (अशिक्षित, शिक्षित, उच्च शिक्षा प्राप्त), आय या वर्ग के आधार पर (उच्च, मध्य और निम्न), धर्म के आधार पर (हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई), और व्यवसाय के आधार पर (डॉक्टर, वकील, शिक्षक, दुकानदार आदि)। इनमें से किसी भी आधार पर व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहार में अंतर किया जा सकता है। अतः आचरण, जीवन शैली और भाषा व्यवहार आदि की दृष्टि से ये आधार ही सामाजिक तत्व कहलाते हैं। इनके आधार पर व्यक्तियों के भाषा व्यवहार में भेद देखा जा सकता है।



आयु एक महत्वपूर्ण सामाजिक कारक है जो भाषा प्रयोग को प्रभावित करता है। विभिन्न आयु वर्गों की भाषा के स्वरूप में स्पष्ट अंतर देखे जा सकते हैं। बालकों या बच्चों की भाषा, युवाओं की भाषा, प्रौढ़ों की भाषा, और वृद्धों की भाषा में महत्वपूर्ण भिन्नताएं होती हैं। युवाओं की भाषा में नए शब्दों का प्रयोग, आधुनिक अभिव्यक्तियाँ और अनौपचारिक शैली अधिक पाई जाती है, जबकि वृद्धों की भाषा में पारंपरिक शब्दावली और औपचारिक शैली का प्रयोग अधिक होता है। इन आयु वर्गों के भाषा व्यवहार में प्राप्त भेदों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उनमें समानताओं और असमानताओं को प्राप्त किया जा सकता है। लिंग भी भाषा प्रयोग को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण सामाजिक कारक है। पुरुषों और महिलाओं के भाषा प्रयोग में अंतर पाए जाते हैं। ये अंतर शब्दावली के चयन, उच्चारण शैली, वाक्य संरचना और विषय चयन में देखे जा सकते हैं। आधुनिक काल में मानवतावाद और सर्वसमता के प्रति बढ़ती जागरूकता से तृतीय लिंग को भी समाज में सम्मानपूर्ण स्वीकृति मिल चुकी है और उनके भाषा व्यवहार का अध्ययन भी समाज भाषा विज्ञान का महत्वपूर्ण विषय बन गया है। लिंग के आधार पर भाषा प्रयोग में परिवर्तन होने पर भाषा व्यवहार किस प्रकार से बदलता है, यह समाज भाषा विज्ञान के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। क्षेत्र के आधार पर भाषा प्रयोग में महत्वपूर्ण अंतर पाए जाते हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के भाषा व्यवहार में स्पष्ट भिन्नताएं होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय बोलियों का प्रयोग अधिक होता है, जबकि शहरी क्षेत्रों में मानक भाषा या मिश्रित भाषा का प्रयोग अधिक देखने को मिलता है। भौगोलिक आधार पर भी भाषा में परिवर्तन होते हैं, यह बोली विज्ञान से संबद्ध विषय है। भौगोलिक अलगाव भाषाई विविधता को बढ़ा सकता है, साथ ही लोगों के समूहों के बीच विभिन्न प्रकार के संपर्क भी भाषाई विविधता को प्रभावित करते हैं। शिक्षा भाषा प्रयोग को प्रभावित करने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक कारक है। अशिक्षित, शिक्षित और उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के भाषा व्यवहार में स्पष्ट अंतर देखे जा सकते हैं। शिक्षित व्यक्तियों की भाषा में व्याकरणिक शुद्धता, विस्तृत शब्दावली और औपचारिक शैली का प्रयोग अधिक होता है, जबकि अशिक्षित व्यक्तियों की भाषा में स्थानीय बोली का प्रभाव और अनौपचारिक शैली अधिक पाई जाती है। शिक्षा का स्तर न केवल भाषा की शुद्धता को प्रभावित करता है, बल्कि भाषा के प्रयोग के सामाजिक संदर्भों को भी प्रभावित करता है।

सामाजिक वर्ग या आय के आधार पर भी भाषा प्रयोग में महत्वपूर्ण अंतर पाए जाते हैं। उच्च, मध्य और निम्न वर्ग के लोगों के भाषा व्यवहार में स्पष्ट भिन्नताएँ होती हैं। सामाजिक वर्ग उच्चारण पैटर्न को प्रभावित करता है, जैसा कि लेबोव के अध्ययन से पता चला है। उच्च वर्ग के लोग प्रायः मानक भाषा का प्रयोग करते हैं और उनके उच्चारण में क्षेत्रीय बोली का प्रभाव कम होता है, जबकि निम्न वर्ग के लोगों की भाषा में स्थानीय बोली का प्रभाव अधिक होता है। भाषा में सामाजिक वर्गों के अनुसार परिवर्तन होता है और विभिन्न सामाजिक वर्गों में धर्म, सामाजिक स्तर, लिंग, शैक्षिक स्तर आदि पर भाषा भेद पैदा होता है। धर्म भी भाषा प्रयोग को प्रभावित करने वाला एक सामाजिक कारक है। विभिन्न धार्मिक समुदायों के लोगों के भाषा व्यवहार में अंतर देखे जा सकते हैं। ये अंतर शब्दावली, अभिव्यक्ति शैली और भाषा के प्रयोग के संदर्भों में प्रकट होते हैं। धार्मिक पहचान भाषाई पहचान से गहरे रूप से जुड़ी होती है और भाषा का प्रयोग धार्मिक पहचान को व्यक्त करने का एक माध्यम बन जाता है। व्यवसाय के आधार पर भी भाषा प्रयोग में अंतर पाए जाते हैं। डॉक्टर, वकील, शिक्षक, दुकानदार आदि विभिन्न व्यवसायों से जुड़े लोगों की भाषा में व्यावसायिक शब्दावली और विशिष्ट अभिव्यक्ति शैली का प्रयोग होता है।

सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि भाषा स्वाभाविक रूप से सामाजिक होती है। प्रत्येक उच्चारण एक विशिष्ट सामाजिक संदर्भ में होता है, जो सामाजिक वर्ग, जातीयता, लिंग और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि जैसे कारकों से प्रभावित होता है। समाजभाषाविद् विभिन्न प्रकार की भाषाई विविधता की खोज करते हैं, जो क्षेत्रीय उच्चारण से लेकर सामाजिक वर्ग, जातीयता और आयु जैसे कारकों द्वारा आकारित भाषिक रूपों तक विस्तृत है। ये सामाजिक कारक लोगों के भाषा बोलने के तरीके को आकार देते हैं और प्रभावित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भाषा में विविधताएँ और विभिन्नताएँ उत्पन्न होती हैं। सामाजिक संदर्भ यह निर्धारित करता है कि हम किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करेंगे। औपचारिक और अनौपचारिक संदर्भों में भाषा के प्रयोग में स्पष्ट अंतर होता है। एक व्यावसायिक बैठक में हम औपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं, जबकि मित्रों के साथ अनौपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं। यह अंतर शब्दावली, वाक्य संरचना और अभिव्यक्ति शैली में प्रकट होता है। सामाजिक संदर्भ के अनुसार भाषा का उपयुक्त प्रयोग सामाजिक



योग्यता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जो व्यक्ति विभिन्न सामाजिक संदर्भों में उपयुक्त भाषा का प्रयोग कर सकते हैं, वे सामाजिक रूप से अधिक कुशल माने जाते हैं।

भाषाई विविधता में कई कारक योगदान करते हैं, जो विभिन्न वातावरणों में भाषाओं के विकास और विकास के तरीके को आकार देते हैं। सामाजिक संपर्क और समय के साथ भाषाओं का विकास भी भाषाई विविधता को प्रभावित करता है। जब विभिन्न भाषाई समुदाय परस्पर संपर्क में आते हैं, तो भाषाओं में मिश्रण होता है और नए भाषिक रूपों का विकास होता है। यह प्रक्रिया भाषाई विविधता को बढ़ाती है और भाषा को और अधिक समृद्ध बनाती है। किसी एक वक्ता की भाषा के भीतर भिन्नता को अंतःवक्ता भिन्नता कहते हैं। भाषा के सभी पहलू - स्वनिम, रूपिम, वाक्य रचना और अर्थ सहित - भिन्नता के अधीन हैं। सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग का एक महत्वपूर्ण पहलू कोड-स्विचिंग और कोड-मिश्रण है। जब वक्ता एक ही वार्तालाप में दो या अधिक भाषाओं या भाषिक रूपों का प्रयोग करते हैं, तो यह कोड-स्विचिंग कहलाता है। यह घटना विशेष रूप से बहुभाषी समाजों में देखी जाती है। कोड-स्विचिंग केवल भाषिक सीमाओं का उल्लंघन नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक कौशल है जिसका प्रयोग वक्ता विभिन्न सामाजिक संदर्भों में उपयुक्त संचार के लिए करते हैं। द्विभाषी या बहुभाषी वक्ता अक्सर सामाजिक संदर्भ के अनुसार भाषाओं का चयन करते हैं और इस प्रकार अपनी सामाजिक पहचान और संबंधों को व्यक्त करते हैं। भाषा परिवर्तन के कई प्रकार हैं और समय, स्थान और सामाजिक कारकों के अलावा, जो सामाजिक-भाषाई विविधता से अविभाज्य हैं, भाषा आयु, सामाजिक वर्ग, लिंग या सामाजिक लिंग, जातीयता, माध्यम, शैली और रजिस्टर के अनुसार भी भिन्न हो सकती है। भाषा परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं और उनमें राजनीति, सामाजिक, संस्कृति, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और नैतिक कारक शामिल हैं। राजनीतिक कारक भी भाषा परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई बार भाषा परिवर्तन के पीछे कुछ राजनीतिक कारण होते हैं, जैसे मानव प्रवास और राजनीतिक नीतियां। प्रौद्योगिकी कारक भी भाषा को प्रभावित करते हैं। लगातार बदलती तकनीक भाषा उपयोगकर्ताओं के लिए भाषा को समझने में नई चुनौतियां और अवसर पैदा करती है।

कभी-कभी देश के बाहर से आने वाले आप्रवासी वर्ग पर समाज की भाषा थोपी जाती है। आप्रवासी अपनी भाषा छोड़कर उस समाज की भाषा का व्यवहार करना शुरू कर देता है। इससे उसकी भाषा की मृत्यु की स्थिति पैदा हो जाती है और आप्रवासियों की सांस्कृतिक पहचान नष्ट होना शुरू हो जाती है। जब आप्रवासी अपनी भाषा को अपने घर में प्रयोग करने लगते हैं तब भाषा-विस्थापन की बजाय भाषा-अनुरक्षण की प्रक्रिया काम करने लगती है। अब यह माना जाने लगा है कि आप्रवासियों को अपनी भाषा तथा संस्कृति छोड़ने के लिए विवश करने की नीति अच्छी नहीं है। यह मान्यता भाषा के सामाजिक महत्व और सांस्कृतिक पहचान में भाषा की भूमिका को स्वीकार करती है। भाषा परिवर्तन के प्रकारों के अंतर्गत ध्वनि परिवर्तन, लिपि-वर्तनी परिवर्तन, कोशीय परिवर्तन तथा अर्थ परिवर्तन आते हैं। ध्वनि परिवर्तन के अंतर्गत स्वनिक तथा स्वनिमिक दोनों प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित होते हैं। ध्वनि परिवर्तन हमेशा स्वनिक परिवर्तन के रूप में शुरू होते हैं और बाद में सामाजिक स्वीकृति मिलने पर स्वनिमिक परिवर्तन का रूप ले लेते हैं। उदाहरण के लिए, ख, ग, ज़ और फ़ ध्वनियों का विकास हिंदी के अरबी-फारसी संपर्क के कारण हुआ। धीरे-धीरे ये ध्वनियाँ हिंदी की ध्वनि व्यवस्था में सम्मिलित हो गईं। आधुनिक हिंदी में ख और ग का तो ख और ग में आत्मसातीकरण हो गया है किंतु फ़ और ज़ को अंग्रेजी संपर्क के कारण अपना उच्चारण सुरक्षित रखने के लिए बल मिला है।

भाषा परिवर्तन की व्याख्या के संदर्भ में दो प्रमुख दृष्टिकोण हैं - आंतरिक और बाह्य। बाह्य आयाम के व्याख्याता आंतरिक कारकों के आधार पर भाषा परिवर्तन की व्याख्या को नकारते हैं और अधिकांश भाषा परिवर्तन की प्रक्रिया को पूरी तरह समझने के लिए सामाजिक, ऐतिहासिक और बाह्य कारकों की परीक्षा करने की बात करते हैं। वे मानते हैं कि भाषिक सिद्धांत में नवोन्मेष और परिवर्तन में अंतर करना होगा। नवोन्मेष वक्ता आधारित होते हैं और परिवर्तन के लिए प्रेरक तत्व का काम करते हैं। भाषा परिवर्तन नवोन्मेष का परिणाम होते हैं और भाषिक संरचना में दिखाई देने लगते हैं। यह दृष्टिकोण सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग को भाषा परिवर्तन का मुख्य कारक मानता है। सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग का अध्ययन केवल भाषा के बाहरी रूपों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भाषा के सामाजिक अर्थ और सामाजिक कार्यों को भी समझने का प्रयास करता है। भाषा सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत अर्थ से भरी



होती है। भाषिक संकेतकों के प्रयोग के माध्यम से वक्ता प्रतीकात्मक रूप से स्वयं और समाज को परिभाषित करते हैं। इस प्रकार भाषा का प्रयोग केवल सूचना के आदान-प्रदान का माध्यम नहीं है, बल्कि सामाजिक पहचान के निर्माण और सामाजिक संबंधों की स्थापना का भी माध्यम है। जब हम भाषा का प्रयोग करते हैं, तो हम अपनी सामाजिक पहचान को व्यक्त करते हैं और दूसरों के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करते हैं।

भारत में भाषाई विविधता से जुड़ी समस्याएं और समाधान का अध्ययन भी सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। भाषाई विविधता आर्थिक क्षेत्र में भी एक गंभीर समस्या उत्पन्न करती है। भारत की विशालता का अर्थ है कि विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं, जिससे व्यवसायों के लिए देश भर में प्रभावी ढंग से संवाद करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। भाषाओं का मानकीकरण, गैर-प्रमुख भाषाओं में शिक्षा, प्रभावी संचार, राजनीतिक एकता और सामाजिक समानता महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। मानक भाषाएं विभिन्न सचेत और अचेत प्रक्रियाओं के माध्यम से उभरती हैं, और गैर-मानक भाषण रूपों को एक विशिष्ट पहचान देने का प्रयास किया जा सकता है। यह प्रक्रिया सामाजिक और राजनीतिक कारकों से प्रभावित होती है। मानक भाषा का विकास समाज में शक्ति संबंधों और सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ा होता है। जो भाषिक रूप शक्तिशाली और प्रतिष्ठित समूहों द्वारा प्रयोग किए जाते हैं, वे प्रायः मानक भाषा के रूप में स्थापित हो जाते हैं। इस प्रकार सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग सामाजिक शक्ति संरचनाओं को प्रतिबिंबित करता है और उन्हें मजबूत भी करता है।

समाज में भाषा परिवर्तन के फायदे और नुकसान दोनों हैं। यह किस प्रकार के परिवर्तन पर निर्भर करता है। यदि नए शब्द उन चीजों के लिए प्रयोग किए जाते हैं जिन्हें पहले कहा नहीं जा सकता था, तो यह एक लाभ है। भाषा परिवर्तन समाज की बदलती आवश्यकताओं को पूरा करने का माध्यम है। जैसे-जैसे समाज विकसित होता है, नई अवधारणाओं, प्रौद्योगिकियों और सामाजिक संरचनाओं को व्यक्त करने के लिए नए भाषिक रूपों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार भाषा परिवर्तन समाज के विकास का एक स्वाभाविक और आवश्यक हिस्सा है।

सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ का तात्पर्य है कि मानव अकेला नहीं रह सकता। भाषा ही उसे समाज और संस्कृति से जोड़ती है और वही से इसे ज्ञान प्राप्ति होती है। इसका तात्पर्य है कि जब भाषा सीखी जाती है तब उसे सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश को भी ध्यान में रखना चाहिए जिसमें वह सीखी जा रही है और ज्ञान को भी उसी से जोड़ना चाहिए। सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में उपयोग किया जाने वाला एक ऐसा सिद्धांत है जिसमें मानव के आसपास की परिस्थितियों की व्याख्या और उनका व्यवहार किस प्रकार परिस्थितियों और सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है यह बताया जाता है। समाज में भाषा द्वारा निर्वाह गति से संप्रेषण होता है। वक्ता कभी भाषा का ध्यान न देकर वह संप्रेषण पर विशेष ध्यान देते हुए मुख सुख की सुविधा देना चाहता है। यह प्राकृतिक भाषा प्रयोग है जो सामाजिक संदर्भ में होता है। सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग का अध्ययन इस बात को समझने में मदद करता है कि वास्तविक जीवन में लोग किस प्रकार भाषा का प्रयोग करते हैं और विभिन्न सामाजिक स्थितियों में भाषा का स्वरूप कैसे बदलता है। यह अध्ययन भाषा को एक जीवंत और गतिशील सामाजिक घटना के रूप में प्रस्तुत करता है।

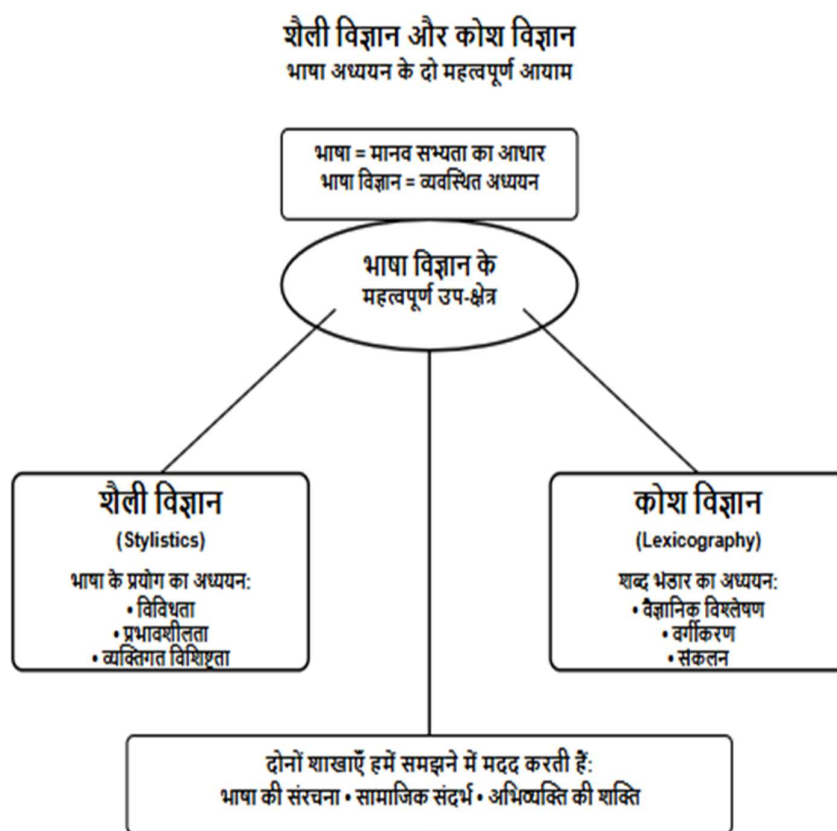
समाज भाषा विज्ञान के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भाषा केवल शब्दों और व्याकरण का संग्रह नहीं है। यह एक सामाजिक प्रतीक व्यवस्था है जो समाज के साथ-साथ विकसित होती है। भाषा और समाज का संबंध इतना गहरा है कि एक को दूसरे से अलग करके नहीं समझा जा सकता। सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि भाषा किस प्रकार सामाजिक पहचान, सामाजिक संबंध और सामाजिक संरचनाओं को व्यक्त करती है और निर्मित करती है। यह अध्ययन भाषा को मानव सामाजिक जीवन के केंद्र में स्थापित करता है और यह दर्शाता है कि भाषा मानव सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग है। यह विस्तृत निबंध समाज भाषा विज्ञान के परिचय, इसकी परिभाषा और क्षेत्र, तथा भाषा और समाज के संबंध और सामाजिक संदर्भ में भाषा प्रयोग के विभिन्न पहलुओं को समग्र रूप से प्रस्तुत करता है। समाज भाषा विज्ञान एक महत्वपूर्ण और विस्तृत अनुशासन है जो भाषा को सामाजिक संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। यह विज्ञान न केवल भाषा की संरचना का अध्ययन करता है, बल्कि भाषा के सामाजिक कार्यों, सामाजिक अर्थों और सामाजिक प्रभावों को भी समझने का प्रयास करता है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

## इकाई 5.2: शैली विज्ञान और कोश विज्ञान

भाषा मानव सभ्यता का आधार है और भाषा विज्ञान वह विधा है जो इस आधारभूत संरचना का व्यवस्थित अध्ययन करती है। भाषा विज्ञान के अंतर्गत अनेक उप-क्षेत्र आते हैं, जिनमें **शैली विज्ञान** और **कोश विज्ञान** विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। शैली विज्ञान जहाँ भाषा के **प्रयोग** की विविधता, प्रभावशीलता और व्यक्तिगत विशिष्टता का अध्ययन करता है, वहीं कोश विज्ञान भाषा के **शब्द भंडार** का वैज्ञानिक विश्लेषण, वर्गीकरण और संकलन करता है। ये दोनों ही शाखाएँ हमें भाषा की संरचना, उसके सामाजिक संदर्भ और उसकी अभिव्यक्ति की शक्ति को गहराई से समझने में मदद करती हैं।



चित्र 5.2: शैली विज्ञान और कोश विज्ञान

### 5.2.1 शैली विज्ञान का सामान्य परिचय: भाषा की शैलियाँ और उनका अध्ययन

शैली विज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है जो किसी भाषा के प्रयोग की विशिष्टताओं, विविधताओं और उनके भाषिक प्रभावों का अध्ययन करती है। 'शैली' शब्द का सामान्य अर्थ होता है ढंग, तरीका या विशिष्ट अभिव्यक्ति। जब हम कहते हैं कि 'उसकी लेखन शैली प्रभावशाली है' या 'यह विज्ञापन की शैली है', तो हमारा तात्पर्य उस विशेष प्रकार के भाषा-प्रयोग से होता है जो एक वक्ता या लेखक को दूसरे से अलग करता है, या एक संदर्भ को दूसरे संदर्भ से। शैली विज्ञान इसी 'कैसे' (How) का वैज्ञानिक अन्वेषण है, अर्थात्, भाषिक इकाईयों (जैसे ध्वनि, शब्द, वाक्य) का चयन और संयोजन किस प्रकार किया जाता है ताकि एक विशेष प्रभाव या अर्थ उत्पन्न हो सके। विभिन्न विद्वानों ने इसे अलग-अलग तरह से परिभाषित किया है, लेकिन केंद्रीय भाव यही है कि शैली विज्ञान भाषा की अभिव्यंजना-शक्ति और भेदकता का अध्ययन करता है। यह इस बात पर जोर देता है कि 'क्या कहा गया' की अपेक्षा 'कैसे कहा गया' अधिक मायने रखता है।

शैली विज्ञान का मूल उद्देश्य उन भाषिक विचलन या प्रतिमानों को पहचानना है जो किसी व्यक्ति, समूह, विधा या विशेष पाठ को एक शैलिवैज्ञानिक पहचान प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, एक कविता की शैली किसी वैज्ञानिक लेख से, और एक कानूनी दस्तावेज की शैली किसी उपन्यास से भिन्न होगी। शैली वैज्ञानिक इन भिन्नताओं के पीछे के कारणों, नियमों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं।

#### भाषा, भाषा-प्रयोग और शैली का संबंध

शैली की अवधारणा को समझने के लिए भाषा, भाषा-प्रयोग और शैली के बीच के अंतर को समझना आवश्यक है। भाषा एक अमूर्त और सामाजिक व्यवस्था है, नियमों, संरचनाओं और व्याकरण का एक साझा कोष। भाषा-प्रयोग या 'पारोल' उस व्यवस्था का व्यक्तिगत और विशिष्ट निष्पादन है। जबकि शैली वह चुनाव है जो एक वक्ता या लेखक भाषा-व्यवस्था के भीतर उपलब्ध विकल्पों में से करता है। शैली वैज्ञानिक मानता है कि हर बार जब कोई व्यक्ति बात करता है या लिखता है, तो वह असंख्य



संभावित भाषिक विकल्पों में से कुछ विशिष्ट विकल्पों को चुनता है, और यह चुनाव ही उसकी शैली को परिभाषित करता है।

उदाहरण के लिए, किसी बात को कहने के लिए 'मृत्यु हो गई', 'चल बसे', 'स्वर्ग सिधार गए', 'टपक गए', 'प्राण पखेरू उड़ गए' जैसे कई विकल्प मौजूद हैं। वक्ता या लेखक द्वारा चुना गया विकल्प (औपचारिक, अनौपचारिक, व्यंगात्मक, काव्यात्मक) ही उस संदर्भ और उसकी शैली को निर्धारित करता है। इस प्रकार, शैली विज्ञान का अध्ययन इस चुनाव की स्वतंत्रता, बाध्यता और उसके परिणामी अर्थ पर केंद्रित होता है।

### शैली विज्ञान का क्षेत्र और विविध आयाम

शैली विज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है और यह भाषिक संरचना के सभी स्तरों को छूता है:

1. **ध्वनिगत/स्वनिमगत शैली:** इसमें किसी पाठ में विशिष्ट ध्वनियों, लय, अनुप्रास, और तुकबंदी के पैटर्न का अध्ययन किया जाता है। कविता में लय या गद्य में विशिष्ट ध्वनि समूहों का बार-बार आना शैली का निर्माण करता है।
2. **रूपिमगत/शब्दगत शैली:** यह **शब्द चयन** का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसमें संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण के प्रकार, तत्सम-तद्भव शब्दों का अनुपात, तकनीकी शब्दावली, विदेशी शब्दों का प्रयोग, या नए शब्दों के सृजन का अध्ययन किया जाता है। एक तकनीकी शैली में जटिल और विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग होता है, जबकि एक साधारण शैली में सरल और रोज़मर्रा के शब्दों का।
3. **वाक्यगत शैली:** यह वाक्य संरचना से संबंधित है। इसमें वाक्यों की लंबाई (छोटे या लंबे), वाक्यों की जटिलता (सरल, संयुक्त, मिश्रित), वाच्य (कर्तृवाच्य या कर्मवाच्य), और पदक्रम में विचलन का अध्ययन किया जाता है। औपचारिक शैलियाँ अक्सर लंबे और जटिल वाक्यों का प्रयोग करती हैं।
4. **अर्थगत शैली:** इसमें भाषा के अर्थ और उसके प्रयोग का अध्ययन होता है, जैसे मुहावरे, लोकोक्तियाँ, व्यंग्य, और अलंकारिक भाषा, उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति आदि का प्रयोग। ये तत्व पाठ के गहरे अर्थ और संवेदनात्मक प्रभाव को निर्धारित करते हैं।

5. **प्रकार्यगत शैली:** यह विभिन्न सामाजिक संदर्भों और उद्देश्यों के अनुसार भाषा के प्रयोग का विश्लेषण करता है। प्रमुख कार्यात्मक शैलियाँ हैं:
- **साहित्यिक शैली:** इसमें कविता, नाटक, कथा साहित्य आदि की शैलियों का अध्ययन होता है। यह सबसे अधिक गहन और व्यक्तिनिष्ठ होता है।
  - **वैज्ञानिक/तकनीकी शैली:** वस्तुनिष्ठता, स्पष्टता और तार्किक प्रस्तुति इसकी विशेषताएँ हैं। इसमें भावनात्मक भाषा का अभाव होता है।
  - **प्रशासनिक/कानूनी शैली:** औपचारिक, सटीक, दोहराव वाली और अति-संरचित वाक्य विन्यास वाली।
  - **पत्रकारिता शैली:** संक्षिप्तता, तात्कालिकता और सूचनात्मकता पर ज़ोर।

### शैली विज्ञान के प्रमुख प्रकार

शैली विज्ञान को मुख्य रूप से तीन प्रकारों में बाँटा जाता है:

1. **वर्णनात्मक शैली विज्ञान:** इसका उद्देश्य किसी विशिष्ट पाठ या पाठ-समूह की शैलीगत विशेषताओं का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण और वर्णन करना है। यह केवल यह बताता है कि 'यह शैली कैसी है' और 'किन भाषिक तत्वों से बनी है', बिना कोई मूल्यांकन किए।
2. **मूल्यांकनपरक शैली विज्ञान:** यह वर्णनात्मक विश्लेषण से एक कदम आगे बढ़कर शैली की प्रभावशीलता, उपयुक्तता, और कलात्मकता का मूल्यांकन करता है। यह तय करता है कि क्या शैली अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रही है और क्या यह 'अच्छी' या 'बदसूरत' है, यद्यपि ऐसे मूल्यांकन व्यक्तिपरक हो सकते हैं।
3. **तुलनात्मक शैली विज्ञान:** इसका उपयोग दो या दो से अधिक पाठों, लेखकों, विधाओं, या यहाँ तक कि भाषाओं की शैलियों की तुलना करने के लिए किया जाता है। अनुवाद अध्ययन में यह विशेष रूप से उपयोगी है, जहाँ स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच शैलीगत अंतरों का अध्ययन किया जाता है।



## साहित्यिक अध्ययन में शैली विज्ञान का महत्व

शैली विज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण अनुप्रयोग साहित्यिक समालोचना में है। यह आलोचकों को साहित्यिक कृति की सुंदरता और विशिष्टता को केवल व्यक्तिगत भावना के आधार पर नहीं, बल्कि ठोस भाषिक साक्ष्य के आधार पर समझने का उपकरण प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, किसी कवि की भाषा में क्रियाविशेषणों की अधिकता, या संज्ञाओं की कमी, या विशिष्ट प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग, शैली वैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से ही उसके काव्य व्यक्तित्व की पहचान कराता है। यह पाठ के भावात्मक, बौद्धिक और सौंदर्यपरक प्रभावों की व्याख्या करने का एक वैज्ञानिक मार्ग है। संक्षेप में, शैली विज्ञान हमें यह समझने में मदद करता है कि भाषा कैसे कला का रूप धारण करती है।

---

### 5.2.2 कोश विज्ञान का सामान्य परिचय: शब्दकोश निर्माण का विज्ञान

---

कोश विज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है जो किसी भाषा के शब्द भंडार की प्रकृति, उत्पत्ति, विकास, संरचना, वर्गीकरण और उसके अर्थगत संबंधों का अध्ययन करती है। यह 'शब्द' को अपनी अध्ययन इकाई मानता है और यह जानने का प्रयास करता है कि शब्द कैसे बनते हैं, उनका रूप कैसे बदलता है, वे कहाँ से आते हैं (व्युत्पत्ति), और वे कैसे अपने अर्थ को व्यक्त करते हैं। कोश विज्ञान एक सैद्धांतिक अनुशासन है जो शब्द भंडार के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए नियम और सिद्धांत स्थापित करता है।

इससे जुड़ा हुआ और अत्यंत महत्वपूर्ण दूसरा शब्द है कोशकला या शब्दकोश निर्माण। जहाँ कोश विज्ञान शब्द भंडार का सैद्धांतिक अध्ययन है, वहीं कोशकला शब्दकोशों के निर्माण की कला और विज्ञान है। यह एक व्यावहारिक अनुप्रयोग है, जो कोश विज्ञान द्वारा स्थापित सिद्धांतों का उपयोग करके वास्तविक शब्दकोशों को संकलित करता है। इसलिए, 'कोश विज्ञान' के व्यापक संदर्भ में अक्सर 'शब्दकोश निर्माण का विज्ञान' यानी कोशकला को ही समझा जाता है। कोशकला का लक्ष्य है भाषा के शब्दों को व्यवस्थित, क्रमबद्ध और उपयोग में आसान तरीके से प्रस्तुत करना।

## कोश विज्ञान और कोशकला: सैद्धांतिक बनाम व्यावहारिक पक्ष

भाषा विज्ञान  
की प्रमुख  
शाखाएँ



इन दोनों के बीच का अंतर समझना महत्वपूर्ण है:

- **कोश विज्ञान:** यह शब्द और शब्द भंडार की **प्रकृति** का अध्ययन है। यह देखता है कि शब्द क्या है, शब्द कैसे वर्गीकृत किए जाते हैं (जैसे संज्ञा, क्रिया), बहु-शब्दीय इकाइयाँ (जैसे मुहावरे) क्या हैं, शब्दों के अर्थ कैसे विकसित होते हैं (अर्थ-विज्ञान), और शब्दकोश निर्माण के लिए कौन से सैद्धांतिक आधार ज़रूरी हैं।
- **कोशकला:** यह शब्दकोशों के **निर्माण** की तकनीक है। यह कोश विज्ञान द्वारा दिए गए सैद्धांतिक ज्ञान का उपयोग करके शब्द प्रविष्टियों का चयन करता है, उन्हें क्रमबद्ध करता है, परिभाषाएँ लिखता है, व्युत्पत्ति देता है, और प्रयोग उदाहरणों का चयन करता है। यह एक इंजीनियरिंग प्रक्रिया के समान है जहाँ सिद्धांत को एक उपयोगी उत्पाद (शब्दकोश) में बदला जाता है।

### शब्दकोश निर्माण का विज्ञान

शब्दकोश निर्माण एक अत्यंत व्यवस्थित और जटिल प्रक्रिया है जिसके कई चरण होते हैं:

#### 1. प्रारंभिक चरण: योजना और आधारभूत संरचना

- **उद्देश्य निर्धारण:** सबसे पहले यह तय किया जाता है कि शब्दकोश का उद्देश्य क्या है? क्या यह बच्चों के लिए है, छात्रों के लिए है, विशेषज्ञों के लिए है, या सामान्य पाठकों के लिए? (उदाहरण: उच्चारण सिखाना, वर्तनी निश्चित करना, या ऐतिहासिक अर्थ बताना)।
- **उपयोगकर्ता विश्लेषण:** शब्दकोश किस प्रकार के उपयोगकर्ताओं के लिए बनाया जा रहा है? उनके भाषाई ज्ञान का स्तर क्या है? (जैसे, क्या वे केवल भाषा सीख रहे हैं या वे मूल वक्ता हैं?)
- **सामग्री संग्रह:** यह सबसे महत्वपूर्ण कदम है। आधुनिक कोशकला में, शब्दकोश की प्रविष्टियों और उनके प्रयोग उदाहरणों को वास्तविक भाषा-



प्रयोग के विशाल संग्रह, जिसे **कॉर्पस** कहते हैं, से लिया जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि शब्दकोश में शामिल शब्द वास्तव में प्रयोग में हैं और उनकी परिभाषाएँ भाषा के वर्तमान प्रयोग को दर्शाती हैं।

## 2. मुख्य प्रक्रियाएँ: शब्द प्रविष्टि और परिभाषा

- **शब्द प्रविष्टियों का चयन:** कॉर्पस के विश्लेषण के आधार पर यह तय किया जाता है कि किन शब्दों को शामिल करना है। आवृत्ति (Frequency) और प्रासंगिकता मुख्य मापदंड होते हैं।
- **शब्द प्रविष्टि का रूप:** यह तय करना कि शब्द प्रविष्टि को किस रूप में प्रस्तुत किया जाए (जैसे, हिंदी में क्रियाओं को मूल रूप में या अनंत रूप में)।
- **क्रम निर्धारण:** शब्दों को वर्णमाला के किस क्रम में रखना है, यह एक या दो भाषाओं वाले शब्दकोशों के लिए अलग-अलग नियम रखता है।
- **अर्थ विश्लेषण और परिभाषा लेखन:** यह कोशकला का हृदय है। एक शब्द के एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं (अनेकार्थकता)। कोशकार को उन सभी अर्थों को पहचानना होता है और उन्हें स्पष्ट, संक्षिप्त और सटीक भाषा में परिभाषित करना होता है। परिभाषाएँ ऐसी होनी चाहिए जो न केवल अर्थ को स्पष्ट करें, बल्कि उस शब्द के उपयोग को भी प्रतिबंधित न करें।
- **प्रयोग उदाहरण:** परिभाषा को समझने में मदद करने और शब्द के सही संदर्भ को दर्शाने के लिए कॉर्पस से वास्तविक प्रयोग उदाहरणों का चयन किया जाता है।

## 3. अनुपूरक जानकारी का समावेश

- **व्याकरणिक जानकारी:** प्रत्येक प्रविष्टि के साथ उसकी व्याकरणिक श्रेणी (संज्ञा, क्रिया, विशेषण), लिंग, वचन, और क्रिया के आवश्यक रूप (जैसे, सकर्मक या अकर्मक) दिए जाते हैं।
- **व्युत्पत्ति:** शब्द की ऐतिहासिक उत्पत्ति और विकास को दर्शाया जाता है। यह भाषा के इतिहास को समझने में मदद करता है।

- **उच्चारण:** शब्द का मानक उच्चारण IPA (International Phonetic Alphabet) या किसी अन्य ध्वनि संकेतन प्रणाली का उपयोग करके दिया जाता है।
- **शैलीगत और प्रयोगगत लेबल:** यह बताना कि शब्द किस संदर्भ में उपयुक्त है, जैसे (औपचारिक), (अनौपचारिक), (गंवारू), (पुराना), (तकनीकी)। यह उपयोगकर्ता को सही संदर्भ में शब्द का उपयोग करने में मदद करता है।

## शब्दकोशों के प्रकार

कोश विज्ञान शब्दकोशों को कई आधारों पर वर्गीकृत करता है:

### 1. भाषा संख्या के आधार पर:

- **एकभाषी:** एक ही भाषा के शब्दों को उसी भाषा में परिभाषित किया जाता है (जैसे, हिंदी-हिंदी शब्दकोश)।
- **द्विभाषी:** दो भाषाओं के शब्दों का अनुवाद और अर्थ दिया जाता है (जैसे, हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश)।
- **बहुभाषी:** दो से अधिक भाषाओं के शब्दों का समावेश होता है।

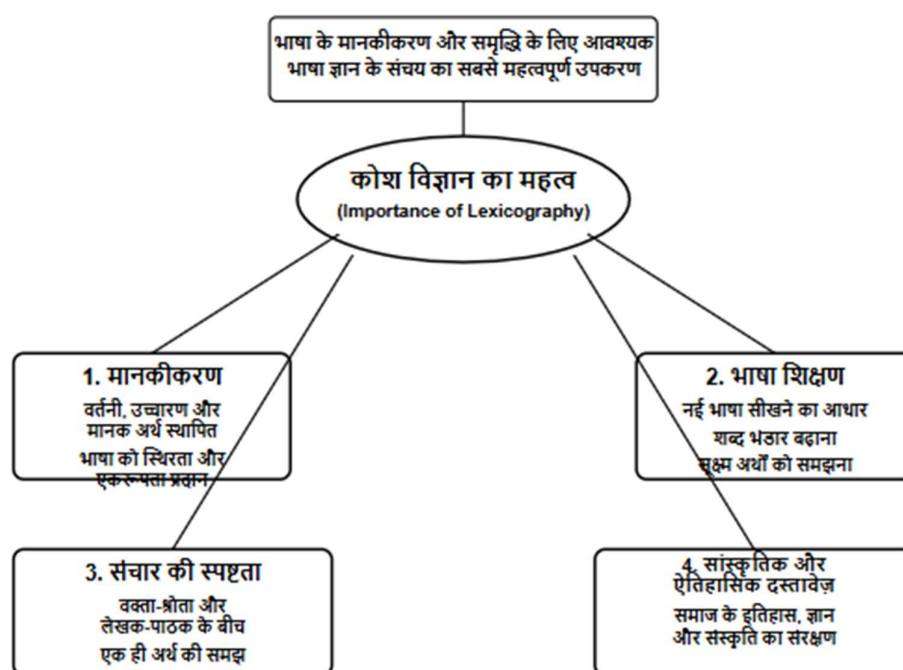
### 2. सामग्री और उद्देश्य के आधार पर:

- **सामान्य शब्दकोश:** भाषा के सभी सामान्य शब्दों को शामिल करते हैं।
- **पारिभाषिक या तकनीकी शब्दकोश:** किसी विशिष्ट विषय या क्षेत्र (जैसे चिकित्सा, इंजीनियरिंग, अर्थशास्त्र) की शब्दावली पर केंद्रित होते हैं।
- **व्युत्पत्ति शब्दकोश:** शब्दों की उत्पत्ति और ऐतिहासिक विकास पर जोर देते हैं।
- **पर्याय और विलोम शब्दकोश:** समानार्थक और विपरीतार्थक शब्दों का संग्रह करते हैं।
- **ऐतिहासिक शब्दकोश:** किसी शब्द के अर्थ में समय के साथ आए परिवर्तनों को कालक्रमानुसार दर्ज करते हैं।

- **मुहावरा और लोकोक्ति शब्दकोश:** मुहावरेदार अभिव्यक्तियों और वाक्यांशों पर केंद्रित होते हैं।

## कोश विज्ञान का महत्व

कोश विज्ञान किसी भी भाषा के मानकीकरण और समृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह भाषा के **ज्ञान के संचय** का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। इसके महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:



**चित्र 5.3: कोश विज्ञान का महत्व**

1. **मानकीकरण:** शब्दकोश वर्तनी, उच्चारण और शब्द के मानक अर्थ को स्थापित करके भाषा को स्थिरता और एकरूपता प्रदान करते हैं।
2. **भाषा शिक्षण:** यह किसी भी नई भाषा को सीखने का आधार है और मातृभाषा के उपयोगकर्ताओं को भी अपने शब्द भंडार को बढ़ाने और शब्दों के सूक्ष्म अर्थों को समझने में मदद करता है।

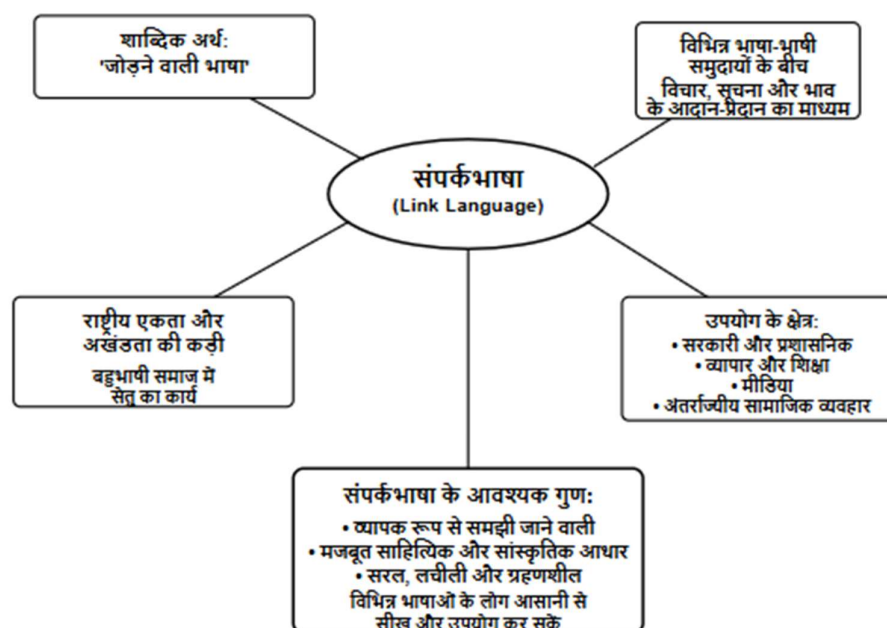
3. **संचार की स्पष्टता:** यह सुनिश्चित करता है कि वक्ता और श्रोता, या लेखक और पाठक, शब्दों के एक ही अर्थ को समझ रहे हैं, जिससे प्रभावी संचार संभव होता है।
4. **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दस्तावेज़:** शब्दकोश भाषा के माध्यम से किसी समाज के इतिहास, ज्ञान और संस्कृति को संरक्षित करते हैं, क्योंकि वे दर्शाते हैं कि समय के साथ किन अवधारणाओं और विचारों ने महत्व प्राप्त किया है।

संक्षेप में, शैली विज्ञान हमें यह सिखाता है कि भाषा का प्रयोग विविध संदर्भों और उद्देश्यों के अनुसार कैसे लचीला, व्यक्तिगत और प्रभावशाली बन जाता है, जबकि कोश विज्ञान भाषा के मूल आधार, शब्द भंडार, को वैज्ञानिक तरीके से संरचित, परिभाषित और प्रस्तुत करता है। ये दोनों अनुशासन मिलकर भाषा को एक गतिशील, बहुआयामी और अध्ययन योग्य इकाई के रूप में स्थापित करते हैं, जो हमें न केवल शब्दों के अर्थ, बल्कि उनके प्रयोग के ढंग और उनके द्वारा उत्पन्न प्रभाव को समझने में सक्षम बनाते हैं। एक तरह से, शैली विज्ञान भाषा के आत्मा का अध्ययन है, तो कोश विज्ञान उसके शरीर का, और दोनों का गहन अध्ययन भाषा की संपूर्ण समझ के लिए अपरिहार्य है।

## इकाई 5.3: संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी

### 5.3.1 संपर्कभाषा: अर्थ और हिन्दी की भूमिका

संपर्कभाषा का शाब्दिक अर्थ है 'जोड़ने वाली भाषा'। यह वह भाषा होती है जो किसी बहुभाषी समाज या राष्ट्र के विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच विचारों, सूचनाओं और भावनाओं के आदान-प्रदान का माध्यम बनती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र के संदर्भ में संपर्कभाषा का महत्व और भी बढ़ जाता है, जहाँ प्रति कुछ किलोमीटर पर भाषा और बोली में परिवर्तन देखने को मिलता है। संपर्कभाषा राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करती है। यह भाषा न केवल सरकारी और प्रशासनिक कार्यों में सुविधा प्रदान करती है, बल्कि व्यापार, शिक्षा, मीडिया और अंतर्राज्यीय सामाजिक व्यवहार के लिए भी अनिवार्य होती है। एक प्रभावी संपर्कभाषा को कुछ विशिष्ट गुण धारण करने होते हैं: यह व्यापक रूप से समझी जाने वाली होनी चाहिए, इसका साहित्यिक और सांस्कृतिक आधार मजबूत होना चाहिए, और यह सरल, लचीली और ग्रहणशील होनी चाहिए ताकि विभिन्न भाषाओं के लोग इसे आसानी से सीख और उपयोग कर सकें।



चित्र 5.4: संपर्कभाषा

भारत में, ऐतिहासिक, सामाजिक और भाषाई कारणों से, हिन्दी ने संपर्कभाषा की यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मध्यकाल से ही, जब खड़ी बोली हिंदी (या हिन्दुस्तानी) ने विभिन्न क्षेत्रों के संतों, व्यापारियों और यात्रियों के बीच संवाद का माध्यम बनना शुरू किया, तभी से इसकी नींव पड़ गई थी। भक्ति आंदोलन के संतों, जैसे कबीर और नानक, की भाषा (सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी) में हिंदी का ही एक रूप था, जिसने इसे उत्तर से लेकर दक्षिण तक एक व्यापक जन-आधार दिया। ब्रिटिश शासन के दौरान, हालाँकि अंग्रेजी प्रशासन की भाषा थी, परंतु जनता के स्तर पर और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, हिंदी ने राष्ट्रीय भावनाओं को व्यक्त करने और देश के विभिन्न हिस्सों के नेताओं को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, और डॉ. राजेंद्र प्रसाद जैसे नेताओं ने हिंदी के राष्ट्रीय महत्व को समझा और इसे राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की वकालत की। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि कोई भी विदेशी भाषा (जैसे अंग्रेजी) इतने विशाल और भावनात्मक देश की संपर्कभाषा या राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती, बल्कि वह भाषा बन सकती है जो जनता की भाषा हो।

स्वतंत्रता के पश्चात्, हिंदी की भूमिका एक अनौपचारिक सामाजिक संपर्कभाषा से बढ़कर सरकारी और प्रशासनिक संपर्कभाषा की हो गई। हालाँकि दक्षिण भारत में हिंदी को लेकर कुछ विरोध देखने को मिले, लेकिन धीरे-धीरे व्यावसायिक, मनोरंजन (विशेष रूप से फिल्म उद्योग), और मीडिया के माध्यम से हिंदी का प्रभाव पूरे देश में बढ़ता गया। आज, हिंदी को भारत की सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा होने का गौरव प्राप्त है। यह न केवल उत्तर भारत की मातृभाषा है, बल्कि यह गैर-हिंदी भाषी राज्यों में भी दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में व्यापक रूप से सीखी और समझी जाती है। रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों, व्यापारिक केंद्रों और पर्यटन स्थलों पर, हिंदी अक्सर विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संवाद का सबसे विश्वसनीय और सुलभ माध्यम बनती है। हिंदी की यह व्यापक स्वीकार्यता और समझ ही इसे भारत की प्रभावी संपर्कभाषा बनाती है, जो देश के सांस्कृतिक और भौगोलिक विखंडन को पाटकर सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार, हिंदी की संपर्कभाषा के रूप में भूमिका न केवल भाषा विज्ञान की दृष्टि से, बल्कि राष्ट्रीय एकीकरण और सामाजिक संवाद की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह देश की 'बहुलता में एकता' की भावना को मूर्त रूप देने वाली भाषा है।



### 5.3.2 राजभाषा के रूप में हिन्दी: संवैधानिक स्थिति और महत्व

राजभाषा वह भाषा होती है जिसका उपयोग किसी देश के सरकारी कामकाज, प्रशासन, न्यायपालिका और विधायिका में किया जाता है। यह भाषा देश के शासन को जनता तक पहुँचाने और जनता के साथ संवाद स्थापित करने का आधिकारिक माध्यम होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारत के संविधान निर्माताओं के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह तय करना था कि नवगठित गणराज्य की राजभाषा क्या होगी। इस विषय पर गहन विचार-विमर्श और बहस हुई, क्योंकि भारत में अंग्रेजी को हटाकर किसी एक भारतीय भाषा को राजभाषा बनाना एक अत्यधिक संवेदनशील राजनीतिक और भावनात्मक मुद्दा था।

#### संवैधानिक स्थिति

भारतीय संविधान के भाग 17 (अनुच्छेद 343 से 351 तक) में राजभाषा से संबंधित प्रावधान निहित हैं, जो हिंदी की संवैधानिक स्थिति को स्पष्ट करते हैं।

1. **अनुच्छेद 343(1):** यह सबसे महत्वपूर्ण अनुच्छेद है, जो स्पष्ट करता है कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप (1, 2, 3...) प्रयोग किया जाएगा। यह प्रावधान हिंदी को भारत सरकार के कामकाज की मुख्य भाषा के रूप में स्थापित करता है।
2. **अनुच्छेद 343(2):** इस अनुच्छेद में यह व्यवस्था की गई थी कि संविधान के प्रारंभ होने के 15 वर्षों की अवधि (अर्थात् 1965 तक) के लिए उन सभी सरकारी कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग जारी रहेगा, जिनके लिए पहले उसका प्रयोग किया जा रहा था। यह प्रावधान इसलिए रखा गया था ताकि हिंदी के गैर-भाषी क्षेत्रों को राजभाषा परिवर्तन के लिए पर्याप्त समय मिल सके और सरकारी कामकाज में कोई बाधा न आए।
3. **अनुच्छेद 343(3):** इसमें संसद को यह अधिकार दिया गया कि वह 1965 के बाद भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने के संबंध में कानून बना सकती है। इसी अनुच्छेद के तहत, राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित किया गया, जिसने हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी को भी राजभाषा के रूप में अनिश्चित काल तक उपयोग करने की अनुमति दी। यह अधिनियम हिंदी को आधिकारिक रूप से देश की

एकमात्र राजभाषा बनाने के प्रयासों को स्थगित करता है, जिससे गैर-हिंदी भाषी राज्यों की चिंताओं को दूर किया जा सके।

4. **अनुच्छेद 344:** यह राजभाषा आयोग और संसदीय राजभाषा समिति के गठन का प्रावधान करता है। इसका उद्देश्य हिंदी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि करने और अंग्रेजी के प्रयोग को सीमित करने के संबंध में राष्ट्रपति को सिफारिशें देना था। प्रथम राजभाषा आयोग का गठन 1955 में श्री बी.जी. खेर की अध्यक्षता में किया गया था।
5. **अनुच्छेद 345:** यह राज्यों को उनकी विधानमंडल द्वारा कानून बनाकर राज्य के भीतर या किन्हीं सरकारी कार्यों के लिए एक या अधिक भाषाओं (जो राज्य में उपयोग होती हों) को राजभाषा के रूप में अपनाने की अनुमति देता है। यह प्रावधान क्षेत्रीय भाषाई स्वायत्तता सुनिश्चित करता है।
6. **अनुच्छेद 346:** इसमें एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि (संचार) की राजभाषा का उल्लेख है। इसमें कहा गया है कि संघ की राजभाषा (हिंदी/अंग्रेजी) का प्रयोग किया जाएगा, जब तक कि दो संबंधित राज्य आपसी समझौते से किसी अन्य भाषा को प्रयोग करने पर सहमत न हों।
7. **अनुच्छेद 351:** यह संघ सरकार को हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश देने का प्रावधान करता है। इसका उद्देश्य हिंदी को एक समृद्ध और अभिव्यंजक भाषा के रूप में विकसित करना है, जो भारत की समग्र संस्कृति के सभी तत्वों को अभिव्यक्त करने में सक्षम हो, और इसकी शब्दावली के लिए मुख्यतः संस्कृत और गौणतः अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण करे।

इसके अतिरिक्त, संविधान की आठवीं अनुसूची में भारत की 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है। हालाँकि, इन भाषाओं को 'राष्ट्रीय भाषा' का दर्जा नहीं दिया गया है, लेकिन वे राजभाषा हिंदी के साथ-साथ देश की प्रमुख और महत्वपूर्ण भाषाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। न्यायपालिका (उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय) की भाषा के संबंध में भी, अनुच्छेद 348 में प्रावधान है कि सभी कार्यवाही अंग्रेजी में होगी, जब तक कि संसद कानून द्वारा अन्यथा प्रावधान न करे।



राजभाषा के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति का महत्व बहुआयामी है:

1. **राष्ट्रीय अस्मिता और स्वाभिमान:** हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलना गुलामी की मानसिकता को त्यागकर राष्ट्रीय अस्मिता और स्वदेशी स्वाभिमान को स्थापित करने का प्रतीक था। यह भारतीय संस्कृति और लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप शासन स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।
2. **शासन की सुगमता और पारदर्शिता:** एक आम भारतीय नागरिक के लिए यह आवश्यक है कि वह शासन की भाषा को समझे। हिंदी देश के एक बड़े हिस्से की भाषा होने के कारण, यह सरकारी योजनाओं, नीतियों और प्रशासनिक फैसलों को जनता तक पहुँचाने और जनता की सहभागिता सुनिश्चित करने का सबसे प्रभावी माध्यम है। इससे प्रशासन में पारदर्शिता बढ़ती है और जनता तथा सरकार के बीच की दूरी कम होती है।
3. **शैक्षणिक और बौद्धिक विकास:** अपनी मातृभाषा या देश की संपर्कभाषा में ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करना और देना मानसिक विकास और सृजनात्मकता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग विभिन्न विषयों के मानकीकरण और सरकारी शब्दावली के निर्माण को प्रेरित करता है, जिससे उच्च शिक्षा और शोध को बढ़ावा मिलता है।
4. **प्रशासनिक एकता और समन्वय:** हालाँकि भारत एक संघीय ढाँचा है, फिर भी केंद्र सरकार और विभिन्न राज्यों के बीच प्रशासनिक समन्वय और अंतर्राज्यीय संचार के लिए एक साझी भाषा का होना आवश्यक है। हिंदी (और अंग्रेजी) यह साझी ज़मीन प्रदान करती है, जिससे नीतियाँ और कार्यक्रम पूरे देश में एक समान रूप से लागू किए जा सकें।
5. **भाषा का मानकीकरण और संवर्धन:** राजभाषा का दर्जा मिलने से हिंदी के मानकीकरण (व्याकरण, वर्तनी और शब्दावली) पर विशेष बल दिया गया है। अनुच्छेद 351 के तहत, सरकार का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी का विकास करे, जिससे यह अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों और शैलियों को आत्मसात कर सके और एक समृद्ध, समावेशी और राष्ट्रव्यापी भाषा बन सके। यह हिंदी के निरंतर विकास और आधुनिकीकरण को सुनिश्चित करता है।

राजभाषा के रूप में हिंदी की स्थिति एक समझौते और संतुलन का परिणाम है। एक ओर, यह राष्ट्रीय एकता और भारतीयता का प्रतीक है; दूसरी ओर, यह क्षेत्रीय भावनाओं और भाषाई विविधता का सम्मान करते हुए अंग्रेजी के साथ सह-अस्तित्व बनाए रखती है। इस संवैधानिक व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य हिंदी के क्रमिक विकास और प्रयोग को बढ़ावा देना है, ताकि यह बिना किसी विरोध के देश के हर क्षेत्र में शासन की मुख्य भाषा के रूप में सहजता से स्थापित हो सके, और साथ ही भारत की भाषाई बहुलता भी अक्षुण्ण बनी रहे।

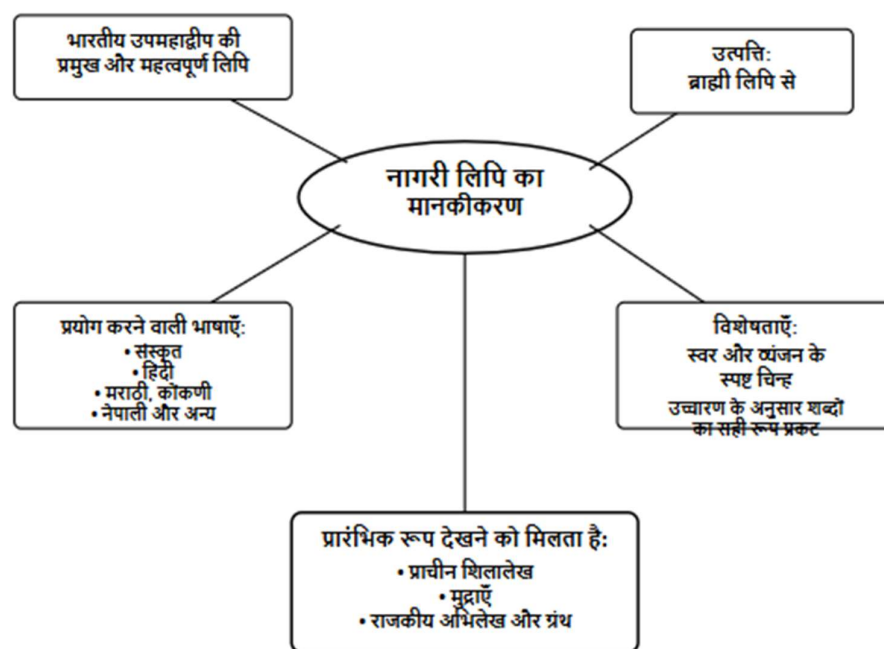
भाषा विज्ञान  
की प्रमुख  
शाखाएँ



## इकाई 5.4: नागरी लिपि का मानकीकरण

### 5.4.1 नागरी लिपि का मानकीकरण

नागरी लिपि भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख और अत्यंत महत्वपूर्ण लिपियों में से एक है। इसका प्रयोग प्राचीन काल से ही संस्कृत, हिंदी, मराठी, कोंकणी, नेपाली और अन्य भाषाओं में होता आया है। इसकी उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से मानी जाती है, जो प्राचीन भारत में विकसित हुई थी। नागरी लिपि में स्वर और व्यंजन के स्पष्ट चिन्ह होते हैं, जो उच्चारण के अनुसार शब्दों का सही रूप प्रकट करते हैं। प्राचीन शिलालेखों, मुद्राओं, राजकीय अभिलेखों और ग्रंथों में इसका प्रारंभिक रूप देखा जा सकता है।



चित्र 5.5: नागरी लिपि का मानकीकरण

इतिहास में नागरी लिपि के मानकीकरण की आवश्यकता तब महसूस हुई, जब विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं में इसके प्रयोग में अंतर दिखाई देने लगा। अलग-अलग प्रदेशों में लोग अपनी स्थानीय बोलियों और उच्चारण के अनुसार स्वर और व्यंजन के रूप बदलने लगे थे। उदाहरण के लिए, संस्कृत और प्राचीन हिंदी में 'श' और 'ष' के प्रयोग में अंतर स्पष्ट नहीं था, या विभिन्न क्षेत्रों में 'अ' की मात्रा के लेखन में भिन्नता देखी जाती थी। इससे लेखन और पढ़ाई में असमानता और भ्रम उत्पन्न होने लगा।

19वीं और 20वीं सदी में शिक्षा, प्रशासन, प्रेस और साहित्य के प्रसार के साथ यह समस्या और अधिक गंभीर हो गई। इस समय विद्वानों, भाषा आयोगों और शिक्षण संस्थानों ने नागरी लिपि के स्वर और व्यंजन की सूची तैयार करने और उन्हें मानकीकृत करने का प्रयास किया। इस प्रक्रिया में प्रत्येक वर्ण की सही ध्वनि, उच्चारण और लेखन शैली पर विशेष ध्यान दिया गया। इसके परिणामस्वरूप एक ऐसा मानक विकसित हुआ, जिसे सभी भाषाओं में अपनाना संभव था। मानकीकरण के प्रयास में भारतीय भाषाओं की विविधता को ध्यान में रखा गया। उदाहरण के लिए, हिंदी और संस्कृत में 'श्र' और 'क्ष' जैसे संयुक्त व्यंजन विशेष रूप से मानकीकृत किए गए। मराठी और कोंकणी जैसी भाषाओं के लिए भी स्थानीय ध्वनि और उच्चारण को ध्यान में रखते हुए संशोधन किया गया। इस प्रकार, मानकीकरण ने केवल लिपि को सुसंगत बनाने का काम नहीं किया, बल्कि विभिन्न भाषाओं में समान रूप से इसे अपनाने की दिशा भी सुनिश्चित की।

वर्तमान समय में नागरी लिपि का मानकीकरण डिजिटल युग में और भी महत्वपूर्ण हो गया है। कंप्यूटर, मोबाइल और अन्य डिजिटल उपकरणों पर लेखन के लिए **यूनिकोड प्रणाली** का प्रयोग किया जाता है। यूनिकोड ने नागरी लिपि को सभी डिजिटल प्लेटफार्मों पर एक समान और मानकीकृत रूप में उपलब्ध कराया। अब हिंदी, मराठी, नेपाली और अन्य भाषाओं में लेखन, पढ़ाई और दस्तावेज़ीकरण आसानी से किया जा सकता है। यूनिकोड ने न केवल लेखन को सरल बनाया है, बल्कि यह सुनिश्चित किया है कि किसी भी उपकरण या सॉफ्टवेयर पर लेखन का स्वरूप समान रहे। मानकीकरण से व्याकरण, उच्चारण और वर्तनी में स्थिरता आई है। इसके माध्यम से साहित्यकार, शिक्षक, पत्रकार और छात्र अब एक समान मानक के अनुसार लेखन कर सकते हैं। इससे भाषा की शुद्धता बनी रहती है और शब्दों के अर्थ में भ्रम नहीं उत्पन्न होता। उदाहरण स्वरूप, 'राम' और 'रामः' जैसे शब्दों का सही और स्पष्ट लेखन सुनिश्चित हो गया है। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी नागरी लिपि का मानकीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल भाषा की संरचना और शुद्धता बनाए रखने में मदद करता है, बल्कि विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच संवाद को सरल और प्रभावी बनाता है। मानकीकरण के कारण साहित्यिक कृतियों, शैक्षिक ग्रंथों और प्रशासनिक दस्तावेज़ों में एकरूपता आई है।



शिक्षा और तकनीकी क्षेत्र में भी मानकीकरण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, टाइपिंग उपकरण, डिजिटल शब्दकोश और OCR (Optical Character Recognition) तकनीकें मानक नागरी लिपि पर आधारित हैं। इससे शुद्ध और मानकीकृत लेखन संभव हुआ है और गलतियों की संभावना बहुत कम हो गई है।

---

#### 5.4.2 मानक वर्तनी

---

नागरी लिपि के मानकीकरण के साथ ही **मानक वर्तनी** की आवश्यकता भी बढ़ गई। वर्तनी का अर्थ है शब्दों को उनके सही रूप में लिखना। यह भाषा की शुद्धता, स्पष्टता और समझ में सहूलियत सुनिश्चित करती है। मानक वर्तनी का पालन न केवल लेखन को व्यवस्थित बनाता है, बल्कि शब्दों के सही उच्चारण और अर्थ को भी बनाए रखता है।

मानक वर्तनी के कुछ प्रमुख नियम इस प्रकार हैं:

1. **स्वर और व्यंजन का स्पष्ट प्रयोग:** प्रत्येक स्वर और व्यंजन का निश्चित उच्चारण और लेखन होता है। उदाहरण के लिए, हिंदी में 'अ', 'आ', 'इ', 'ई' और 'क', 'ख', 'ग', 'घ' का प्रयोग निश्चित रूप से किया जाता है। इससे उच्चारण और अर्थ में कोई भ्रम नहीं उत्पन्न होता।
2. **संयुक्त व्यंजन या संयोगाक्षर:** जब दो या अधिक व्यंजन एक साथ मिलते हैं, तो उन्हें विशेष चिन्हों के माध्यम से लिखा जाता है। जैसे 'क' और 'ष' मिलकर 'क्ष' बनाते हैं। मानक वर्तनी में इसका सही प्रयोग अनिवार्य है। इसी प्रकार, 'ज' और 'व' मिलकर 'ज्ञ' बनते हैं।
3. **मात्राओं का सही प्रयोग:** स्वर को लम्बा या छोटा लिखने के लिए मात्रा चिन्हों का प्रयोग आवश्यक है। उदाहरण स्वरूप, 'राम' और 'रम' में मात्राओं के अंतर से अर्थ पूरी तरह बदल जाता है।
4. **विसर्ग और अनुस्वार:** संस्कृत और हिंदी में विसर्ग (◌ः) और अनुस्वार (◌ं) का प्रयोग शब्दों के उच्चारण और अर्थ के लिए महत्वपूर्ण है। मानक वर्तनी में इन चिन्हों का सही प्रयोग आवश्यक है।

5. **संधि नियमों का पालन:** शब्दों के निर्माण में उपसर्ग, प्रत्यय और संधि नियमों का पालन आवश्यक है। उदाहरण के लिए, 'राम + ईश्वर' संधि करके 'रामेश्वर' बनता है। इससे शब्दों का सही अर्थ और प्रवाह सुनिश्चित होता है।
6. **अभिधान और शब्दकोश आधारित लेखन:** मानक वर्तनी सुनिश्चित करने के लिए विद्वानों और भाषा आयोगों द्वारा प्रकाशित शब्दकोशों और अभिधान का प्रयोग आवश्यक है। यह लेखन में एकरूपता और शुद्धता लाता है।

मानक वर्तनी का पालन न केवल शिक्षा और साहित्य में आवश्यक है, बल्कि प्रशासन, मीडिया और डिजिटल उपकरणों में भी अनिवार्य हो गया है। सरकारी दस्तावेज़, समाचार पत्र, शैक्षिक पाठ्यपुस्तकें और साहित्यिक रचनाएँ अब मानक वर्तनी पर आधारित होती हैं। कंप्यूटर और मोबाइल में टाइपिंग के लिए उपलब्ध सॉफ्टवेयर स्वतः सही शब्द और वर्तनी सुझाते हैं, जिससे लेखन और अधिक शुद्ध और प्रभावी हो गया है। मानक वर्तनी का महत्व शिक्षा में अत्यधिक है। छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए सही वर्तनी का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि इससे उनके अध्ययन और शोध कार्यों में त्रुटियों की संभावना कम होती है। इसके अलावा, साहित्यकार और पत्रकार मानक वर्तनी का पालन करके पाठकों को स्पष्ट और प्रभावी संदेश प्रदान कर सकते हैं।

साहित्यिक दृष्टि से भी मानक वर्तनी भाषा की सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति को बढ़ाती है। कवि, लेखक और नाटककार यदि मानक वर्तनी का पालन करते हैं, तो उनके शब्द अधिक प्रभावशाली और पठनीय बनते हैं। यही कारण है कि आधुनिक साहित्य और डिजिटल लेखन में मानक वर्तनी पर विशेष ध्यान दिया जाता है। निष्कर्षतः, नागरी लिपि का मानकीकरण और मानक वर्तनी का पालन भाषा की शुद्धता, स्पष्टता और सुसंगतता सुनिश्चित करता है। यह न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि आधुनिक युग में शिक्षा, प्रशासन और तकनीकी कार्यों के लिए भी आवश्यक है। मानक लिपि और वर्तनी के माध्यम से भारतीय भाषाओं को एक सामूहिक पहचान और स्थायित्व प्राप्त होता है।



---

## इकाई 5.5: देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

---

---

### 5.5.1 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

---

- वैज्ञानिक और व्यावहारिक गुण

देवनागरी लिपि एक ऐसी वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक लिपि है जो भारतीय संस्कृति और भाषाविज्ञान की अमूल्य धरोहर मानी जाती है। इस लिपि की अनेक विशेषताओं ने इसे विश्व की अन्य लिपियों से श्रेष्ठ बनाया है। देवनागरी का इतिहास प्राचीन ब्राह्मी लिपि से जुड़ा हुआ है और इसका क्रमिक विकास गुप्तकालीन लिपि से होते हुए आज के स्वरूप तक पहुँचा है। देवनागरी लिपि की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी वैज्ञानिकता में निहित है। इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित संकेत है और प्रत्येक संकेत से केवल एक ही ध्वनि का बोध होता है। यह विशेषता इसे रोमन, अरबी या चीनी लिपि से कहीं अधिक सुव्यवस्थित बनाती है। रोमन लिपि में जहाँ 'C' का कभी 'स' और कभी 'क' के रूप में उच्चारण होता है, वहीं देवनागरी में ऐसी कोई अव्यवस्था नहीं है। इसी प्रकार अंग्रेजी में 'G' का कहीं 'ज' और कहीं 'ग' उच्चारण होता है, परंतु हिन्दी में प्रत्येक वर्ण का उच्चारण निश्चित और स्पष्ट है।

देवनागरी लिपि की दूसरी प्रमुख विशेषता इसकी ध्वन्यात्मकता है। भाषाविज्ञान की दृष्टि से यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो उच्चारण और लेखन के बीच पूर्ण तालमेल स्थापित करती है। इसमें जो कुछ लिखा जाता है, वही उच्चारित होता है और जो उच्चारित होता है, वही लिखा जाता है। यह गुण इसे विश्व की सबसे पारदर्शी लिपियों में से एक बनाता है। भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे गये पाठ को लगभग हू-ब-हू उच्चारण किया जा सकता है। यह सुविधा रोमन लिपि में उपलब्ध नहीं है जहाँ विशेष मानकीकरण के बिना सही उच्चारण असंभव है। देवनागरी लिपि में स्वर और व्यंजन का वैज्ञानिक विभाजन एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है। इसमें 14 स्वर और 34 व्यंजन हैं जो कुल मिलाकर 48 मूल वर्ण बनाते हैं। कुछ विद्वान इसमें 52 वर्ण गिनते हैं जिसमें संयुक्त वर्ण क्ष, त्र, ज्ञ भी सम्मिलित हैं। स्वरों में ह्रस्व और दीर्घ का स्पष्ट भेद है - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। यह व्यवस्था रोमन लिपि से कहीं अधिक स्पष्ट है जहाँ 'A' को कभी अ और कभी आ दोनों तरह से पढ़ा जाता है। व्यंजनों का वर्गीकरण भी

पूर्णतः वैज्ञानिक है - कण्ठ्य (क वर्ग), तालव्य (च वर्ग), मूर्धन्य (ट वर्ग), दन्त्य (त वर्ग), और ओष्ठ्य (प वर्ग)। प्रत्येक वर्ग में अघोष-घोष और अल्पप्राण-महाप्राण का सुव्यवस्थित क्रम है।

देवनागरी की मात्रा प्रणाली इसकी एक अत्यंत व्यावहारिक विशेषता है। इसमें स्वरों के दो रूप हैं - स्वतंत्र रूप और मात्रा रूप। शब्द के आरंभ में और अन्य स्वरों के साथ स्वर पूरे रूप में लिखे जाते हैं जैसे आइए, आओ, आऊँगा। व्यंजनों के साथ इनका मात्रा रूप प्रयुक्त होता है जैसे कैसे, कौन। यह व्यवस्था लेखन में स्थान की बचत करती है और पठन-पाठन में सुविधा प्रदान करती है। मात्राओं का स्थान भी वैज्ञानिक है - कुछ वर्ण के ऊपर (जैसे ि), कुछ नीचे (जैसे ु, ू), कुछ आगे (जैसे े, ै), और कुछ पीछे (जैसे ा) लगती हैं। संयुक्ताक्षरों की व्यवस्था देवनागरी की एक विशिष्ट विशेषता है। जब दो या अधिक व्यंजन एक साथ आते हैं तो वे संयुक्त होकर एक नया रूप बनाते हैं। इन संयुक्ताक्षरों में पहला व्यंजन स्वर रहित और दूसरा स्वर सहित होता है। उदाहरण के लिए त्र = त् + र् + अ, जैसा कि पत्रिका, त्राण, सर्वत्र में देखा जा सकता है। यह व्यवस्था भाषा की ध्वनि संरचना को सही तरीके से प्रस्तुत करती है और उच्चारण में स्पष्टता लाती है। संयुक्ताक्षरों के कुछ विशेष रूप जैसे क्ष, त्र, ज्ञ अपने आप में पूर्ण वर्ण माने जाते हैं।

शिरोरेखा देवनागरी लिपि की एक अनूठी पहचान है। प्रत्येक वर्ण और शब्द के ऊपर खींची गई यह क्षैतिज रेखा न केवल सौंदर्य प्रदान करती है बल्कि अक्षरों के बीच भेद करने में भी सहायक है। शिरोरेखा के माध्यम से 'भ' और 'म', 'घ' और 'ध' जैसे समरूप वर्णों में अंतर स्पष्ट हो जाता है। यह व्यवस्था पठनीयता बढ़ाती है और लेखन में एकरूपता लाती है। हालांकि कुछ आधुनिक सुधारक इसे अनावश्यक मानते हैं, परंतु व्यावहारिक दृष्टि से यह देवनागरी की पहचान और उपयोगिता दोनों के लिए आवश्यक है। देवनागरी लिपि का ऐतिहासिक विकास इसकी वैज्ञानिकता का प्रमाण है। इसका विकास ब्राह्मी लिपि से शुरू होकर गुप्त लिपि और कुटिल लिपि के माध्यम से हुआ है। ब्राह्मी लिपि तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से प्रचलित थी और इससे ही अधिकांश भारतीय लिपियों का जन्म हुआ है। गुप्तकाल में इस लिपि ने एक परिष्कृत रूप धारण किया जिसे गुप्त लिपि कहा गया। छठी से आठवीं शताब्दी तक कुटिल



लिपि का प्रभाव रहा और नवीं शताब्दी से देवनागरी का आधुनिक स्वरूप विकसित होने लगा। 1000 ईस्वी तक यह अपने वर्तमान रूप में स्थापित हो गई।

भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी की व्यापक उपयोगिता इसकी एक प्रमुख विशेषता है। संस्कृत, हिन्दी, मराठी, नेपाली, कोंकणी, सिंधी, कश्मीरी, गढ़वाली, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी जैसी अनेक भाषाओं में इसका प्रयोग होता है। यह लिपि इतनी लचीली है कि विभिन्न भाषाओं की ध्वनि विशेषताओं को सफलतापूर्वक अभिव्यक्त कर सकती है। भारत की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं की लिपियाँ ब्राह्मी से उत्पन्न होने के कारण देवनागरी के समान संरचना रखती हैं, जिससे इनमें परस्पर लिप्यन्तरण आसान हो जाता है। देवनागरी लिपि की व्यावहारिक विशेषताओं में सुपाठनीयता एक मुख्य गुण है। इसे आसानी से पढ़ा और लिखा जा सकता है। उर्दू की तरह इसमें पढ़ने की भ्रांति नहीं होती जहाँ 'जूता' को 'जोता' या 'जौता' के रूप में गलत पढ़ने की संभावना रहती है। देवनागरी में जो लिखा है वही पढ़ा जाता है और जैसा उच्चारण करना है वैसा ही लिखा जाता है। यह गुण इसे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से उपयोगी बनाता है क्योंकि नए पाठक को पढ़ना सीखने में कम कठिनाई होती है।

देवनागरी लिपि में ध्वनियों की पूर्णता, पर्याप्तता और स्पष्टता की दृष्टि से यह संसार में अद्वितीय है। इसमें मानव मुख से निकलने वाली लगभग सभी ध्वनियों के लिए अलग-अलग संकेत उपलब्ध हैं। भारतीय भाषाओं की जटिल ध्वनि व्यवस्था को यह सफलतापूर्वक अभिव्यक्त करती है। अनुनासिक ध्वनियों के लिए बिन्दु और चन्द्रबिन्दु का प्रयोग, विसर्ग के लिए अलग संकेत, और उच्चारण के अनुसार व्यंजनों का वर्गीकरण इसकी वैज्ञानिकता को प्रदर्शित करता है। स्वर-व्यंजन संयोजन की दृष्टि से देवनागरी एक आदर्श अबुगीदा लिपि है। इसमें प्रत्येक व्यंजन के साथ एक अंतर्निहित स्वर 'अ' होता है और अन्य स्वरों को मात्रा के रूप में जोड़ा जाता है। यह व्यवस्था अक्षरात्मक लिपियों से कहीं अधिक व्यवस्थित है। व्यंजनों की आक्षरिकता इस लिपि की विशेषता है - जैसे च् + अ = च। यह व्यवस्था लेखन में स्थान की बचत करती है। उदाहरण के लिए 'कमल' देवनागरी में तीन वर्णों से लिखा जाता है जबकि रोमन में छह वर्ण लगते हैं।

देवनागरी की सामाजिक और सांस्कृतिक उपयोगिता भी अत्यधिक व्यापक है। भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता देवनागरी लिपि के कारण ही मिली। इसकी वैज्ञानिकता और व्यावहारिकता ने इसे राष्ट्रीय एकता का माध्यम बनने में योगदान दिया है। उन्नीसवीं सदी में न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र ने भारत की सभी भाषाओं के लिए नागरी को एक समान लिपि बनाने का प्रस्ताव रखा था। यद्यपि यह प्रयास पूर्णतः सफल नहीं हुआ, परंतु इससे देवनागरी की क्षमता का पता चलता है। आधुनिक युग में देवनागरी का डिजिटल प्रयोग इसकी उपयोगिता को और भी बढ़ा रहा है। कंप्यूटर और स्मार्टफोन में इसका प्रयोग व्यापक रूप से हो रहा है। इंटरनेट पर हिन्दी सामग्री का विस्तार, सोशल मीडिया पर देवनागरी का उपयोग, और डिजिटल शिक्षा में इसकी भूमिका इसे 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुकूल बना रही है। यूनिकोड मानक में इसका समावेश विश्वव्यापी स्तर पर इसकी पहुँच बढ़ा रहा है।

देवनागरी लिपि की तकनीकी विशेषताओं में इसकी संगणकीय सुविधा भी महत्वपूर्ण है। इसमें फॉन्ट डिज़ाइन और टाइपिंग की दृष्टि से निरंतर सुधार हो रहे हैं। ऑटोमेटिक स्पेलिंग और ग्रामर चेकर का विकास, ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (OCR) तकनीक में प्रगति, और मशीन लर्निंग एल्गोरिदम में देवनागरी का प्रयोग इसे तकनीकी युग के लिए तैयार कर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में देवनागरी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसकी वैज्ञानिक संरचना के कारण बच्चों के लिए पढ़ना सीखना आसान हो जाता है। ध्वनि और चिह्न के बीच स्पष्ट संबंध होने से पढ़ाई में कम समय लगता है। साक्षरता कार्यक्रमों में देवनागरी का प्रयोग विशेष रूप से प्रभावी है क्योंकि व्यस्क शिक्षार्थी भी इसे जल्दी सीख सकते हैं। भारत की मातृभाषा आधारित शिक्षा नीति में देवनागरी का योगदान अमूल्य है। साहित्य और कला के क्षेत्र में देवनागरी का योगदान अतुलनीय है। संस्कृत से लेकर आधुनिक हिन्दी साहित्य तक की समस्त धरोहर इसी लिपि में संरक्षित है। वैदिक साहित्य, पुराण, महाकाव्य, आधुनिक कविता, उपन्यास, नाटक - सभी विधाओं में देवनागरी का प्रयोग हुआ है। कैलिग्राफी और देवनागरी कला की परंपरा इसे केवल संप्रेषण का माध्यम न रखकर कलात्मक अभिव्यक्ति का साधन भी बनाती है।



धार्मिक और आध्यात्मिक परंपरा में देवनागरी का स्थान अद्वितीय है। हिन्दू, बौद्ध, जैन धर्मों के अधिकांश ग्रंथ देवनागरी में लिखे गये हैं या लिप्यंतरित किये गये हैं। मंत्र, श्लोक, स्तोत्र आदि की शुद्धता बनाये रखने में इस लिपि का योगदान महत्वपूर्ण है। धार्मिक अनुष्ठानों में प्रयुक्त होने वाले संस्कृत श्लोकों का सही उच्चारण देवनागरी के कारण ही संभव हो पाता है। व्यावसायिक और प्रशासनिक उपयोग में भी देवनागरी की व्यापक भूमिका है। सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों, बैंकों में इसका प्रयोग होता है। राजभाषा अधिनियम के अनुसार केंद्र और राज्य सरकारों के कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। व्यापारिक संस्थानों में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ने से देवनागरी की उपयोगिता निरंतर बढ़ रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देवनागरी की स्वीकार्यता बढ़ रही है। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी और संस्कृत के अध्यापन के लिए इसका प्रयोग हो रहा है। प्रवासी भारतीयों द्वारा अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखने के लिए देवनागरी का उपयोग किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में हिन्दी की बढ़ती मान्यता से देवनागरी का विश्वव्यापी प्रसार हो रहा है।

भाषा संरक्षण की दृष्टि से देवनागरी का योगदान अमूल्य है। भारत की अनेक लुप्तप्राय भाषाओं और बोलियों को लिपिबद्ध करने के लिए देवनागरी का प्रयोग किया जा रहा है। इसकी लचीली संरचना विभिन्न भाषाओं की ध्वनि विशेषताओं को सही तरीके से प्रस्तुत कर सकती है। भाषा प्रलेखन और संरक्षण के कार्यों में देवनागरी एक विश्वसनीय माध्यम साबित हो रही है। वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में देवनागरी का प्रयोग भी बढ़ रहा है। भाषा प्रसंस्करण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन ट्रांसलेशन जैसे क्षेत्रों में देवनागरी पर अनुसंधान हो रहा है। ध्वनि की पहचान (स्पीच रिकॉग्निशन), हस्तलेख पहचान, और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण में देवनागरी के अनुप्रयोग विकसित हो रहे हैं। देवनागरी लिपि की कुछ सीमाएँ भी हैं जिन पर विचार आवश्यक है। शिरोरेखा के कारण लेखन में अधिक समय लगता है और टाइपिंग की गति धीमी हो सकती है। 'र' के विभिन्न रूप जैसे रात, प्रकार, कर्म, राष्ट्र में भिन्नता नए सीखने वालों के लिए कभी-कभी कठिनाई का कारण बन सकती है। संयुक्ताक्षरों की जटिलता भी कभी-कभी समस्या उत्पन्न करती है। फिर भी ये सीमाएँ इसके गुणों की तुलना में नगण्य हैं।



भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए देवनागरी लिपि निरंतर विकसित हो रही है। फॉन्ट तकनीक में सुधार, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बेहतर प्रस्तुति, और नई तकनीकों के साथ एकीकरण के प्रयास हो रहे हैं। भविष्य में वर्चुअल रियलिटी, ऑगमेंटेड रियलिटी जैसी तकनीकों में देवनागरी का प्रयोग इसकी उपयोगिता को और भी बढ़ाएगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग के क्षेत्र में हिन्दी भाषा का विस्तार देवनागरी को वैश्विक मंच पर स्थापित करने में सहायक होगा। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि अपनी वैज्ञानिकता, व्यावहारिकता, और सांस्कृतिक महत्व के कारण न केवल भारत बल्कि विश्व के लिए एक अमूल्य धरोहर है। इसकी ध्वन्यात्मकता, सुव्यवस्थित वर्ण विभाजन, मात्रा प्रणाली, और व्यापक उपयोगिता इसे आधुनिक युग की आवश्यकताओं के लिए पूर्णतः उपयुक्त बनाती है। तकनीकी प्रगति के साथ-साथ इसका विकास जारी है और भविष्य में यह और भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली है। देवनागरी केवल एक लिपि नहीं है बल्कि भारतीय संस्कृति, भाषा, और चिंतन की वैज्ञानिक परंपरा का प्रतीक है। इसका संरक्षण और विकास राष्ट्रीय हित में आवश्यक है।



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

---

## 5.6 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

---

### 5.6.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

---

1. समाज भाषा-विज्ञान का संबंध है:

- क) केवल व्याकरण से
- ख) भाषा और समाज के संबंध से
- ग) केवल साहित्य से
- घ) केवल ध्वनि से

**उत्तर:** ख) भाषा और समाज के संबंध से

2. शैली-विज्ञान का अध्ययन क्षेत्र है:

- क) ध्वनि
- ख) भाषा की विभिन्न शैलियाँ
- ग) व्याकरण
- घ) शब्दकोश

**उत्तर:** ख) भाषा की विभिन्न शैलियाँ

3. कोश-विज्ञान का संबंध है:

- क) शब्दकोश निर्माण से
- ख) व्याकरण से
- ग) साहित्य से
- घ) वाक्य रचना से

**उत्तर:** क) शब्दकोश निर्माण से

4. भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा कब मिला?

- क) 1947
- ख) 1950
- ग) 1952
- घ) 1965

**उत्तर:** ख) 1950 (14 सितम्बर)

5. संपर्क भाषा का अर्थ है:

- क) विदेशी भाषा
- ख) विभिन्न भाषा भाषियों के बीच संप्रेषण की भाषा
- ग) मातृभाषा
- घ) साहित्यिक भाषा

**उत्तर:** ख) विभिन्न भाषा भाषियों के बीच संप्रेषण की भाषा

6. देवनागरी लिपि में कितने स्वर हैं?

- क) 10
- ख) 11
- ग) 12
- घ) 13

**उत्तर:** ख) 11

7. देवनागरी लिपि की विशेषता नहीं है:

- क) वैज्ञानिक
- ख) ध्वन्यात्मक
- ग) बाएँ से दाएँ लिखी जाती है
- घ) जटिल और कठिन

**उत्तर:** घ) जटिल और कठिन

8. हिन्दी भाषा की लिपि है:

- क) रोमन
- ख) देवनागरी
- ग) गुरुमुखी
- घ) फारसी

**उत्तर:** ख) देवनागरी

9. केंद्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा देवनागरी लिपि का मानकीकरण कब किया गया?

- क) 1950
- ख) 1960



भाषा विज्ञान  
एवं हिन्दी  
भाषा

ग) 1967

घ) 1975

उत्तर: ग) 1967

**10. देवनागरी लिपि में कितने व्यंजन हैं?**

क) 30

ख) 33

ग) 35

घ) 39

उत्तर: घ) 39 (मूल व्यंजन)

---

### 5.6.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

---

1. समाज भाषा विज्ञान से आप क्या समझते हैं?
2. शैली विज्ञान और कोश विज्ञान का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. संपर्क भाषा और राजभाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. नागरी लिपि के मानकीकरण का क्या महत्व है?
5. देवनागरी लिपि की कोई तीन प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

---

### 5.6.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

---

1. समाज भाषा विज्ञान का परिचय देते हुए भाषा और समाज के संबंध की विस्तृत विवेचना कीजिए।
2. शैली विज्ञान और कोश विज्ञान का विस्तार से परिचय दीजिए। इनके महत्व पर प्रकाश डालिए।
3. संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति और महत्व का विस्तृत वर्णन कीजिए।
4. नागरी लिपि के मानकीकरण की आवश्यकता, प्रक्रिया और वर्तमान स्थिति पर विस्तृत निबंध लिखिए।
5. देवनागरी लिपि की विशेषताओं का विस्तार से वर्णन करते हुए इसकी वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिए।

## संदर्भ

1. भट्ट, रामप्रसाद. हिंदी भाषा का व्याकरण और इतिहास. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, 2001।
2. पाण्डेय, गिरीश. भाषा विज्ञान का परिचय. लखनऊ: ज्ञानदीप प्रकाशन, 2005।
3. त्रिपाठी, रामकृष्ण. हिंदी भाषा और उसका विकास. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 2008।
4. कुमार, अरविंद. हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली: प्रकाशन भारत, 2010।
5. शर्मा, कमला. भाषा विज्ञान और समाज. जयपुर: राजस्थान पब्लिकेशन, 2012।
6. भट्टाचार्य, सुनील. हिंदी भाषा का व्याकरण और संरचना. पटना: ज्ञानमंदिर, 2007।
7. सिंह, प्रमोद. भाषा विज्ञान में आधुनिक दृष्टिकोण. नई दिल्ली: मीडिया प्रकाशन, 2015।
8. मिश्रा, रामकुमार. हिंदी भाषा के स्वरूप और प्रयोग. लखनऊ: ज्ञानदीपक, 2011।
9. पाण्डेय, नरेन्द्र. भारतीय भाषाओं का व्याकरण और संरचना. दिल्ली: छात्र प्रकाशन, 2009।
10. शर्मा, दीपक. हिंदी भाषा का समाजशास्त्रीय अध्ययन. मुंबई: प्रकाशन भारत, 2013।
11. भारतीय भाषा संस्थान. हिंदी भाषा का विकास और मानकीकरण. नई दिल्ली: ILS, 2014।
12. त्रिपाठी, अंशु. भाषा विज्ञान और भाषिक संरचना. वाराणसी: चौखम्बा, 2016।
13. गुप्ता, मनीषा. हिंदी भाषा का शब्दकोश और संरचना. दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन, 2018।
14. शर्मा, आकाश. हिंदी भाषा का ऐतिहासिक अध्ययन. जयपुर: सांस्कृतिक प्रकाशन, 2012।
15. नंदिनी, डॉ. हिंदी भाषा में व्याकरण और प्रयोग. भोपाल: मध्यप्रदेश पब्लिकेशन, 2017।
16. पाण्डेय, अनिल. भाषा विज्ञान और भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली: ज्ञानदीप, 2004।
17. मिश्रा, अरविंद. हिंदी भाषा और साहित्य का विकास. लखनऊ: प्रकाशन विश्व, 2011।
18. शर्मा, दीप्ति. भाषा विज्ञान में आधुनिक अनुसंधान. नई दिल्ली: प्रकाशन हाउस, 2013।
19. चतुर्वेदी, निखिल. हिंदी भाषा और भाषिक विविधता. पटना: साहित्य पब्लिकेशन, 2010।
20. भारती, डॉ. शांति. हिंदी भाषा विज्ञान पर शोध एवं अध्ययन. नई दिल्ली: भारत प्रकाशन, 2019।

## 2. सारांश (भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा)

भाषा विज्ञान वह शास्त्र है जो भाषा की उत्पत्ति, संरचना, ध्वनि, रूप, वाक्य, अर्थ तथा प्रयोग का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। इसे भाषा का “विज्ञान” कहा जाता है क्योंकि यह भाषा का विश्लेषण तर्क और प्रमाण के आधार पर करता है। भाषा-विज्ञान की प्रमुख शाखाएँ हैं- ध्वनि-विज्ञान (भाषा की ध्वनियों का अध्ययन), रूप-विज्ञान (शब्दों की रचना और रूपों का अध्ययन), वाक्य-विज्ञान (वाक्य-रचना और व्याकरणिक संरचना का अध्ययन), अर्थ-विज्ञान (शब्दों और वाक्यों के अर्थ का अध्ययन), प्रयोग-विज्ञान भाषा के सामाजिक और व्यावहारिक प्रयोग का अध्ययन।

हिन्दी भाषा, हिन्द-आर्य भाषाओं की एक प्रमुख भाषा है जिसका विकास संस्कृत → प्राकृत → अपभ्रंश → हिन्दी की प्रक्रिया से हुआ। भाषा-विज्ञान के दृष्टिकोण से हिन्दी में ध्वनि, व्याकरण और शब्द भंडार की विविधता पाई जाती है। हिन्दी की ध्वन्यात्मक संरचना सरल और वैज्ञानिक है। हिन्दी का व्याकरण नियमबद्ध तथा लचीला है। हिन्दी में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का समावेश है, जिससे यह समृद्ध और बहुपयोगी बन गई है। भाषा-विज्ञान ने हिन्दी के अध्ययन और शिक्षण को वैज्ञानिक दृष्टि दी है। इससे हिन्दी के व्याकरण, उच्चारण, अनुवाद, कंप्यूटर भाषा-प्रसंस्करण (NLP) और भाषा-शिक्षण में सुधार हुआ है। भाषा-विज्ञान भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन का माध्यम है और हिन्दी भाषा उसके अध्ययन की एक सशक्त आधारभूमि है। भाषा-विज्ञान के सिद्धांतों ने हिन्दी को अधिक वैज्ञानिक, आधुनिक और वैश्विक भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

# **MATS UNIVERSITY**

**MATS CENTRE FOR DISTANCE AND ONLINE EDUCATION**

**UNIVERSITY CAMPUS:** Aarang Kharora Highway, Aarang, Raipur, CG, 493 441

**RAIPUR CAMPUS:** MATS Tower, Pandri, Raipur, CG, 492 002

**T : 0771 4078994, 95, 96, 98 Toll Free ODL MODE : 81520 79999, 81520 29999**

**Website:** [www.matsodl.com](http://www.matsodl.com)

